Sample

Date of Birth :	**18 December 1973 (Tuesday)**
Time of Birth :	**01:45:00AM**
Place of Birth :	**Hyderabad , INDIA**
Longitude :	**078:29:00E**
Latitude :	**017:23:00N**

Computer Zone

Contact -

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	18 December 1973 (Tuesday)
जन्म समय	01:45:00AM
जन्म स्थान	Hyderabad , INDIA
रेखांश	078:29:00E
अक्षांश	017:23:00N
समयक्षेत्र	-05:30:00 hrs
समय संशोधन	00:00:00 hrs
जीएमटी. समय	20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-00:16:04 hrs
स्थानीय समय	01:28:56 hrs

सांपातिक काल	07:14:11 hrs
सूर्योदय	06:42:20AM
सूर्यास्त	05:42:47PM
अयनांश	N.C.Lahiri (023:29:36)
विक्रम संवत्-	**2030**
शाक संवत्-	**1895**
संवत्सर-	**प्रमादी**
संवत्सर अधिपति-	**इन्द्राग्नि**

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	कन्या
लग्नाधिपति :	बुध
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या
राशिपति :	बुध
नक्षत्र :	हस्त
नक्षत्रपति :	चन्द्र
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	स्वर्ण
ऋतु :	हेमन्त
मास :	पौष
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	नवमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	सूर्य
करण :	गरिज
करण श्रेणी :	वर
करणपति :	वासुदेव
गण :	देव
वर्ण :	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य
रज्जु :	कंठ
वश्य :	द्विपद
तत्व :	अग्नि
नक्षत्राधिपति :	मंगल
विहग :	वायस
नाड़ी :	आदि
नाड़ी पद :	मध्य
योग :	शतभिषा
आद्याक्षर :	श

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	मिथुन
मास :	भद्रा
तिथि :	5,10,15
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	श्रावण
प्रहर :	1
लग्न :	मीन
सूर्य सिद्धान्त योग :	सुकर्मन
करण :	कौलव

शाराक ग्रह (कृ0 गु0 पद्धति के अनुसार)

वारेश :	मंगल
लग्नेश :	बुध
लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न उप स्वामी :	शुक्र
चन्द्र राशि स्वामी :	बुध
चन्द्र नक्षत्र स्वामी ल	चन्द्र
चन्द्र उप स्वामी :	शुक्र
फॉरच्युन(कृ0 पा)	097:57:31
अयनांश (कृ0 पा) :	023:23:49

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि	धनु
डेकनेट	3
फेस :	VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	तुला
लग्न (पाश्चात्य) :	तुला
सूर्य का अवधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति :	शुक्र
अवधि बदलाव :	(मंगल, शनि), (बुध, शुक्र) , (शुक्र, बुध) , (शनि, मंगल)

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि		राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न० पति	सपाकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न		कन्या	बुध	24:14:37	चित्रा.1	मंगल	...	...	
☉	सूर्य		धनु	गुरु	02:15:49	मूल.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	उदित
☽	चन्द्र		कन्या	बुध	16:00:58	हस्त.2	चन्द्र	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	
♂	मंगल		मेष	मंगल	04:42:18	अश्विनी.2	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोण	
☿	बुध		वृश्चिक	मंगल	19:51:24	ज्येष्ठा.1	बुध	आत्म	शत्रु के भाव में	
♃	गुरु		मकर	शनि	17:56:39	श्रवण.3	चन्द्र	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♀	शुक्र		मकर	शनि	13:00:16	श्रवण.1	चन्द्र	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♄	शनि व		मिथुन	बुध	08:12:34	आर्द्रा.1	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	उदित
☊	राहु व		धनु	गुरु	05:06:53	मूल.2	केतु	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
☋	केतु व		मिथुन	बुध	05:06:53	मृगशिरा.4	मंगल	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♅	हर्षल		तुला	शुक्र	03:20:59	चित्रा.4	मंगल	...		—
♆	नेपच्यून		वृश्चिक	मंगल	14:20:41	अनुराधा.4	शनि	...		शुभ ग्रह के साथ
♇	प्लूटो		कन्या	बुध	13:11:14	हस्त.1	चन्द्र	...		दुष्ट ग्रह के साथ

नवांश कुण्डली

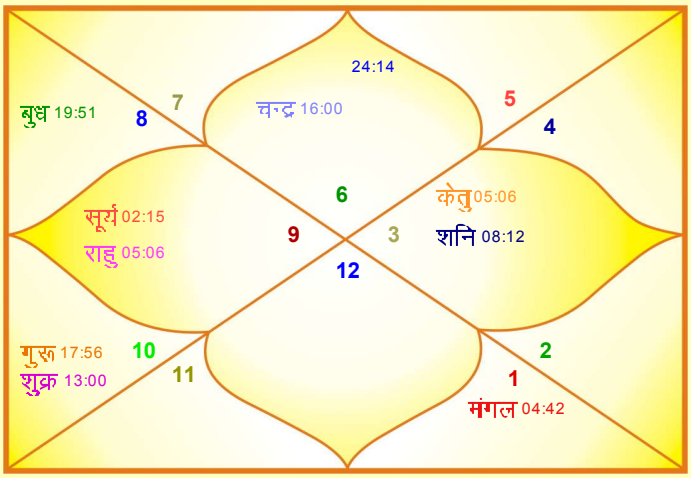

लग्न कुण्डली

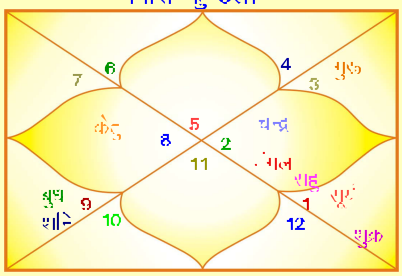

चन्द्र कुण्डली

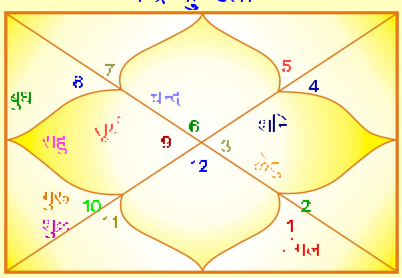

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
सूर्य	292	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्र	8	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	170	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	304	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरु	246	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	251	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	106	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	289	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	109	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
हर्षल	351	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
नेपच्यून	310	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
प्लूटो	11	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,359	कन्जंक्शन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्क्वायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वींकन्क्स	179,180,181	आपोजीशन

भाव स्फूट और कुण्डली

भाव सख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ——अन्त)			
I	कन्या	024:14:37	कन्या	09:08:19	तुला	09:08:19
II	तुला	024:02:01	तुला	09:08:19	वृश्चिक	08:55:43
III	वृश्चिक	023:49:26	वृश्चिक	08:55:43	धनु	08:43:08
IV	धनु	023:36:50	धनु	08:43:08	मकर	08:43:08
V	मकर	023:49:26	मकर	08:43:08	कुम्भ	08:55:43
VI	कुम्भ	024:02:01	कुम्भ	08:55:43	मीन	09:08:19
VII	मीन	024:14:37	मीन	09:08:19	मेष	09:08:19
VIII	मेष	024:02:01	मेष	09:08:19	वृष	08:55:43
IX	वृष	023:49:26	वृष	08:55:43	मिथुन	08:43:08
X	मिथुन	023:36:50	मिथुन	08:43:08	कर्क	08:43:08
XI	कर्क	023:49:26	कर्क	08:43:08	सिंह	08:55:43
XII	सिंह	024:02:01	सिंह	08:55:43	कन्या	09:08:19

लग्न कुण्डली

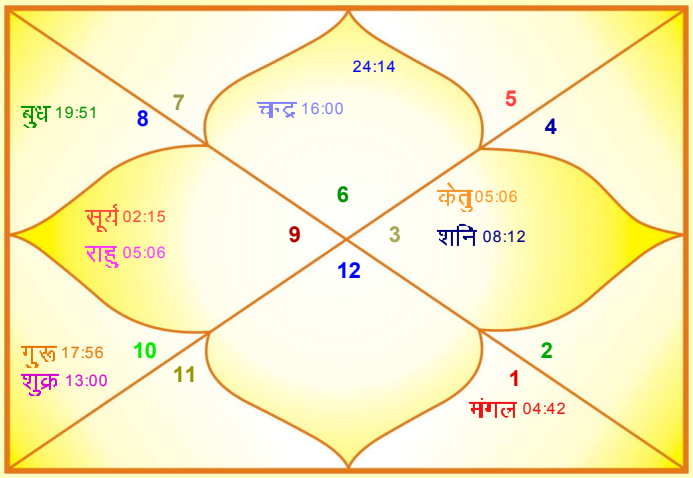

भाव कुण्डली

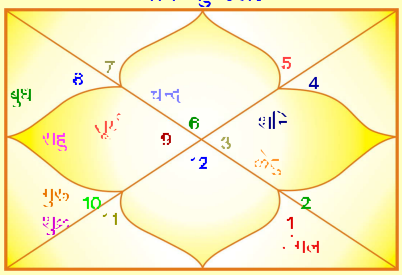

भाव चलित कुण्डली

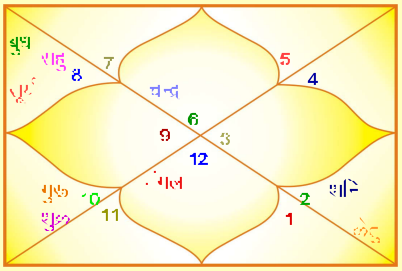

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
दूसरा भाव	38	322	161	26	84	79	224	41	221	339	20	319
तीसरा भाव	8	292	131	356	54	49	194	11	191	310	351	289
नादिर	339	262	101	326	24	19	165	342	162	280	321	260
पाँचवा भाव	308	232	71	296	354	349	134	311	131	250	291	229
छठवा भाव	278	202	41	266	324	319	104	281	101	219	260	199
सातँवा भाव	248	172	10	236	294	289	74	251	71	189	230	169
आठवा भाव	218	142	341	206	264	259	44	221	41	159	200	139
नवा भाव	188	112	311	176	234	229	14	191	11	130	171	109
एम सी	159	82	281	146	204	199	345	162	342	100	141	80
ग्यारहवा भाव	128	52	251	116	174	169	314	131	311	70	111	49
बारहवा भाव	98	22	221	86	144	139	284	101	281	39	80	19

0,1,359 0,1,359 कन्जक्शन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्क्वायर

119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकंस 179,180,181 आपोजीसन

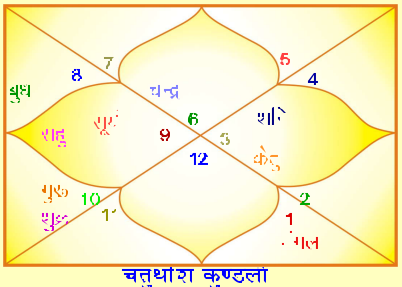

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Hyderabad

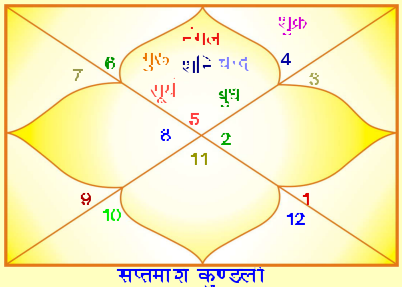

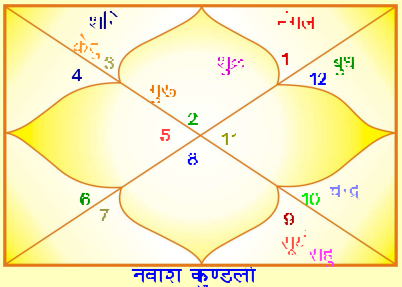

षोडश वर्ग

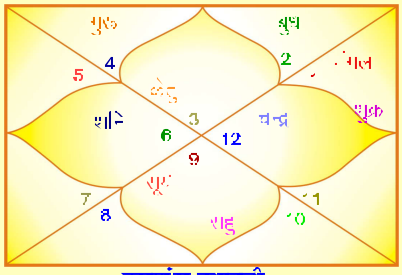

लग्न(जन्म) कुण्डली

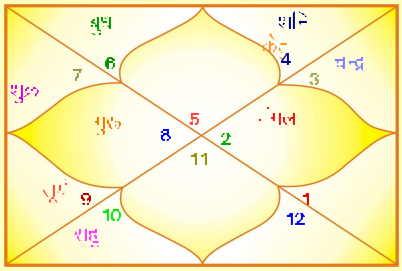

होरा कुण्डली

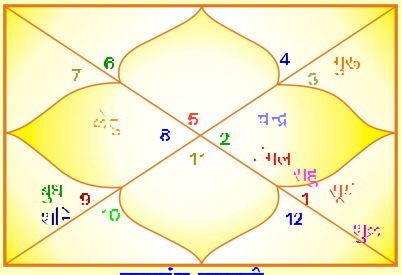

द्रेष्काण कुण्डली

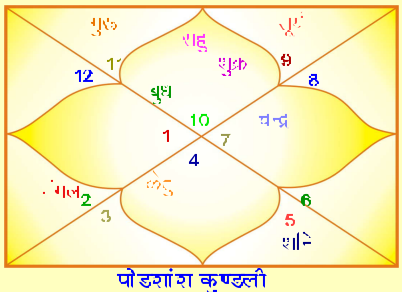

चतुर्थांश कुण्डली

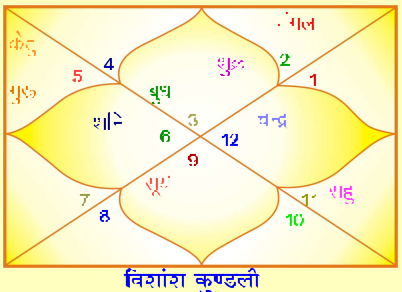

सप्तमांश कुण्डली

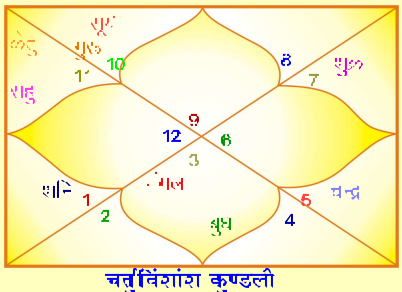

नवांश कुण्डली

दशमांश कुण्डली

D1	मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
D2	धन दौलत के लिए
D3	सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
D4	भाग्य और स्थायी धन
D7	संतान और उनकी संतान
D9	जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
D10	कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
D12	माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
D16	वाहन से संबंधित बातें
D20	आध्यात्मिक रूझान
D24	शिक्षा, ज्ञान और समझ
D27	ताकत और दुर्बलता
D30	दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति
D40	शुभ-अशुभ घटनाएं
D45	सभी मुद्दों के लिए
D60	सभी मुद्दों के लिए

द्वादशांश कुण्डली

षोडशांश कुण्डली

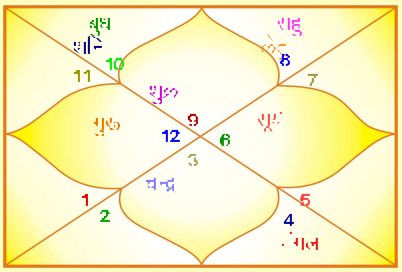

विंशांश कुण्डली

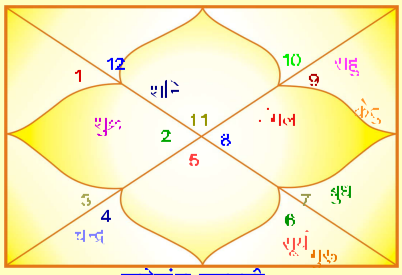

चतुर्विंशांश कुण्डली

सप्तविंशांश कुण्डली

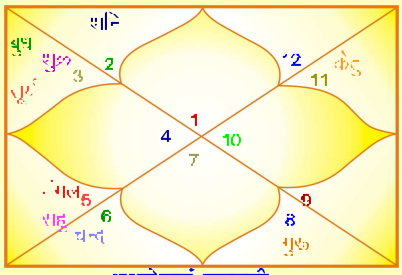

त्रिंशांश कुण्डली

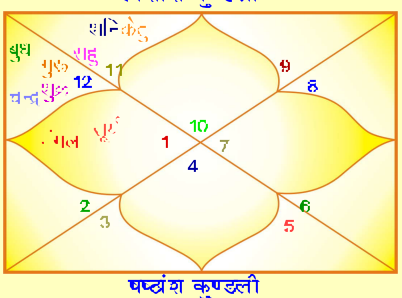

खवेदांश कुण्डली

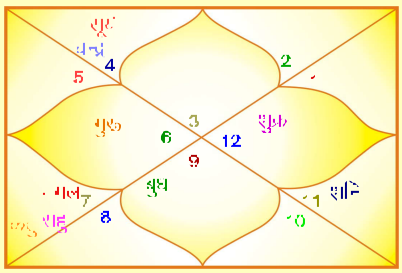

अक्षवेदांश कुण्डली

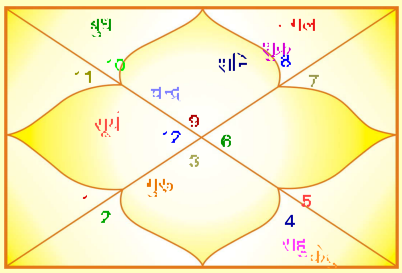

षष्ठ्यांश कुण्डली

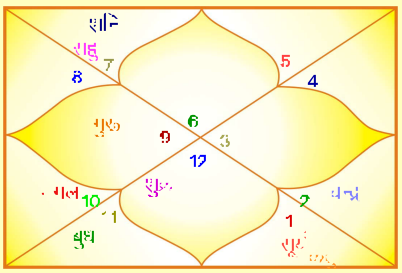

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Hyderabad

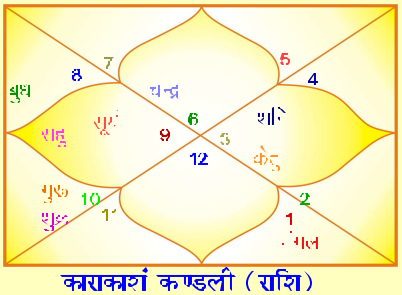

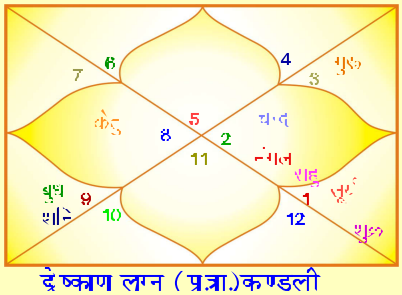

जैमिनी लग्न कुण्डली

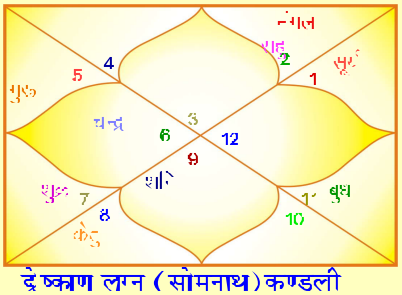

लग्न(जन्म) कण्डली

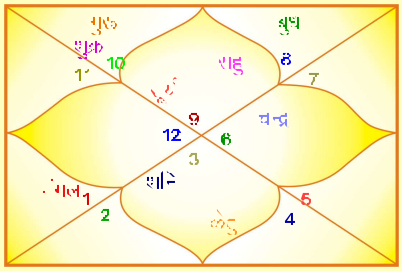

नवांश कण्डली

नवांश कण्डली (कष्ण मिश्रा)

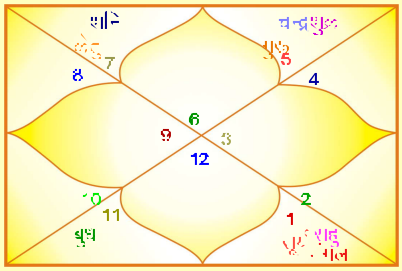

कारकांश कण्डली (राशि)

द्रेष्काण लग्न (प्र.त्रा.)कण्डली

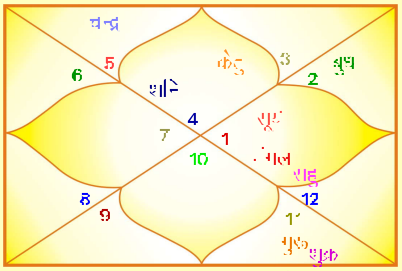

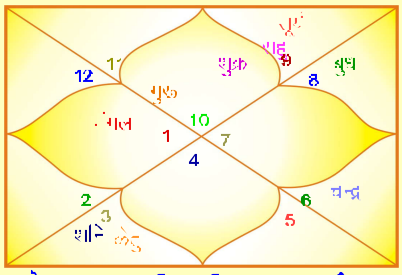

द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ)कण्डली

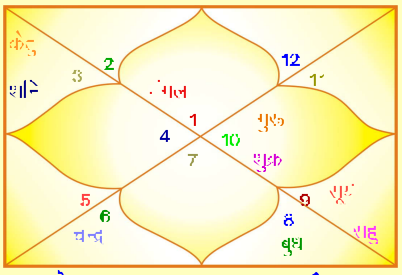

आरूढ लग्न कण्डली

उप पद लग्न कण्डली

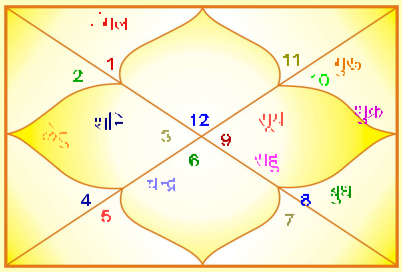

होरा लग्न (वद्धि करिका) कण्डली

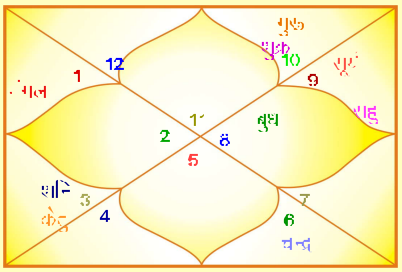

होरा लग्न (सवाया) कण्डली

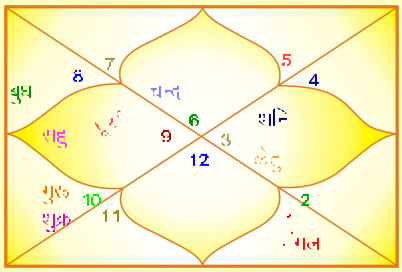

आयर लग्न कण्डली

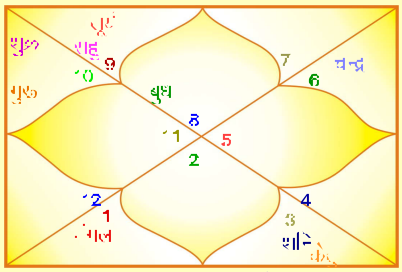

पका लग्न कण्डली

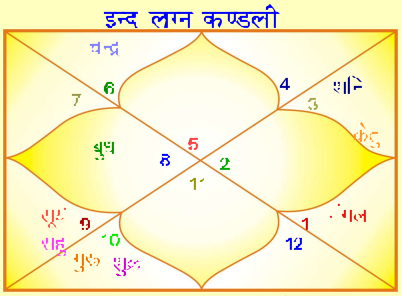

इन्द लग्न कण्डली

दिव्य लग्न कण्डली

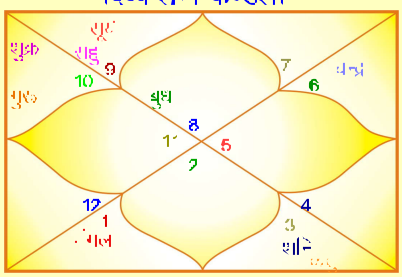

तारा लग्न कण्डली

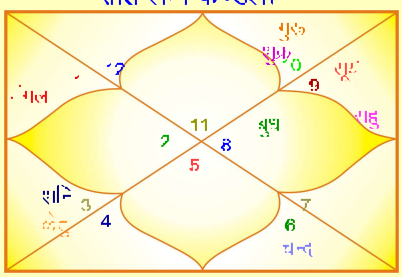

त्रिप्रवन लग्न कण्डली

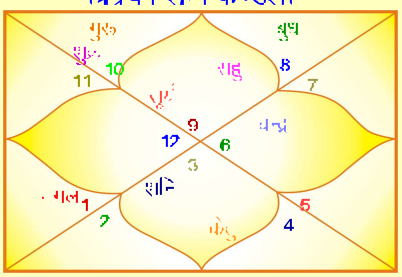

मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्र	मित्र	....	राग	मित्र	राग	राग	राग	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	शत्रु	राग	....	राग	मित्र	राग	राग	राग
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	राग	मित्र	राग
♀	शुक्र	शत्रु	शत्रु	राग	मित्र	राग	....	मित्र	मित्र	मित्र
♄	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	राग	मित्र	....	मित्र	मित्र
☊	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	राग	मित्र	मित्र	मित्र	....	राग
☋	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	राग	राग	मित्र	मित्र	राग	....

तत्कालिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	....	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
♀	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	शत्रु
♄	शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु
☊	राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु
☋	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	अधिमित्र	राग	मित्र	अधिमित्र	राग	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☽	चन्द्र	अधिमित्र	....	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
♂	मंगल	राग	राग	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिमित्र
☿	बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	....	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	अधिमित्र	राग	अधिमित्र	राग	....	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु
♀	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	....	सम	अधिमित्र	सम
♄	शनि	अधिशत्रु	राग	राग	राग	शत्रु	राग	....	राग	राग
☊	राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	शत्रु
☋	केतु	अधिशत्रु	राग	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	राग	राग	शत्रु	....

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110 1/13/25/37/49/61/73/85/97/109 12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

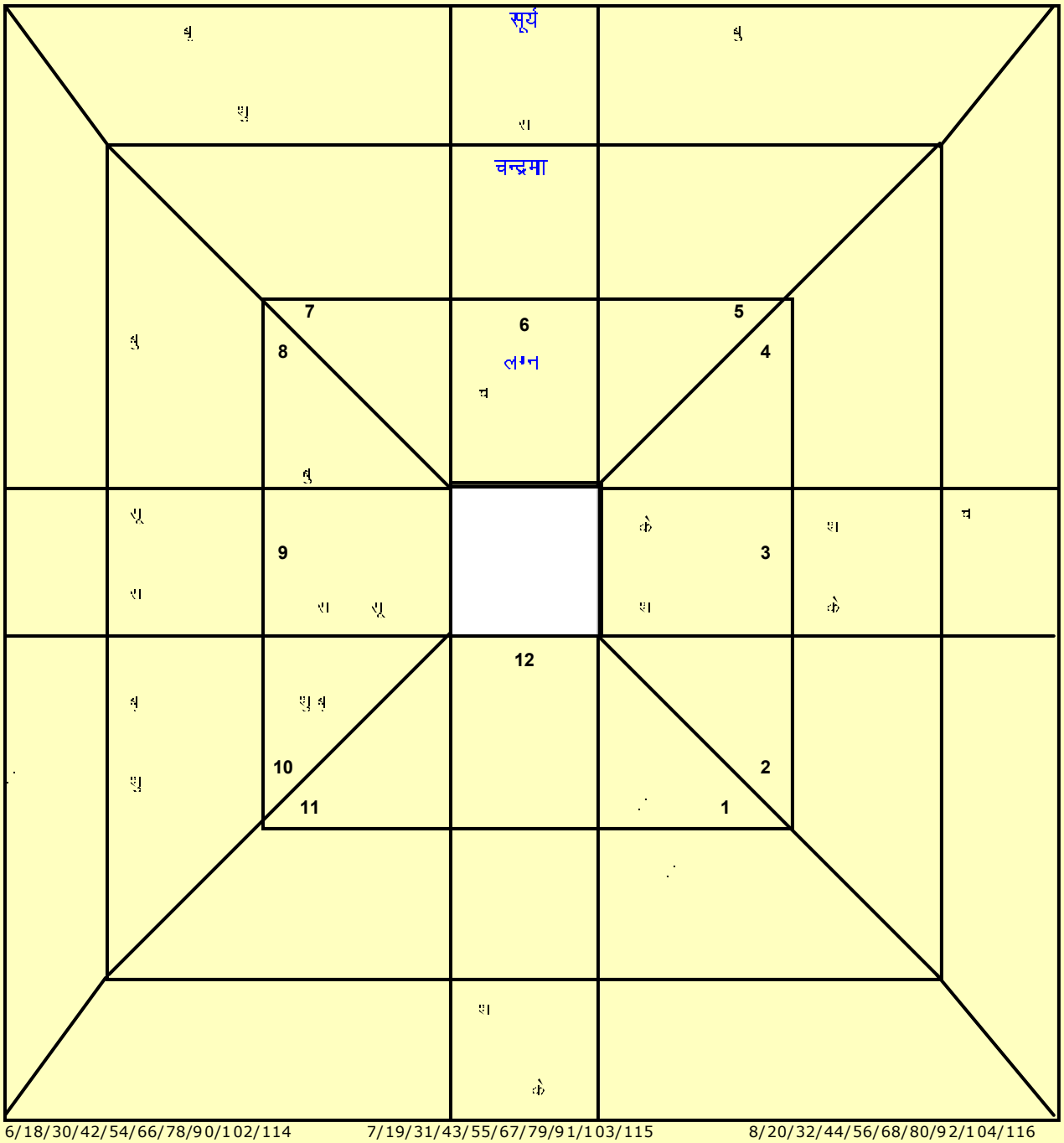

6/18/30/42/54/66/78/90/102/114 7/19/31/43/55/67/79/91/103/115 8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (बृहस्पति, शुक्र बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा। और मांगलिक कार्य होंगे।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतु सूर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

ग्रह अवस्था

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	स्वप्न	बाल	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
चन्द्रमा	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुखित	
मंगल	जागृत	बाल	गर्वित	स्वस्थ	स्वस्थ
बुध	सुप्त	कुमार	क्षुदित	दुखित	दीन
बृहस्पति	जागृत	युवा	गर्वित	दीन	दीन
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	शांत	
शनि	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	दीन	वक्र
राहु	स्वप्न	मृत	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	संत

सन्धि

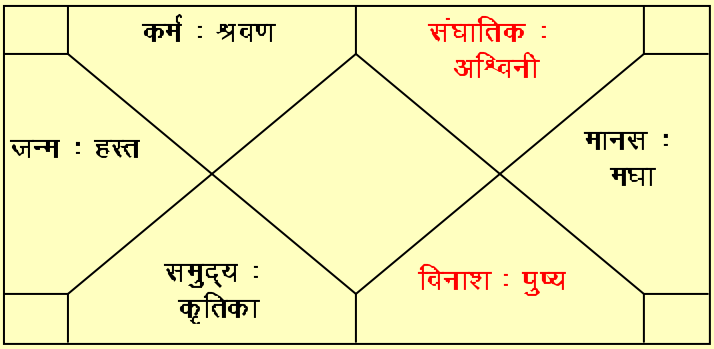

स्थुन		कंटक स्थुन-	मूल	जाति-	मघा	देश-	पूर्वाफाल्गुनी
कुज स्थुन-	मघा	रक्त स्थुन-	पूर्वाषाढ	प्रतिष्ठा-	उत्तराफाल्गुनी	त्रि-नाड़ि	

नव-तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ़
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : हस्ता	कर्म : अभिजीत	आधान : कृतिका	नैधव : पुनर्वसु

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२८ नक्षत्र के आधार पर)।

		दग्ध : मूल	क्षय : धनिष्ठा
	शूल : उत्तरभाद्रपद	सन्निपात : मृगशिरा	ध्वज : आश्लेषा
उल्का : उत्तरफाल्गुनी	गुकम्प : हस्त	वज्रक : चित्रा	निर्घात : स्वाति

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२७ नक्षत्र के आधार पर)।

भिन्न अष्टक वर्ग कुण्डली

शनि

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ बृह०	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मं॰ल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
♀ शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39

गुरू

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ बृह०	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
♂ मं॰ल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
♀ शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽ चन्द्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
AC लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56

मंगल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
♃ बृह०	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
♂ मं॰ल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
♀ शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39

सूर्य

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ बृह०	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
♂ मं॰ल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
AC लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48

शुक्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
♃ बृह०	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
♂ मं॰ल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
☿ बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ चन्द्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
AC लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52

बुध

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ बृह०	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मं॰ल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ चन्द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54

चन्द्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ बृह०	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	7
♂ मं॰ल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
☉ सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
♀ शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
☿ बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49

लग्न

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
♃ बृह०	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
♂ मं॰ल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
☉ सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿ बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
AC लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49

राहु

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	1	6
♃ बृह०	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1	5
♂ मं॰ल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	5
☉ सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	7
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ बुध	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	5
☽ चन्द्रमा	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	7
AC लग्न	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	5
योग	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

कक्षा बल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	4	5	48
♃ बृह०	3	4	5	3	4	3	5	8	4	3	2	1	45
♂ मं॰ल	5	5	4	4	3	4	4	4	4	7	8	2	54
☉ सूर्य	2	4	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	49
♀ शुक्र	4	5	4	2	4	5	3	6	3	3	4	4	47
☿ बुध	7	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	53
☽ चन्द्रमा	2	2	4	8	2	2	3	6	2	2	6	2	41
AC लग्न	2	2	7	8	1	5	3	6	5	2	7	1	49
योग	32	24	35	37	28	38	33	41	26	29	38	25	386

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃	बृहस्पति	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂	मगंल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉	सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀	शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
☿	बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽	चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग		27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337
AC	लग्न	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
☊	राहु	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

तत्व चक

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

)विशेष - सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा के इंगित करता हैं (पू, द, प और उ)। अगर दोनों भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प और दप) होगी।)

गुवन चक

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	108	गेहन्त और लग्न
पनफरा भाव–राशि	112.33	118	आर्थिक स्थिति
अपक्लिम भाव–राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक

भाग	स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	91	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	76	दुर्भाग्य और हानि

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्र : 5 व 5 मा 26 दि

क0 स0		ग्रह दशा	अवधि	से ———————— तक
1	☽	चन्द्र महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	♂	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	☊	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	♃	गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	♄	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	☿	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	☋	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	♀	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	☉	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्र दशा

अन्तर्दश।	से तक
चन्द्र	
मंगल	
राहु	
गुरू	
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979

गंगल दशा

अन्तर्दश।	से तक
मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979
राहु	10:11:1979 - 28:11:1980
गुरू	28:11:1980 - 04:11:1981
शनि	04:11:1981 - 13:12:1982
बुध	13:12:1982 - 10:12:1983
केतु	10:12:1983 - 08:05:1984
शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985
सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985
चन्द्र	13:11:1985 - 14:06:1986

राहु दशा

अन्तर्दश।	से तक
राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
गुरू	24:02:1989 - 20:07:1991
शनि	20:07:1991 - 26:05:1994
बुध	26:05:1994 - 13:12:1996
केतु	13:12:1996 - 31:12:1997
शुक्र	31:12:1997 - 31:12:2000
सूर्य	31:12:2000 - 25:11:2001
चन्द्र	25:11:2001 - 26:05:2003
मंगल	26:05:2003 - 13:06:2004

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
गुरू	13:06:2004 - 01:08:2006
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015
चन्द्र	13:10:2015 - 12:02:2017
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020

शनि दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
शनि	13:06:2020 - 17:06:2023
बुध	17:06:2023 - 24:02:2026
केतु	24:02:2026 - 05:04:2027
शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030
सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031
चन्द्र	17:05:2031 - 16:12:2032
मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034
राहु	25:01:2034 - 01:12:2036
गुरू	01:12:2036 - 14:06:2039

बुध दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
चन्द्र	14:07:2046 - 13:12:2047
मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
गुरू	29:06:2051 - 04:10:2053
शनि	04:10:2053 - 13:06:2056

केतु दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058
चन्द्र	17:05:2058 - 16:12:2058
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060
गुरू	01:06:2060 - 08:05:2061
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066
सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067
चन्द्र	13:10:2067 - 14:06:2069
मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070
राहु	14:08:2070 - 14:08:2073
गुरू	14:08:2073 - 13:04:2076
शनि	13:04:2076 - 14:06:2079
बुध	14:06:2079 - 14:04:2082
केतु	14:04:2082 - 14:06:2083

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
चन्द्र	01:10:2083 - 01:04:2084
मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
गुरू	02:07:2085 - 20:04:2086
शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

विंशोत्तरी दशा

गुरू महादशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	13:06:2004
शनि	25:09:2004
बुध	27:01:2005
केतु	17:05:2005
शुक्र	02:07:2005
सूर्य	08:11:2005
चन्द्र	17:12:2005
मंगल	20:02:2006
राहु	07:04:2006

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	01:08:2006
बुध	26:12:2006
केतु	06:05:2007
शुक्र	29:06:2007
सूर्य	30:11:2007
चन्द्र	15:01:2008
मंगल	01:04:2008
राहु	25:05:2008
गुरू	12:10:2008

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	12:02:2009
केतु	09:06:2009
शुक्र	28:07:2009
सूर्य	12:12:2009
चन्द्र	23:01:2010
मंगल	02:04:2010
राहु	20:05:2010
गुरू	21:09:2010
शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	20:05:2011
शुक्र	09:06:2011
सूर्य	05:08:2011
चन्द्र	22:08:2011
मंगल	19:09:2011
राहु	09:10:2011
गुरू	29:11:2011
शनि	14:01:2012
बुध	08:03:2012

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	05:10:2012
चन्द्र	23:11:2012
मंगल	12:02:2013
राहु	10:04:2013
गुरू	03:09:2013
शनि	11:01:2014
बुध	14:06:2014
केतु	30:10:2014

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	25:12:2014
चन्द्र	09:01:2015
मंगल	02:02:2015
राहु	19:02:2015
गुरू	04:04:2015
शनि	13:05:2015
बुध	28:06:2015
केतु	09:08:2015
शुक्र	26:08:2015

चन्द्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्र	13:10:2015
मंगल	23:11:2015
राहु	21:12:2015
गुरू	04:03:2016
शनि	08:05:2016
बुध	24:07:2016
केतु	01:10:2016
शुक्र	29:10:2016
सूर्य	19:01:2017

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	12:02:2017
राहु	04:03:2017
गुरू	24:04:2017
शनि	08:06:2017
बुध	01:08:2017
केतु	19:09:2017
शुक्र	09:10:2017
सूर्य	04:12:2017
चन्द्र	21:12:2017

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	19:01:2018
गुरू	30:05:2018
शनि	24:09:2018
बुध	10:02:2019
केतु	14:06:2019
शुक्र	04:08:2019
सूर्य	28:12:2019
चन्द्र	10:02:2020
मंगल	23:04:2020

विंशोत्तरी दशा

शुक्र अन्तर्दशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	22:05:2012
चन्द्र	31:05:2012
मंगल	13:06:2012
राहु	23:06:2012
गुरू	17:07:2012
शनि	08:08:2012
बुध	03:09:2012
केतु	26:09:2012

सूर्य प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
सूर्य	05:10:2012
चन्द्र	07:10:2012
मंगल	12:10:2012
राहु	14:10:2012
गुरू	22:10:2012
शनि	28:10:2012
बुध	05:11:2012
केतु	12:11:2012
शुक्र	15:11:2012

चन्द्र प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
चन्द्र	23:11:2012
मंगल	30:11:2012
राहु	04:12:2012
गुरू	17:12:2012
शनि	27:12:2012
बुध	09:01:2013
केतु	21:01:2013
शुक्र	25:01:2013
सूर्य	08:02:2013

गंगल प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
मंगल	12:02:2013
राहु	15:02:2013
गुरू	24:02:2013
शनि	03:03:2013
बुध	12:03:2013
केतु	20:03:2013
शुक्र	24:03:2013
सूर्य	02:04:2013
चन्द्र	05:04:2013

राहु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
राहु	10:04:2013
गुरू	02:05:2013
शनि	21:05:2013
बुध	13:06:2013
केतु	04:07:2013
शुक्र	13:07:2013
सूर्य	06:08:2013
चन्द्र	13:08:2013
मंगल	25:08:2013

गुरू प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से
गुरू	03:09:2013
शनि	20:09:2013
बुध	11:10:2013
केतु	29:10:2013
शुक्र	06:11:2013
सूर्य	27:11:2013
चन्द्र	04:12:2013
मंगल	15:12:2013
राहु	22:12:2013

शनि प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
शनि	11:01:2014
बुध	04:02:2014
केतु	26:02:2014
शुक्र	07:03:2014
सूर्य	02:04:2014
चन्द्र	09:04:2014
मंगल	22:04:2014
राहु	01:05:2014
गुरू	24:05:2014

बुध प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
बुध	14:06:2014
केतु	03:07:2014
शुक्र	11:07:2014
सूर्य	03:08:2014
चन्द्र	10:08:2014
मंगल	22:08:2014
राहु	30:08:2014
गुरू	19:09:2014
शनि	08:10:2014

केतु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
केतु	30:10:2014
शुक्र	02:11:2014
सूर्य	11:11:2014
चन्द्र	14:11:2014
मंगल	19:11:2014
राहु	22:11:2014
गुरू	01:12:2014
शनि	08:12:2014
बुध	17:12:2014

विंशोत्तरी दशा

शनि प्रत्यन्तर्दशा (11:01:2014 से 14:06:2014)

शनि सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
शनि	11:01:2014 : 01:57:03AM
बुध	14:01:2014 : 10:40:28PM
केतु	18:01:2014 : 09:38:15AM
शुक्र	19:01:2014 : 07:47:56PM
सूर्य	23:01:2014 : 09:24:09PM
चन्द्र	25:01:2014 : 02:41:01AM
मंगल	27:01:2014 : 03:29:08AM
राहु	28:01:2014 : 01:38:48PM
गुरू	01:02:2014 : 05:29:24AM

बुध सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
बुध	04:02:2014 : 11:34:23AM
केतु	07:02:2014 : 01:48:12PM
शुक्र	08:02:2014 : 08:22:07PM
सूर्य	12:02:2014 : 11:41:54AM
चन्द्र	13:02:2014 : 01:53:50PM
मंगल	15:02:2014 : 09:33:43AM
राहु	16:02:2014 : 04:07:38PM
गुरू	19:02:2014 : 10:43:26PM
शनि	22:02:2014 : 08:35:16PM

केतु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
केतु	26:02:2014 : 07:33:03AM
शुक्र	26:02:2014 : 08:08:12PM
सूर्य	28:02:2014 : 08:05:45AM
चन्द्र	28:02:2014 : 06:53:01PM
मंगल	01:03:2014 : 00:51:48PM
राहु	02:03:2014 : 01:26:56AM
गुरू	03:03:2014 : 09:48:44AM
शनि	04:03:2014 : 02:34:47PM
बुध	06:03:2014 : 00:44:28AM

शुक्र सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
शुक्र	07:03:2014 : 07:18:23AM
सूर्य	11:03:2014 : 02:02:50PM
चन्द्र	12:03:2014 : 08:52:10PM
मंगल	15:03:2014 : 00:14:23AM
राहु	16:03:2014 : 00:11:56PM
गुरू	20:03:2014 : 08:39:56AM
शनि	23:03:2014 : 06:51:30PM
बुध	27:03:2014 : 08:27:43PM
केतु	31:03:2014 : 11:47:30AM

सूर्य सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
सूर्य	01:04:2014 : 11:45:03PM
चन्द्र	02:04:2014 : 08:59:51AM
मंगल	03:04:2014 : 00:24:31AM
राहु	03:04:2014 : 11:11:47AM
गुरू	04:04:2014 : 02:56:11PM
शनि	05:04:2014 : 03:35:39PM
बुध	06:04:2014 : 08:52:31PM
केतु	07:04:2014 : 11:04:27PM
शुक्र	08:04:2014 : 09:51:43AM

चन्द्र सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से
चन्द्र	09:04:2014 : 04:41:03PM
मंगल	10:04:2014 : 06:22:10PM
राहु	11:04:2014 : 00:20:56PM
गुरू	13:04:2014 : 10:34:56AM
शनि	15:04:2014 : 03:40:43AM
बुध	17:04:2014 : 04:28:50AM
केतु	19:04:2014 : 00:08:43AM
शुक्र	19:04:2014 : 06:07:30PM
सूर्य	21:04:2014 : 09:29:43PM

गंगल सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
मंगल	22:04:2014 : 00:54:23PM
राहु	23:04:2014 : 01:29:32AM
गुरू	24:04:2014 : 09:51:20AM
शनि	25:04:2014 : 02:37:22PM
बुध	27:04:2014 : 00:47:03AM
केतु	28:04:2014 : 07:20:58AM
शुक्र	28:04:2014 : 07:56:07PM
सूर्य	30:04:2014 : 07:53:40AM
चन्द्र	30:04:2014 : 06:40:56PM

राहु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
राहु	01:05:2014 : 00:39:43PM
गुरू	04:05:2014 : 11:52:55PM
शनि	08:05:2014 : 01:51:19AM
बुध	11:05:2014 : 05:41:55PM
केतु	15:05:2014 : 00:17:43AM
शुक्र	16:05:2014 : 08:39:31AM
सूर्य	20:05:2014 : 05:07:31AM
चन्द्र	21:05:2014 : 08:51:55AM
मंगल	23:05:2014 : 07:05:55AM

गुरू सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
गुरू	24:05:2014 : 03:27:43PM
शनि	27:05:2014 : 09:12:58AM
बुध	30:05:2014 : 03:17:56PM
केतु	02:06:2014 : 01:09:46PM
शुक्र	03:06:2014 : 05:55:48PM
सूर्य	07:06:2014 : 04:07:22AM
चन्द्र	08:06:2014 : 04:46:50AM
मंगल	09:06:2014 : 09:52:36PM
राहु	11:06:2014 : 02:38:39AM

अष्टोत्तरी दशा

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।

क्रस	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से ---------- तक	समय बिन्दु
1	मंगल(हस्त)	1 y.1 m.5 d.	18:12:1973 -- 22:01:1975	170:43:15
2	मंगल(चित्र)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1975 -- 22:01:1977	009:24:35
3	मंगल(स्वाती)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1977 -- 22:01:1979	249:49:11
4	मंगल(विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1979 -- 22:01:1981	292:38:57
5	बुध(अनुराधा)	5 y.8 m.0 d.	22:01:1981 -- 23:09:1986	298:03:58
6	बुध(ज्येष्ठा)	5 y.8 m.0 d.	23:09:1986 -- 23:05:1992	099:42:48
7	बुध(मूल)	5 y.8 m.0 d.	23:05:1992 -- 22:01:1998	294:58:17
8	शनि(पूर्वाषाढ)	2 y.6 m.0 d.	22:01:1998 -- 23:07:2000	351:12:50
9	शनि(उत्तराषढ़)	2 y.6 m.0 d.	23:07:2000 -- 22:01:2003	310:28:23
10	शनि(अभिजीत)	2 y.6 m.0 d.	22:01:2003 -- 24:07:2005	310:28:23
11	शनि(श्रवण)	2 y.6 m.0 d.	24:07:2005 -- 22:01:2008	234:13:31
12	बृहस्पति(धनिष्ठ)	6 y.4 m.0 d.	22:01:2008 -- 24:05:2014	292:38:57
13	बृहस्पति(शतभिषा)	6 y.4 m.0 d.	24:05:2014 -- 22:09:2020	173:03:32
14	बृहस्पति(पूर्वाभद्रपद)	6 y.4 m.0 d.	22:09:2020 -- 22:01:2027	215:53:18
15	राहु(उत्तराभद्रपद)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2027 -- 22:01:2030	313:19:27
16	राहु(रेवती)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2030 -- 22:01:2033	114:58:17
17	राहु(अश्विनी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2033 -- 22:01:2036	310:13:47
18	राहु(भरणी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2036 -- 22:01:2039	168:07:10
19	शुक्र(कृत्तिक)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2039 -- 22:01:2046	165:16:05
20	शुक्र(रोहिणी)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2046 -- 22:01:2053	089:01:14
21	शुक्र(मृगशिर)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2053 -- 22:01:2060	287:42:34
22	सूर्य(आर्द्रा)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2060 -- 24:07:2061	127:22:42
23	सूर्य(पुनर्वसु)	1 y.6 m.0 d.	24:07:2061 -- 22:01:2063	170:12:28
24	सूर्य(पुष्य)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2063 -- 23:07:2064	310:28:23
25	सूर्य(आश्लेषा)	1 y.6 m.0 d.	23:07:2064 -- 22:01:2066	112:07:13
26	चन्द्रमा(मघा)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2066 -- 22:01:2071	231:07:51
27	चन्द्रमा(पूर्वाफाल्गुनी)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2071 -- 22:01:2076	089:01:14

(विशेष– घटनाओं के समय की सटीक जानकारी और स्पष्ट परिणाम के लिए आपको केवल एन सी लाहिड़ी अयनांश का प्रयोग करना चाहिए।)

योगिनी दशा

क्रम	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से ---------- तक	समय बिन्दु
1	संकव (राहु)(हस्त)	4 y.4 m.21 d.	18:12:1973 to 09:05:197	051:07:51
2	मंगला (चन्द्रम)(चित्रा)	1 y.0 m.0 d.	09:05:1978 to 09:05:197	170:43:15
3	पिगंला (सूर्य)(स्वाती)	2 y.0 m.0 d.	09:05:1979 to 09:05:198	127:22:42
4	धन्या (बृहस्पति)(विशाखा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:1981 to 08:05:198	215:53:18
5	भ्रमरी(मंगल)(अनुराधा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:1984 to 08:05:198	072:54:51
6	भद्रीका(बुध)(ज्येष्ठा)	5 y.0 m.0 d.	08:05:1988 to 09:05:199	099:42:48
7	उल्का (शनि)(मूल)	6 y.0 m.0 d.	09:05:1993 to 09:05:199	133:19:27
8	सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाषाढ़)	7 y.0 m.0 d.	09:05:1999 to 09:05:200	206:00:33
9	संकव (राहु)(उत्तराषाढ़)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2006 to 09:05:201	127:22:42
10	मंगला (चन्द्रमा)(श्रवण)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2014 to 09:05:201	332:01:55
11	पिगंला (सूर्य)(धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2015 to 09:05:201	246:58:06
12	धन्या (बृहस्पति)(शतभिषा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2017 to 08:05:202	173:03:32
13	भ्रमरी(मंगल)(पूर्वाभाद्रपद)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2020 to 08:05:202	292:38:57
14	भद्रीका(बुध)(उत्तराभाद्रपद)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2024 to 09:05:202	298:03:58
15	उल्का (शनि)(रेवती)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2029 to 09:05:203	298:03:58
16	सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2035 to 09:05:204	348:07:10
17	संकव (राहु)(भरणी)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2042 to 09:05:205	168:07:10
18	मंगला (चन्द्रमा)(कृत्तिका)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2050 to 09:05:205	048:16:46
19	पिगंला (सूर्य)(रोहिणी)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2051 to 09:05:205	048:16:46
20	धन्या (बृहस्पति)(मृगशिर)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2053 to 08:05:205	292:38:57
21	भ्रमरी(मंगल)(आर्द्रा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2056 to 08:05:206	249:49:11
22	भद्रीका(बुध)(पुनर्वसु)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2060 to 09:05:206	157:48:03
23	उल्का (शनि)(पुष्य)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2065 to 09:05:207	136:25:07
24	सिद्धा (शुक्र)(आश्लेषा)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2071 to 09:05:207	152:51:40

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Hyderabad

जैमिनी चर दशा

(नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र0 स0	राशि दशा	अवधि	से ———————— तक
1	कन्या दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1983
2	तुला दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1986
3	वृश्चिक दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:1986 --- 18:12:1991
4	धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:1991 --- 18:12:1992
5	मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1992 --- 18:12:1999
6	कुम्भ दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1999 --- 18:12:2003
7	मीन दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2003 --- 18:12:2005
8	मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:2005 --- 18:12:2017
9	वृष दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2017 --- 18:12:2021
10	मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2021 --- 18:12:2026
11	कर्क दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2026 --- 18:12:2036
12	सिंह दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2036 --- 18:12:2040

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

कन्या दशा		तुला दशा		वृश्चिक दशा		धनु दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
तुला	18:12:1973	वृश्चिक	18:12:1983	तुला	18:12:1986	वृश्चिक	18:12:1991
वृश्चिक	18:10:1974	धनु	18:03:1984	मकर	19:05:1987	तुला	17:01:1992
धनु	18:08:1975	मकर	18:06:1984	सिंह	18:10:1987	मकर	17:02:1992
मकर	18:06:1976	कुंभ	17:09:1984	कर्क	18:03:1988	सिंह	18:03:1992
कुंभ	18:04:1977	मीन	18:12:1984	मिथुन	18:08:1988	कर्क	18:04:1992
मीन	16:02:1978	मेष	19:03:1985	वृष	17:01:1989	मिथुन	18:05:1992
मेष	18:12:1978	वृष	18:06:1985	मेष	18:06:1989	वृष	18:06:1992
वृष	18:10:1979	मिथुन	17:09:1985	मीन	17:11:1989	मेष	18:07:1992
मिथुन	18:08:1980	कर्क	18:12:1985	कुंभ	18:04:1990	मीन	18:08:1992
कर्क	18:06:1981	सिंह	19:03:1986	मकर	17:09:1990	कुंभ	17:09:1992
सिंह	18:04:1982	मकर	18:06:1986	धनु	16:02:1991	मकर	18:10:1992
मकर	16:02:1983	तुला	17:09:1986	वृश्चिक	19:07:1991	धनु	17:11:1992

मकर दशा		कुम्भ दशा		मीन दशा		मेष दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
धनु	18:12:1992	मीन	18:12:1999	मेष	18:12:2003	वृष	18:12:2005
वृश्चिक	19:07:1993	मेष	18:04:2000	वृष	17:02:2004	मिथुन	18:12:2006
तुला	16:02:1994	वृष	18:08:2000	मिथुन	18:04:2004	कर्क	18:12:2007
मकर	17:09:1994	मिथुन	18:12:2000	कर्क	18:06:2004	सिंह	18:12:2008
सिंह	18:04:1995	कर्क	18:04:2001	सिंह	18:08:2004	मकर	18:12:2009
कर्क	17:11:1995	सिंह	18:08:2001	मकर	18:10:2004	तुला	18:12:2010
मिथुन	18:06:1996	मकर	18:12:2001	तुला	18:12:2004	वृश्चिक	18:12:2011
वृष	17:01:1997	तुला	18:04:2002	वृश्चिक	16:02:2005	धनु	18:12:2012
मेष	18:08:1997	वृश्चिक	18:08:2002	धनु	18:04:2005	मकर	18:12:2013
मीन	19:03:1998	धनु	18:12:2002	मकर	18:06:2005	कुंभ	18:12:2014
कुंभ	18:10:1998	मकर	18:04:2003	कुंभ	18:08:2005	मीन	18:12:2015
मकर	19:05:1999	कुंभ	18:08:2003	मीन	18:10:2005	मेष	18:12:2016

वृष दशा		मिथुन दशा		कर्क दशा		सिंह दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
मेष	18:12:2017	वृष	18:12:2021	मिथुन	18:12:2026	मकर	18:12:2036
मीन	18:04:2018	मेष	19:05:2022	वृष	18:10:2027	तुला	18:04:2037
कुंभ	18:08:2018	मीन	18:10:2022	मेष	18:08:2028	वृश्चिक	18:08:2037
मकर	18:12:2018	कुंभ	19:03:2023	मीन	18:06:2029	धनु	18:12:2037
धनु	18:04:2019	मकर	18:08:2023	कुंभ	18:04:2030	मकर	18:04:2038
वृश्चिक	18:08:2019	धनु	17:01:2024	मकर	16:02:2031	कुंभ	18:08:2038
तुला	18:12:2019	वृश्चिक	18:06:2024	धनु	18:12:2031	मीन	18:12:2038
मकर	18:04:2020	तुला	17:11:2024	वृश्चिक	18:10:2032	मेष	18:04:2039
सिंह	18:08:2020	मकर	18:04:2025	तुला	18:08:2033	वृष	18:08:2039
कर्क	18:12:2020	सिंह	17:09:2025	मकर	18:06:2034	मिथुन	18:12:2039
मिथुन	18:04:2021	कर्क	16:02:2026	सिंह	18:04:2035	कर्क	18:04:2040
वृष	18:08:2021	मिथुन	19:07:2026	कर्क	17:02:2036	सिंह	18:08:2040

जैमिनी चर दशा

(नीलकान्त सिद्धान्त)

मेष दशा (18:12:2005 — 18:12:2017)

वृष भुक्ति

अंतर	से
मेष	18:12:2005
मीन	17:01:2006
कुंभ	16:02:2006
मकर	19:03:2006
धनु	18:04:2006
वृश्चिक	19:05:2006
तुला	18:06:2006
कन्या	19:07:2006
सिंह	18:08:2006
कर्क	17:09:2006
मिथुन	18:10:2006
वृष	17:11:2006

मिथुन भुक्ति

अंतर	से
वृष	18:12:2006
मेष	17:01:2007
मीन	16:02:2007
कुंभ	19:03:2007
मकर	18:04:2007
धनु	19:05:2007
वृश्चिक	18:06:2007
तुला	19:07:2007
कन्या	18:08:2007
सिंह	17:09:2007
कर्क	18:10:2007
मिथुन	17:11:2007

कर्क भुक्ति

अंतर	से
मिथुन	18:12:2007
वृष	17:01:2008
मेष	17:02:2008
मीन	18:03:2008
कुंभ	18:04:2008
मकर	18:05:2008
धनु	18:06:2008
वृश्चिक	18:07:2008
तुला	18:08:2008
कन्या	17:09:2008
सिंह	18:10:2008
कर्क	17:11:2008

सिहं भुक्ति

अंतर	से
कन्या	18:12:2008
तुला	17:01:2009
वृश्चिक	16:02:2009
धनु	19:03:2009
मकर	18:04:2009
कुंभ	19:05:2009
मीन	18:06:2009
मेष	19:07:2009
वृष	18:08:2009
मिथुन	17:09:2009
कर्क	18:10:2009
सिंह	17:11:2009

कन्या भुक्ति

अंतर	से
तुला	18:12:2009
वृश्चिक	17:01:2010
धनु	16:02:2010
मकर	19:03:2010
कुंभ	18:04:2010
मीन	19:05:2010
मेष	18:06:2010
वृष	19:07:2010
मिथुन	18:08:2010
कर्क	17:09:2010
सिंह	18:10:2010
कन्या	17:11:2010

तुला भुक्ति

अंतर	से
वृश्चिक	18:12:2010
धनु	17:01:2011
मकर	16:02:2011
कुंभ	19:03:2011
मीन	18:04:2011
मेष	19:05:2011
वृष	18:06:2011
मिथुन	19:07:2011
कर्क	18:08:2011
सिंह	17:09:2011
कन्या	18:10:2011
तुला	17:11:2011

वृश्चिक भुक्ति

अंतर	से
तुला	18:12:2011
कन्या	17:01:2012
सिंह	17:02:2012
कर्क	18:03:2012
मिथुन	18:04:2012
वृष	18:05:2012
मेष	18:06:2012
मीन	18:07:2012
कुंभ	18:08:2012
मकर	17:09:2012
धनु	18:10:2012
वृश्चिक	17:11:2012

धनु भुक्ति

अंतर	से
वृश्चिक	18:12:2012
तुला	17:01:2013
कन्या	16:02:2013
सिंह	19:03:2013
कर्क	18:04:2013
मिथुन	19:05:2013
वृष	18:06:2013
मेष	19:07:2013
मीन	18:08:2013
कुंभ	17:09:2013
मकर	18:10:2013
धनु	17:11:2013

मकर भुक्ति

अंतर	से
धनु	18:12:2013
वृश्चिक	17:01:2014
तुला	16:02:2014
कन्या	19:03:2014
सिंह	18:04:2014
कर्क	19:05:2014
मिथुन	18:06:2014
वृष	19:07:2014
मेष	18:08:2014
मीन	17:09:2014
कुंभ	18:10:2014
मकर	17:11:2014

कुम्भ भुक्ति

अंतर	से
मीन	18:12:2014
मेष	17:01:2015
वृष	16:02:2015
मिथुन	19:03:2015
कर्क	18:04:2015
सिंह	19:05:2015
कन्या	18:06:2015
तुला	19:07:2015
वृश्चिक	18:08:2015
धनु	17:09:2015
मकर	18:10:2015
कुंभ	17:11:2015

मीन भुक्ति

अंतर	से
मेष	18:12:2015
वृष	17:01:2016
मिथुन	17:02:2016
कर्क	18:03:2016
सिंह	18:04:2016
कन्या	18:05:2016
तुला	18:06:2016
वृश्चिक	18:07:2016
धनु	18:08:2016
मकर	17:09:2016
कुंभ	18:10:2016
मीन	17:11:2016

मेष भुक्ति

अंतर	से
वृष	18:12:2016
मिथुन	17:01:2017
कर्क	16:02:2017
सिंह	19:03:2017
कन्या	18:04:2017
तुला	19:05:2017
वृश्चिक	18:06:2017
धनु	19:07:2017
मकर	18:08:2017
कुंभ	17:09:2017
मीन	18:10:2017
मेष	17:11:2017

जैमिनी चर दशा

(राघवभट्ट् और नरसिंह सूरी का सिद्धान्त)

क0 स0	राशि दशा	अवधि	से ———————— तक
1	कन्या दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1975
2	वृष दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1975 --- 18:12:1983
3	मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1990
4	सिंह दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1990 --- 18:12:1998
5	मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:1998 --- 18:12:2010
6	धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:2010 --- 18:12:2011
7	कर्क दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2011 --- 18:12:2013
8	मीन दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2013 --- 18:12:2023
9	वृश्चिक दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:2023 --- 18:12:2030
10	मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2030 --- 18:12:2035
11	कुम्भ दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:2035 --- 18:12:2043
12	तुला दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:2043 --- 18:12:2046

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

कन्या दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	18:12:1973
तुला	18:12:1974

वृष दशा

भुक्ति	से
मकर	18:12:1975
धनु	18:12:1976
वृश्चिक	18:12:1977
तुला	18:12:1978
कन्या	18:12:1979
सिंह	18:12:1980
कर्क	18:12:1981
मिथुन	18:12:1982

मकर दशा

भुक्ति	से
मिथुन	18:12:1983
कर्क	18:12:1984
सिंह	18:12:1985
कन्या	18:12:1986
तुला	18:12:1987
वृश्चिक	18:12:1988
धनु	18:12:1989

सिंह दशा

भुक्ति	से
धनु	18:12:1990
मकर	18:12:1991
कुंभ	18:12:1992
मीन	18:12:1993
मेष	18:12:1994
वृष	18:12:1995
मिथुन	18:12:1996
कर्क	18:12:1997

मेष दशा

भुक्ति	से
मेष	18:12:1998
वृष	18:12:1999
मिथुन	18:12:2000
कर्क	18:12:2001
सिंह	18:12:2002
कन्या	18:12:2003
तुला	18:12:2004
वृश्चिक	18:12:2005
धनु	18:12:2006
मकर	18:12:2007
कुंभ	18:12:2008
मीन	18:12:2009

धनु दशा

भुक्ति	से
मकर	18:12:2010

कर्क दशा

भुक्ति	से
कन्या	18:12:2011
सिंह	18:12:2012

मीन दशा

भुक्ति	से
मकर	18:12:2013
धनु	18:12:2014
वृश्चिक	18:12:2015
तुला	18:12:2016
कन्या	18:12:2017
सिंह	18:12:2018
कर्क	18:12:2019
मिथुन	18:12:2020
वृष	18:12:2021
मेष	18:12:2022

वृश्चिक दशा

भुक्ति	से
मेष	18:12:2023
वृष	18:12:2024
मिथुन	18:12:2025
कर्क	18:12:2026
सिंह	18:12:2027
कन्या	18:12:2028
तुला	18:12:2029

मिथुन दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	18:12:2030
तुला	18:12:2031
कन्या	18:12:2032
सिंह	18:12:2033
कर्क	18:12:2034

कुम्भ दशा

भुक्ति	से
मिथुन	18:12:2035
कर्क	18:12:2036
सिंह	18:12:2037
कन्या	18:12:2038
तुला	18:12:2039
वृश्चिक	18:12:2040
धनु	18:12:2041
मकर	18:12:2042

तुला दशा

भुक्ति	से
मकर	18:12:2043
धनु	18:12:2044
वृश्चिक	18:12:2045

जैमिनी चर दशा

(राघवभट्ट् और नरसिंह सूरी का सिद्धान्त)

मीन दशा (18:12:2013 —— 18:12:2023)

मकर भुक्ति	
अंतर	से
मिथुन	18:12:2013
कर्क	17:01:2014
सिंह	16:02:2014
कन्या	19:03:2014
तुला	18:04:2014
वृश्चिक	19:05:2014
धनु	18:06:2014
मकर	19:07:2014
कुंभ	18:08:2014
मीन	17:09:2014
मेष	18:10:2014
वृष	17:11:2014

धनु भुक्ति	
अंतर	से
मकर	18:12:2014
धनु	17:01:2015
वृश्चिक	16:02:2015
तुला	19:03:2015
कन्या	18:04:2015
सिंह	19:05:2015
कर्क	18:06:2015
मिथुन	19:07:2015
वृष	18:08:2015
मेष	17:09:2015
मीन	18:10:2015
कुंभ	17:11:2015

वृश्चिक भुक्ति	
अंतर	से
मेष	18:12:2015
वृष	17:01:2016
मिथुन	17:02:2016
कर्क	18:03:2016
सिंह	18:04:2016
कन्या	18:05:2016
तुला	18:06:2016
वृश्चिक	18:07:2016
धनु	18:08:2016
मकर	17:09:2016
कुंभ	18:10:2016
मीन	17:11:2016

तुला भुक्ति	
अंतर	से
मकर	18:12:2016
धनु	17:01:2017
वृश्चिक	16:02:2017
तुला	19:03:2017
कन्या	18:04:2017
सिंह	19:05:2017
कर्क	18:06:2017
मिथुन	19:07:2017
वृष	18:08:2017
मेष	17:09:2017
मीन	18:10:2017
कुंभ	17:11:2017

कन्या भुक्ति	
अंतर	से
वृश्चिक	18:12:2017
तुला	17:01:2018
कन्या	16:02:2018
सिंह	19:03:2018
कर्क	18:04:2018
मिथुन	19:05:2018
वृष	18:06:2018
मेष	19:07:2018
मीन	18:08:2018
कुंभ	17:09:2018
मकर	18:10:2018
धनु	17:11:2018

सिहं भुक्ति	
अंतर	से
धनु	18:12:2018
मकर	17:01:2019
कुंभ	16:02:2019
मीन	19:03:2019
मेष	18:04:2019
वृष	19:05:2019
मिथुन	18:06:2019
कर्क	19:07:2019
सिंह	18:08:2019
कन्या	17:09:2019
तुला	18:10:2019
वृश्चिक	17:11:2019

कर्क भुक्ति	
अंतर	से
कन्या	18:12:2019
सिंह	17:01:2020
कर्क	17:02:2020
मिथुन	18:03:2020
वृष	18:04:2020
मेष	18:05:2020
मीन	18:06:2020
कुंभ	18:07:2020
मकर	18:08:2020
धनु	17:09:2020
वृश्चिक	18:10:2020
तुला	17:11:2020

मिथुन भुक्ति	
अंतर	से
वृश्चिक	18:12:2020
तुला	17:01:2021
कन्या	16:02:2021
सिंह	19:03:2021
कर्क	18:04:2021
मिथुन	19:05:2021
वृष	18:06:2021
मेष	19:07:2021
मीन	18:08:2021
कुंभ	17:09:2021
मकर	18:10:2021
धनु	17:11:2021

वृष भुक्ति	
अंतर	से
मकर	18:12:2021
धनु	17:01:2022
वृश्चिक	16:02:2022
तुला	19:03:2022
कन्या	18:04:2022
सिंह	19:05:2022
कर्क	18:06:2022
मिथुन	19:07:2022
वृष	18:08:2022
मेष	17:09:2022
मीन	18:10:2022
कुंभ	17:11:2022

मेष भुक्ति	
अंतर	से
मेष	18:12:2022
वृष	17:01:2023
मिथुन	16:02:2023
कर्क	19:03:2023
सिंह	18:04:2023
कन्या	19:05:2023
तुला	18:06:2023
वृश्चिक	19:07:2023
धनु	18:08:2023
मकर	17:09:2023
कुंभ	18:10:2023
मीन	17:11:2023

अंतर	से

अंतर	से

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य जानकारी :

आपकी लग्न राशि कन्या है, जिसका स्वामी बुध है। यह एक भौतिक, साधारण तथा लचीली और वायु तत्व की राशि है। विशेषत: यह नीरस और मानवीय राशि है।

इस लग्न में जन्म होने के कारण आप मेधावी, अध्ययनपरायण एवं समझदार होगें। आप विचारक, सिद्धान्तवादी तथा विधिवत कार्य करने वाले होगें तथा ज्ञान की खोज में लगे रहेगें। आप शांत और स्थिरदिमाग वाले होगें, और लम्बे समय तक अपने मस्तिष्क को एकाग्रचित करके कोई कार्य कर सकते हैं। भौतिक और रसायनिक विज्ञान में आपकी गहन रूचि होगी। अनौपचारिक अध्ययन एवं अनुशंधान मेंभी आपकी रूचि होगी। आपका ज्ञान विस्तृत होगा, और आप वाक्पटु होगें। आपके ये गुण दूसरों को प्रभावित करेगें, और लोग आपकी प्रशंसा करेगें। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आप सतत् प्रयास और धैर्य के लिए जाने जायेंगें। अपनी भावनाओं और आवेगों पर आपका नियंत्रण होगा। आप एक कूटनीतिक और चतुर व्यक्तिहोगें। आपकी वाणी में मिठास और नम्रता होगी ।

कला, संगीत और साहित्य में भी आपकी रूचि होगी, और आप इन विधाओं में निपुणता प्राप्त करेगें। आप महत्वाकांक्षी होगें। आप बहुत उदार और सुशील होगें। आप सादा जीवन और ऊँचे विचार की शैली को मान्यता देगें और कम खर्चीले होगें। आप धार्मिक होगें, और धर्म तथा परम्पराओं के प्रति आपके हृदय में सम्मान होगा। यात्राओं और आनन्द भ्रमण पर जाना आपको प्रिय होगा। आपमें विविध प्रकार की चीजें को इकठ्ठा करने की उत्सुकता होगी जो आपकी कल्पना को जागृत करेगा। आप अपने द्वारा इकठ्ठी की गई चीजों को नष्ट करने के पक्ष में नही होगें।

शारीरिक संरचना :

आपकी रंगत गोरी और व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके नेत्र सुन्दर और चेहरा चौडा होगा। आपके चेहरे पर एक मुस्कराहट विराजमान रहेगी। आप मध्यम कद के बढ़िया आकृति, पतले तथा गोल चेहरे वाले हो सकते हैं। आपका शरीर छरहरा होगा, लेकिन सीना चौडा होगा। आप देखने में खुबा प्रतीत होगें। आपकी नाक सीधी और नुकीली तथा आवाज तीखी हो सकती है। आपका स्वभाव चंचल हो सकता है।

मानसिक स्थिति :

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा कन्या राशि में स्थित है, जो बुध द्वारा संचालित होता है। यह साधारण, नकरात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत स्वभाव के लेकिन चंचल प्रवृति के हो सकते हैं। आप अधिक महत्वाकांक्षी नही हो सकते हैं। आप अहंकारी तथा निराधार वादे करने वालों से घृणा करेगें। आपका बौद्धिक स्तर ऊँचा होगा तथा आप बौद्धिक कार्यों में व्यस्त रहेगें। आप ऐसा कार्य करना पसंद करेगें, जिसमें जिम्मेदारी तथा अधीनस्थता हो। आप शांतिमय तथा तनावमुक्त जीवन पसंद करेगें।

आपका अपने परिवार से लगाव होगा , तथा आपके निकट संबंधी आपके जीवन को आंनदमय तथा खुशहाल बना देगें। कृषि, कृषि उत्पाद, दवाईयॉ, आयुर्वेद, खाद्य पदार्थ, मिष्ठान तथा घर में प्रयोग किए जाने वाले दूसरे उपकरण आपको आकर्षित करेगें। आप अपने सहयोगियों, वरिष्ठ अधिकारियों तथा अधीनस्थ अधिकारियों से मीठे संबंध विकसित करेगें। यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका

आचरण ठीक होगा, और वो आपका आदर करेगा।

आपका स्वभाव जन्म से ही जागरूक और तेज होगा, फिर भी आप कुछ कम बोलने वाले भी हो सकते हैं, जिसके कारण आप असामान्य रूप से धैर्यवान होगें। कम उम्र में ही आपका पारिवारिक भाग्य क्षीण होने के कारण या घरेलू विवाद, किसी तरह का प्रतिबंध या कमी आपके जीवन को पीछे की ओर खींच सकती है। औपचारिक तौर पर आप विश्लेषण विज्ञान पढ़ेगें, लेकिन हस्तकला में भी गहरी दिलचस्पी होगी, और आप केवल सैद्धांतिक विषय पढ़ने में ही दिलचस्पी नहीं रखेगें, बल्कि व्यावहारिक भी होगें, और आप उनका पूर्णतया उपयोग करने में रूचि रखेगें। आप कुछ नई जानकारियों तथा तथ्यों की खोज कर सकते हैं, या आप रोजमर्रा में प्रयोग किये जाने वाले कुछ उपकरणों का अविष्कार भी कर सकते हैं। समय के साथ -साथ आपकी परिपक्वता और भागीदारी की क्षमता बढ़ेगी, स्वभाव मिलनसार होगा, संवाद बेहतर होगा। शिक्षण या सांस्कृतिक कार्यक्रम के सिलसिले में आपके किसी दूरस्थ स्थान या विदेशजाने की भी संभावना है।

गुण :

आपकी तार्किक क्षमता विलक्षण होगी, और आप बहुत बुद्धिमान और विवेकी होगें। आपकी स्मरण शक्तिबहुत उत्तम होगी। आपको कई विषयों का ज्ञान होगा। आपको ललित कलाओं, जैसे संगीत, साहित्य आदि से प्रेम होगा। आप झगडों और कलह से दूर रहेगें, और सौहार्द प्रिय होगें। आप धीरे २ और नम्रतापूर्वक बोलेगें, तथा आपकी वाणी मृदु होगी। आप चीजों को व्यवस्थित ढंग से करना और रखना पसन्द करेगें। आप मितव्ययी होगें, और फिजूलखर्ची से दूर रहेगें।

अवगुण :

आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कभी -२ आप भ्रमित हो सकते हैं, जिससे आपको अपने निर्णय पर पहुँचने में विलम्ब हो सकता है, इस कारण से आप निरूत्साहित हो सकते हैं। आपका मिजाज गर्म हो सकता है। आप सभी पर शक कर सकते हैं, और हर एक को स्वार्थी समझ सकते हैं। आप छद्म रूप से दंभी हो सकते हैं। आप नकचढे हो सकते है, और आपको खुश करना कठिन हो सकता है। आप दूसरों के धन और घर का लाभ उठा सकते हैं। आप आवेगी हो सकते हैं। आपमें प्रतिशोध की भावना हो सकती है। आपका वास्तविकता से कोई नाता नहीं हो सकता है, और आप सपनों के संसार में विचरणकर सकते हैं।

विशेष लक्षण :

१) आप कर्तव्यपरायण होगें, और अपने कार्यों और जिम्मेदारियों को पूर्ण समपर्ण के साथ निभायेगें।
२) चीजों का विश्लेशण करके अपनी तर्कशक्तिके आधार पर आप उनकी समालोचना करेगें।
३) आपकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण होगी, और अपनी विलक्षण ग्राह्य क्षमता के कारण नवीन चीजों को आप शीघ्र आत्मसात कर लेगें।
४) आप प्रत्येक कार्य विधिवत ढंग से करेगें, और उसके हर पहलू, हर बारीकी और तथ्य पर ध्यान देगें।
५) आप एक कुशल अन्वेशक होगें, और अपने आस पास की परिस्थितियों को जाँचने परखने की आपमें अद्भुत क्षमता होगी।

रोजगार :

आपका मेधावी होने का गुण आपको बौद्धिक कार्यों की तरफ आकर्षित करेगा। आपके लिये ऐसे कार्य

जहाँ दिमाग का प्रयोग हो, उत्तम रहेगें। आप सलाहकार, वकील, अध्यापक, गणितज्ञ, चिकित्सक , प्रबंधक, सांख्यिकी विद्, प्रोफेसर, कांउसलर, लेखक, लेखाकार आदि बनकर अपने भविष्य को चमका सकते हैं। आप संगीतज्ञ, अभिनेता, कमप्यूटर प्रोग्रामर, टेलीफोन ऑपरेटर, सुनार, ट्रांसपोर्टर या टूर प्रबंधक के रूप में भी प्रगति कर सकते हैं।

शुभ एवं अशुभ ग्रह :

१) आपके लग्न का स्वामी बुध होने के कारण वह आपके लिये सबसे शुभ होगा।
२) द्वितीयेश और नवमेश शुक्र एक लाभकारी ग्रह होगा।
३) तृतीयेश और अष्टमेश मंगल अति अशुभ होगा। एकादशेश चन्द्रमा भी शुभ है।
४) बृहस्पति सप्तमेश होने के कारण मारकेश है।

कन्या लग्न वाले कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्ति :

अजरूद्दीन, सचिन तेंदुलकर, वेंकटेश प्रसाद – क्रिकेटर, जॉन एफ कैनेडी, बिल क्लींटन – पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति, प्रिंसेस डायना – वेल्स की राजकुमारी, मुजीबुर रहमान – बांग्लादेश के जन्मदाता, राजीव गांधी, पी वी नरसिम्हाराव पूर्व प्रधानमंत्री, लियंडर पेस टेनिस खिलाडी, राधाकृष्णनन भारत के पूर्व राष्ट्रपति

जन्म कुण्डली में प्राप्त विभिन्न ज्योतिषीय गणनाओं से भविष्यफल

जन्म कालिक ब्राहस्पत्य (संवत्सर) का भविष्यफल–

आपका जन्म प्रमादी संवत्सर में हुआ है। यदि कुछ अनुकूल योग आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, और / या यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो आपको प्रतिकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान या ज्ञानी नहीं हो सकते हैं, और आप एक उत्तम जीविका अर्जित करने में निपुण नहीं हो सकते हैं। आप अत्याधिक दंभी स्वभाव वाले, विद्वेषी, लालची व्यक्तिहो सकते हैं। आप विचारहीन और झगड़ालू हो सकते हैं, कई लागों का विरोध कर सकते हैं, और बुरे कामों को करने में आपको विशेष सुख मिल सकता है।

जन्म कालिक सौर अयन का भविष्यफल–

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायण (या यमयायन) में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दंभी और हठी प्रकृति, या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्तिहो सकते हैं। यदि कुछ अनुकूल रवि योग कुण्डली (शुभ करतरी, उभयाचरी, वेशी, वोशी आदि) में मौजूद हैं, तो स्थितियों में बेहतरी के लिये सुधार होगा, लेकिन यदि सूर्य पाप करतरी योग में है, या अगली अधिकृत राशि में नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं, तो आप कठोर हृदयी या कपटी हो सकतेहैं, आप अपनी जीविका कृषि और/ या मवेशियों के पालन से अर्जित कर सकते हैं, साथ ही आप कुछ ऐसे कामों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहाँ पर पारिश्रमिक किये गये प्रयासों की तुलना में बिल्कुल भी सामंजस्य पूर्ण नहीं हो सकता है।

जन्म कालिक ऋतु का भविष्यफल–

आपका जन्म हेमन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल हैं। आप बहुत बुद्धिमान, विचारवान, ज्ञानी और विवेकी व्यक्तिहोगें। आप एक खुले दिमाग, उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्तिहोगें, और हमेशा उचित कामों को करने में संलग्न रहेगें। आपका धार्मिकरूझान उत्कृष्ट होगा, और आप अपनी जीविका एक वरिष्ठ सलाहकार बन कर अर्जित कर सकते हैं। आप एक सुन्दर आचरण और सुशील स्वभाव वाले व्यक्तिहोगें जिससे लोग आपको सम्मान देगें।

जन्म कालिक मास का भविष्यफल–

आपका जन्म पौष मास (दिसम्बर/ जनवरी) में हुआ है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डलीमें मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर रूप वाले होगें, फिर भी आपकी संरचना कमजोर हो सकती है यदि आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। आपको अपने माता पिता से आर्थिक सहायता नहीं प्राप्त हो सकती है, फिर भी आप लापरवाही से व्यय कर सकते हैं। साथ ही, आप रहस्यमयी प्रकृति के हो सकते हैं, और अपने विचार तथा निर्णय अपने तकसीमित रख सकते हैं जिससे आप अपने शत्रुओं को आघात पहुँचा सकते हैं। सुखद पहलू यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र शास्त्रों के अध्ययन के शौकीन होगें, और विद्वानों तथा धर्मपरायणलोगों का उचित सम्मान करेगें।

जन्म कालिक पक्ष का भविष्यफल–

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी संरचना कुछ हद तक कमजोर हो सकती है, और आप रोग से ग्रसित

हो सकते हैं। आपकी प्रकृति अशांत और स्वभाव अस्थिर हो सकता है। आप पर झगड़ालू होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक हो सकते हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना आप राई का पहाड़ बना सकते हैं। इसके अलावा, आप कामुक हो सकते हैं, और अपने जीवन साथी की चापलूसी कर सकते हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में शुभ ग्रह बृहस्पति चन्द्रमा के साथ स्थित है (या इस पर उसकी दृष्टि है), आप मानसिक शांति और मिजाज की समता से पूर्ण होगें। आप खुले विचारों, आशावादी दृष्टिकोण औरपरोपकारी स्वभाव वाले होगें। आर्थिक रूप से आप काफी संपन्न होगें, और आपके मित्रों तथा परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप हमेशा स्वयं निर्णय करने की स्थिति में होगें, और आपके दायरे के लोग कुछ महत्वपूर्ण मामलों में आपकी कीमती राय या सलाह ले सकते हैं।

जन्म कालिक दिन का भविष्यफल–

आपका जन्म मंगल को हुआ है। दिवसपति मंगल की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्त्वपूर्ण है। इसका फल भाव में यह स्थिति के अनुसार और भी अधिक महत्त्वपूर्ण होगा। इसके अलावा सारी सामान्य स्थिति आपके पक्ष में है। आप बहुत गुणी होगें। आप उत्तम चरित्र वाले व्यक्ति होगें। आप पूर्णलगन से अपने कार्य को करेगें, आपमें अचानक ही नई शक्ति का प्रवाह होगा। आप अपने बोलचाल और वाकचातुर्य से सभी मुश्किलों को पार करेगें। आप अपनी आजीविका का उपार्जन धातु, चल अचलसम्पत्ति अथवा रोजगार जैसे पुलिस, सुरक्षा आदि से करेगें।

दिन या रात के जन्म का भविष्यफल–

आपका जन्म रात्रि के समय हुआ है। अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नही है तोआप आलसी तथा दिन में भी सोने वाले हो सकते हैं। आप कुछ गोपनशील स्वभाव के हो सकते हैं और आप अपनी अभिलाषाएँ गुप्त रखना चाहेगें। इसके अलावा, आप कुछ कामुक स्वभाव के हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। यदि आपके लग्न में कोई ग्रह स्थित हैया अपनी दृष्टि डाल रहा है तो आप कर्मठ, उत्साही, मेहनती तथा प्रतिभाशाली होगें।

जन्म कालिक सुर्य सिद्धान्त योग का भविष्यफल –

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म सौभाग्य योग में हुआ है। यह एक उत्तम योग है। इस योग में जन्म लेने के कारण आप कई मामलों में भाग्यशाली होगें। आप शिक्षित तथा बुद्धिमान व्यक्ति होगें तथा हमेशा सही मार्ग पर चलेगें। आम लोग आपके व्यवहार, विवेक, बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता के कारण आपका सम्मान करेगें तथा आपसे खुद से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर सलाह लेगें।

जन्म कालिक तिथी का भविष्यफल–

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। अगर कोई शुभ ग्रह चन्द्रमा से जुड़ा हुआ है या इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है तो परिणाम काफी लाभदायक होगा। आप अपने पिता के काफी नजदीक होगें तथा शिक्षकों एवं गुरूओं का काफी सम्मान करेगें लेकिन आपका स्वभाव दूसरों से भिन्न हो सकता है, जिसकी वजह से कुछ अपने लोग आपका विरोध कर सकते हैं और आपसे फायदा उठा सकते हैं। आप धार्मिक प्रवृति के होगें और आपका निर्णय प्रशंसनीय होगा। लेकिन यदि कोई अशुभ ग्रह चन्द्रमा से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है तो आप भ्रष्ट हो सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपके बुरे आचरण के लिए आपकी निंदा कर सकते हैं।

जन्म कालिक करन का भविष्यफल–

आपका जन्म गरिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का पॉचवा करन है। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुदृढ़ शारीरिक गठन, आकर्षक व्यक्तित्व और सुखद आचरण के स्वामी होगें। आप विद्वान, बुद्धिमान, उदार, सम्मानीय तथा दूसरों को लाभ देने वाले व्यक्ति होगें। आप चतुर और बुद्धिमान होगें। आप अपने सभी शत्रुओं को दबाने में सक्षम होगें, लेकिन आप ऐसा किसी गुट, मंडली या चालाकी भरे कामों का सहारा लिए बगैर करेगें। आपकी सफलता की कुंजी आपका धैर्य, बुद्धिमता, दृढ़ता तथा समय पर कार्य है। आपआगे बढ़ने में सक्षम होगें और अपने समकालीनों से काफी आगे निकल जाएँगें।

जन्म कालिक नक्षत्र का भविष्यफल–

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा हस्त नक्षत्र में स्थित है। जैसाकि चन्द्रमा अपने नक्षत्र में स्थित है, अत: आपकई मामलों में भाग्यशाली होगें। आप सक्रिय, संवेदनशील, और विचारपूर्ण व्यक्ति होगें। आप तीक्ष्णबुद्धिमान और सुशिक्षित व्यक्ति होगें, इसके अलावा, पवित्र तथा प्राचीन शास्त्रों को पढ़ने में आपकी गहरी रूचि होगी। साथ ही आप ललित कलाओं में कुछ निपुण हो सकते हैं। आप रचनात्मक कल्पनाशीलता और ऊँचे विचारों से पूर्ण होगें। आप लेखक, संपादक, आलोचक आदि के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके व्यवसाय का कुछ संबंध महापालिका, जलीय कामों, मर्चेंट नेवी, आयात निर्यात आदि से हो सकता है, आपकी आय बहुत उत्तम हो सकती है।

कुण्डली में लागू हो रहे योग (ग्रह-युति)

कुण्डली में हो लागू हो रहे महत्वपूर्ण योग–

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश नीच या शत्रु राशि में स्थित है या एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ में स्थित है, या एक बुरे षष्ठीअंश में स्थित है। यह एक बहुत प्रतिकूल युति है, जिसे बन्धुभीसत्यकता योगकहते हैं। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो इस युति की उपस्थितिके कारण, आपके अपने संबंधी और मित्र जीवन में कभी आपको त्याग सकते हैं यद्यपि आपकी किसी छोटी सी गलती या बिना किसी वास्तविक दोष के कारण।

आपकी कुण्डली में, पंचमेश बली नहीं है तुंगस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने के कारण। इसके अलावा, यह केन्द्रीय भाव या त्रिकोण भाव में है। इस युति को एक पुत्र योग कहते हैं। यदिकुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपके केवल एक संतान हो सकती है जो काफी हद तक एक पुत्र होगा।

आपकी कुण्डली में, द्वितीयेश चतुर्थेश के साथ या उसकी दृष्टि इस में है, जबकि ये दोनों ग्रह ना ही अस्त और ना ही ग्रसित हैं। यह एक अनुकूल युति है, जिसे मातृ मूलत धन योग कहते हैं। इस योग कीउपस्थिति के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ होगा।

आप एक पुरूष हैं। आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ ९वें भाव में स्थित हैं। ९वें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है, या उसकी दृष्टि इस भाव में नहीं है। यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे अपत्य सुख योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस युति के होने के कारण, आप योग्य संतानों को प्राप्त करने में विशेषरूप से भाग्यशाली होगें जो आपके परिवार के लिये सुख और गर्व का सदा कारण बनेगीं।

आपकी कुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक शुक्र वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अलावा, यहसबसे उत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है। यह एक अनुकूल युतिहै, जिसे सत कलत्र योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग के गुणों कारण ,जीवन साथी के मामलें में, आप बहुत भाग्यशाली होगें जो एक कुलीन परिवार से होंगी, और सद्गुणों और विशेषताओं से भरपूर होंगी।

आपकी कुण्डली में, द्वितीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह साथ में है, और यह केन्द्रीय या त्रिक भाव में स्थितहै। समग्ररूप से यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे युक्तिसमन्वित वाग्मि योग कहते हैं। आपकोवाक्पटुता का नैसर्गिक उपहार प्राप्त होगा, और अपनी अकाट्य तर्क शक्तिऔर भाषण दक्षता के कारण आप सुविख्यात होगें। आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं, और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू हो रहे धन योग –

आपकी कुण्डली में २वें भाव(धन) का स्वामी उत्तम स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होगें, आपको एक मोहक पद प्राप्त होने की काफी संभावना है, और आपको उत्तम नौकरी प्राप्त होगी

संभवत: आपके पेशे का संबंध बीमा, प्रॉविडेन्ट फंड, राजस्व आदि से हो सकता है। साथ ही, आपको अपनी शादी या व्यावसायिक भागीदार से आर्थिक लाभ प्राप्त होगें, साथ ही, आप कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से, अपना नया उपक्रम शुरू करने के लिये भारी ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बहुत ही शुभ युति बन रही है। अपने स्वयं के कठिन प्रयत्नों और अपनी मनाशक्ति के द्वारा आप अपने समकालीनों से बहुत बधिक प्रगति करेगें। आपकी महत्वाकांक्षा फलीभूत होगी, और अवलम्बित अभिलाषायें पूरी होगीं। आपके चारों तरफ के लोग आपको एक अनुकरणीय और प्रेरणादायकव्यक्तिमानेगें। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ एक खुशहाल और समृद्धिपूर्ण जीवन व्यतीत करेगें।

आपकी कुण्डली में, लग्नेश और बृहस्पति एक साथ हैं, जो एक अनुकूल स्थिति में है, जिससे एक शुभधन योग बनता है। आप धन के मामलों में भाग्यशाली होगें, आय बहुत उत्तम होगी, और अवश्य बहुत धनी होगें।

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ (या इसकी इस पर दृष्टि है) है, जैसाकि इन दोनों में से कोई भी ग्रह किसी भी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संदर्भ में भागयशाली होगें, और उनसे धन दौलत प्राप्त करेगें। आपको अपने संबंधियों और कृषि से भी लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि आपकी कुण्डली में, १९वाँ भाव जल तत्व की राशि के साथ है, आप अपने जन्मस्थान या निवासस्थान से उत्तर की दिशा में स्थित जगहों पर या से उत्तम लाभ कमा सकते हैं।

कुण्डली में लागू हो रहे वित्तहानि योग–

आपकी कुण्डली में, अति अशुभ ग्रह ८वें भाव में स्थित है, इस पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव नहीं है। यद्यपि आप काफी धनाढ्य होगें, फिर भी आपको बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये, और अनावश्यक रूप से अधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिये। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है, इस बात की भी संभावना है कि आप किसी को गहरी चोट पहुँचा सकते हैं जिससे आपको फँसाया या दंडित किया जा सकता है।

कुण्डली में लागू हो रहे नभष योग–

आपकी कुण्डली में मौजूद इस नभस योग को दामिनी योग कहते हैं। यह एक प्रशंसनीय ग्रह युति है। आप बहुत समृद्ध होगें, आप सज्जन और सहिष्णु प्रकृति के एक बहुत विद्वान व्यक्तिहोगें। आप उदार होगें, और दूसरों के प्रति आपके दिल में करूणा भाव होगा। आपमें जानवरों के प्रति दया होगी, और आप उनकी किसी प्रकार से सेवा कर सकते हैं। आप परम्परागत धार्मिक कार्यों को करेगें, और एक शान्त और खुशहाल वैवाहिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेगें, आपको योग्य और कर्तव्यपरायण संतान का सुख मिलेगा। आपके नाम और यश का डंका चारों दिशाओं में गूँजेगा।

कुण्डली में लागू हो रहे अरिष्ट योग–

आपकी कुण्डली में, सूर्य और राहु ४थे भाव में स्थित हैं, जबकि उनमें से कोई भी तुगंस्थ या अपने भाव में नहीं है। यह एक प्रतिकूल अरिष्ट योग युति है। आपके पिता को आपके जन्म के समय कुछ कष्टका सामना करना पड़ा हो सकता है, और उनका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार के सदस्यों के

लिये गंभीर चिन्ता का विषय रहा हो सकता है। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपके पिता की मानसिक दशा का उनके जीवन के किसी दौर में कुछ हद तक ह्रास हो सकता है।

कुण्डली में लागू हो रहे रवि योग-

आपकी कुण्डली में सूर्य से दूसरे भाव में चन्द्रमा के अलावा एक ग्रह मौजूद है, और ऐसा ही ग्रह सूर्य से १२वें भाव में स्थित है, यह एक ग्रह युति बनाता है, जिसे उभयचरी योग कहते हैं। इसके अलावा जैसाकि ये दोनों ग्रह प्राकृतिक रूप से शुभ ग्रह हैं, युति बहुत शुभ होगी, क्योंकि आपकी कुण्डली में सूर्य शुभकरतारी योग में है। इस पूरी युति को उभयचरी शुभ करतरी योग कहते हैं। जैसाकि यह योग कई अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं को दर्शाता है, आपका जन्म धनी परिवार में हुआ है, और आप अपने जीवन के काफी प्रारम्भिक आयु काल में निश्चित रूप से विशिष्ट स्थान तक पहुँचेगें। आपकोसरकारी साधनों से लाभ प्राप्त होगा, जीवन के सभी सुखों और आराम का आनन्द मिलेगा, और आपके नाम तथा यश की पताका हर तरफ फहरायेगी।

ग्रहों के लिए रत्न और रूद्राक्ष

लग्नाधिपति के लिए रत्न

आपका लग्न स्वामी बुध है। चूँकि यह न तो नीचस्थ हैं और न ही त्रिका भाव में विराजमान है और न ही मारक भाव में स्थित है, इसलिए आप बुध के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी मे पांच या सात रत्ती का पन्ना डलवाकर इसे बुधवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी या मध्य ऊँगली में पहनें। यदि आप पन्ना पाने मे सक्षम नही हैं तो इसकी जगह एक्वामरीन, पैरिडोट रत्न, हरितमणि या हरा तुरमली भी पहना जा सकता है।

''रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

प्रियगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्,
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधम् प्रणमाम्यहम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ब्रम् ब्रीम् ब्रूम् सह बुधवे नमः।

बीज मंत्र :

ओऽम् ब्रूम ब्रीम बुधवे नमः।

नौवें भाव के स्वामी के लिए रत्न

चूँकि आपकी कुण्डली में नौवें घर का स्वामी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नौवें घर के स्वामी के लिए रत्न पहनना उपयुक्त है।

योग कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोइ प्राकृतिक योग कारक ग्रह नहीं है

तात्कालिक योग कारक ग्रह के लिए

रत्न

शनि ग्रह आपकी कुण्डली में तात्कालिक योग कारक है। चूँकि तात्कालिक योग कारक ग्रह न तो तुगंस्थ है, न ही नीचस्थ है और न ही अपने भाव में स्थित है, इसलिए आप शनि ग्रह के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी मे पांच या सात रत्ती का नीलम डलवाकर इसे शनिवार के दिन दाहिने हाथ की मध्य ऊँगली में धारण करें। यदि आप नीलम लेने मे अक्षम हैं तो इसके स्थान पर नीलमणि या वैदुर्य भी पहनसकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

नीलण्जनसंभूतम् रविमुत्रम यमाग्रजम्,
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् प्रम् प्रीम् प्रोम् सह शनिश्चराय नम:।

बीज मंत्र :

सम् शनिश्चराय नम:।

रूद्राक्ष के लिए सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है, इसलिए आपके लिए नौ मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव शक्ति हैं। हालॉकि ये नवरात्र (दशहरा या दूर्गा पूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। येऊर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा हर कार्य में हम सफलता प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष को धारण करते समय आपको निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:
रूद्राक्ष के लिए मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् हम् नम:।

रूद्राक्ष के लिए पंचाक्षरी मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् व्यम् रम् लम्।

रूद्राक्ष के लिए दुसरे अन्य सुझाव :

चूॅकि आपके चन्द्रमा का नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा है, इसलिए आपके लिए दो मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जॉच:

(अ)तैरान जॉच : पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है,लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

(ब) तॉबा जॉच : असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता हैं और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे कोअपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

(वि प्रा भद्राक्ष भी रूद्राक्ष की तरह होता है, परन्तु यह मृदुल रंग एवं कम ताप देने वाला होता है।)

(स) दूध जॉच : एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदिदूध खराब नही होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

वि प्रा - असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना

चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्र:

ओऽम् गौरी शंकराय नम:।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र:

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

विमशोत्तरी दशा से भविष्यफल

चन्द्र दशा

(18:12:1973--14:06:1979)

शनि अर्न्तदशा

(18:12:1973--14:04:1975)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में ठीक से स्थित नही है तो यह समय आपके लिए ठीकही होगा। अन्यथा यह समय आपके लिए ठीक नही होगा। आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए।आपको अपने शब्दों पर ध्यान देना चाहिए और कोई भी बड़ा कदम उठाने से पहले आपको काफीसोच विचार करना चाहिए। आपको अति आत्मविश्वास से काम नही लेना चाहिए अन्यथा आप परेशानी में पड़ सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी, अथवा मित्र या किसी प्रिय के बिछुड़ने की वजह से मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्य स्थल पर भी आपको कठिनाइयों कासामना करना पड़ सकता है और आप इससे निकलने की कोशिश करने के बावजूद भी नही निकल पायेगें। आपको हानि भी हो सकती है और आप अपने किये हुये वादो को पूरा करने की स्थिति में नही होगें। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शनि ग्रसित हैं तो आपको सामान्य लोगों मे अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आपका लग्न कर्क है तो यह लग्नपति एवं अष्टमपति का सयुक्त रूप से समय है, जिसकी वजह से आपको कुछ गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और किसी दुर्घटना सेभी इंकार नही किया जा सकता है।

बुध अर्न्तदशा

(14:04:1975--13:09:1976)

यह आपके लिए एक आनंदायक समय होगा। आपका दिमाग शांत, बुद्धि पैनी, विचार साफ और कल्पना सकारात्मक होगा। आपकी बौद्धिक क्षमता होगी और आप जो कल्पना करेगें उसे कार्यान्वित करने की स्थिति में होगें। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो निश्चित रूप से आप सफल होगें। आप सारे विवादों से मुक्त होगें और अपने जीवनसाथी और संतानों या प्रेमी और मित्रों केसाथ खुशी महसूस करेगें। आपका नाम और यश चारो तरफ फैलेगा और आपकी सामाजिक लोकप्रियता बढ़ेगी। आप कम दूरी की कुछ यात्राऍ कर सकते हैं और पिकनिक या सैर सपाटे में हिस्सा लेगें। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा औरआपकी आमदनी बढ़ेगी। यदि आप किसी व्यवसाय में हैं तो काफी तेजी से आगे बढ़ेगें और इसके विस्तार या कोई नया क्षेत्र चुनने के लिए प्रभावी उपाय करेगें। आपका घरेलू जीवन शांतिमय और सुखमय होगा। यदि बुध आपकी कुण्डली में ग्रसित है तो आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय बन सकता है। यदि दोनो ग्रह ग्रसित हैं तो तात्कालिक रूप से आप अपनी बुद्धि का औचित्य खो सकते हैं और निरर्थक तथा भ्रामक बातों से लोगों को चौंका सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा

(13:09:1976--14:04:1977)

यदि आपकी कुण्डली में ये दोनो ग्रह ठीक स्थिति में नही हैं तो यह समय आपके लिए भाग्यशाली नही होगा। आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और आपके दिमाग में डर और चिन्ता भरा हो सकता है। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो आपको निराशा हो

सकती है। यदि आप किसी नौकरी में हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं तो आप अपनी भ्रामक बातों से लोगों को विरोधी बना सकते हैं और आलोचनाओं को आमंत्रित कर सकते हैं। आपके मान सम्मान और विश्वसनीयता पर ऑच आ सकती है। आपका स्वास्थ्य भी गड़बड़ हो सकता है और आप तेज बुखार, फोड़ा, ग्रंथि में सूजन अथवाआखों के रोग से पीड़ित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में केतू एक या अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आपको बिजली से सम्बन्धित कार्यों और उपकरणों से दूर रहने की आवश्यकता है। यदि केतू आपकी कुण्डली में वृहस्पति अथवा शुक्र ग्रह के राशि या नक्षत्र में बैठा है तो आपकी परेशानियो में कुछ कमी हो सकती है।

शुक्र अर्न्तदशा

(14:04:1977--13:12:1978)

यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा, यह और भी भाग्यशाली हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शुक्र एक साथ वृष राशि में बैठे हों। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र चन्द्रमा से गिनती करने पर केन्द्र में स्थित है तो भी यह समय आपके लिए अत्यंत सुखमय होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आप विपरित लिंगी व्यक्तियों के साथ सुखपूर्वक जीवन का आनंद उठायेगें। यदि आप वयस्क हैं तो आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। काव्य एवं संगीत में आपकी रूचि बढ़ेगी और आप महॅगे मनोरंजन के साधन खरीदेगें। यदि आप कलात्मक कार्य मेंसंलग्न हैं तो आपको यथोचित सफलता प्राप्त होगी। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन हो सकता है और सामाजिक मिलन में आप आकर्षन का केन्द्र होगें। आप अपनी रोजगार के सिलसिले में किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। आपको अपनी यात्रा के दौरान सावधान और सचेत रहना चाहिए अन्यथा आपका धन चोरी हो सकता है। यदि आपका लग्न तुला है तो जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सम्मिलित रूप से समय हैं, निश्चित रूप से आप कोई सम्मानीय पाएॅगें।

सूर्य अर्न्तदशा

(13:12:1978--14:06:1979)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में ठीक स्थिति में नही हैं तो यह समय आपके लिए ठीक नही होगा। आपका स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आप बुखार और ऑखों की बिमारियों से ग्रसित हो सकते हैं और यदि चन्द्रमा आपकी कुण्डली में अस्तहै तो आपका स्वास्थ्य और भी सोचनीय हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य ठीक स्थिति मेंहै तो आप अपने प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगें और सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेगें। यदि चन्द्रमा आपकी कुण्डली में ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए ठीक होगा और आप विभिन्न कार्यो से जुड़े व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध बनायेगें और उनसे प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेगें। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में सूर्य एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको निराशा हो सकती है और आपके मान सम्मान की क्षति हो सकती है। और यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप काफी निराशा का समाना कर सकते हैं। यदि आपका लग्न कुंभ है तो आपके शत्रु आपके लिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। यदि आपका लग्न मकर है तो आपके जीवनसाथी आपकेलिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह है तो आपको चिकित्सा पर काफी धन व्यय करना पड़ सकता है या आपका काफी धन निरर्थक व्यय हो सकता है।

मंगल दशा

(14:06:1979--14:06:1986)

मंगल अर्न्तदशा

(14:06:1979--10:11:1979)

यदि आपकी कुण्डली में मंगल तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित है अथवा आपके लग्न से दशम भाव में स्थित होकर दिक् बल बना रहा है तो यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा। आप बहुत ही प्रभावशाली स्थिति पाएँगें, आमदनी बढ़ेगी, काफी धन संचित करेगें और कोई नई संपत्ति खरीदेगें। यदि आपकी कुण्डली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है तो यह समय आपके लिए धन के मामले मे काफी भाग्यशाली होगा। यदि मंगल आपकी कुण्डली में ग्रसित है तो आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता के साथ मुसीबत में पड़ सकते हैं और कुछ कारणों से चिंतित हो सकते हैं। कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपके लिए परेशानियॉ खड़ी कर सकते हैं, अपने दोस्तों की सहानुभूति खो सकते हैं और अपरिचित लोग भी आपके लिए परेशानियॉ खड़ी कर सकते हैं। यदि मंगल आपकी कुण्डली में शुभ है तो ये परेशानियॉ आपके लिए कम हो जायेगी। यदि मंगल आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है तो आप प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेगें। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप पुलिस के चक्कर में पड़ सकते हैं और यदि मंगल आठवें घर में स्थित है तो आपकी परेशानियॉ बढ़ सकती है। यदि मंगल कुंभ राशि में स्थित है तो आपको ऊँचे रक्तचाप की शिकायत हो सकती है।

राहु अर्न्तदशा

(10:11:1979--28:11:1980)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए अनुकूल हो सकता है अन्यथा निश्चित रूप से यह समय ठीक नही है। आपको हमेशा सिर दर्द की शिकायत हो सकती है, और कभी-कभी बुखार हो सकता है। आप घातक रसायनों की वजह से चर्म रोगों के शिकार हो सकते हैं। आपको इस बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि आप किसी भी बुरे या संदिग्ध चरित्र वाले व्यक्ति से नही मिले जुले, अन्यथा आप गहरी मुसीबत में फॅस सकते हैं और समाज में आपकी मान-मर्यादा की क्षति हो सकती है। आपको धन के लेन-देन तथा निवेश मे सावधानी बरतने की जरूरत है अन्यथा धन हानि की संभावना है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक याएक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप ग्रंथि में सूजन के शिकार हो सकते है। यदि आपकी कुण्डली में दोनों ग्रह ग्रसित हैं तो जो कम ग्रसित होगा, उससे परिणाम निकाला जाएगा।

गुरू अर्न्तदशा

(28:11:1980--04:11:1981)

यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित है तो यह समय आपके लिए काफी भाग्यशाली होगा। आप कई मामलों में तेजी से उन्नति करेगें और आपकी चल अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आप कोई नयी सम्पत्ति का क्रय कर सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक अथवा मीन है तो आप और भी भाग्यशाली हो सकते हैं। अन्यथा इस दशा का उत्तरार्द्ध इसके पूर्वार्द्ध से अधिक लाभदायक होगा। पूर्वार्द्ध में आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं और कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति आपके लिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। यह और भी परेशानियों से भरा हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में मंगल और वृहस्पति एक दूसरे पर विपरीत दृष्टिपात कर रहे हों। उत्तरार्द्ध में आपको कई सारे सुअवसर प्राप्त होगें और आप प्रभावशाली व्यक्तियों से सहयोग और धन की प्राप्ति करेगें। यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति कुंभ राशि मे स्थित है तो

आपको ऊँचे रक्तचाप की शिकायत हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो संपत्ति के मामले में आपको अपने मकान मालिक या किरायेदार के साथ गहरा विवाद हो सकता है जिसकी वजह से वो पुलिस की मदद भी ले सकता है। आपको पुलिस का ध्यान खींचना चाहिए और किसी वकील से संपर्क करना चाहिए।

शनि अर्न्तदशा

(04:11:1981--13:12:1982)

यदि आपकी कुण्डली में इनमें से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति मे है तो यह समय आपके लिए व्यस्तताओं से भरा होगा और आप बहुत सारे रचनात्मक कार्यों में एक साथ लगे होगें। यदि आपका लग्नमेष है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सम्मिलित समय है, आप निश्चित रूप से कोई प्रतिष्ठित पाएँगें और आपके मान-मर्यादा में बेतहाशा वृद्धि होगी। अन्यथा यह समय दो परस्पर विरोधी अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है, इसलिए आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है। यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नही है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आप बहुत सारे विवादो में फॅस सकते हैं जिसकी वजह से लम्बे समय तक चलने वाली मुकदमे बाजी से आपकी पाला पड़ सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल और शनि विपरीत अथवा परस्पर वर्गीय दृष्टिपात कर रहे हैं तो आपकी परेशानियॉ बढ़ सकती है। कार्य स्थल पर भी आपकी परेशानियों मे इजाफा होगा और आपके शत्रु आपके लिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। आप चिंतित हो सकते हैं। यदि आप किसी नौकरी में हैं तो आपके पद और मान मर्यादा की क्षति हो सकती है। आपका घरेलू जीवन भी शांतिमय और सुखमय नही हो सकता है। यदि आप किसी व्यवसाय में संलग्न हैं तो आपको अचानक बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ सकती है।

बुध अर्न्तदशा

(13:12:1982--10:12:1983)

यह समय कुछ मामलों में आपके लिए भाग्यशाली है। यदि आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में भाग ले रहे हैं या नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं तो निश्चित ही आपको सफलता प्राप्त होगी। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधियों में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी। यदि आप विज्ञान अथवा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हैं तो बड़ी सफलताएँ आपके हाथ लग सकती है। यदि बुध और मंगल एक दूसरे पर परस्पर प्रतिकूल दृष्टि डाल रहे हैं तो आपका रूझान कानून की पढाई में हो सकता है। यदि आप खेल-कूद के क्षेत्र में सक्रिय हैं तो आप उन्नति करेगें। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप रहन सहन के महँगे वस्तुओं का क्रय करेगें। आप बहुत सारे नये लोगों के साथ मधुर सम्बन्ध बनायेगें और समाज में आपकी मान मर्यादा में वृद्धि होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध किसी अशुभ ग्रह से ग्रसित है तो आपमें बहस करने का गुण हो सकता हैं। इसके अलावा आप किसी जहरीले डंक मारने वाले कीड़े के काटने से प्रभावित हो सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा

(10:12:1983--08:05:1984)

यह दशा दो बहुत ही उग्र और आग्नेय ग्रहों की है। जहॉ एक आग को संचालित करता है वहीं दूसरा धुआँ को सूचित करता है। इसलिए, यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए परेशानियॉ उत्पन्न कर सकता है। जैसा कि यह समय आपके लिए ठीक नही है, इसलिए इस दशा के दौरान आपको सावधान रहना चाहिए। आप पारिवारिक

कलह मे फॅस सकते हैं और आपके शुभचिंतक आपके प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपना सकते हैं। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है और खासकर महिलाओं की सहानुभूति खो सकते हैं। आप मानसिक तनाव से ग्रसित रहेगें और अक्सर उग्र भी हो सकते हैं। यदि मंगल आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो आप यातायात के साधनों, निर्माण कार्य, चल अचल सम्पति, रासायनिक पदार्थो एवं बिजली आदि के सामानों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यदि मंगल एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको आग एव बिजली से खतरा हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में केतू एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको गलत दवा या जहरीले वस्तु के सेवन से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

शुक्र अर्न्तदशा

(08:05:1984--08:07:1985)

यह समय आपके लिए सुखदायक होगा। आप इस दशा के दौरान खुशमिजाज बने रहेगें। आपके दोस्तों और परिचितों की संख्या में वृद्धि होगी। आपको विपरीत लिंगी व्यक्तियों का साथ भाएगा और यदि आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं। आप त्योहारों, सामाजिक मिलन, एवं पर्यटन आदि का मजा लेगें। आपकी खुशियों में और इजाफा हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में शुक्र तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित हो - जबकि यह न तो अस्त हो और न ही शनि से ग्रसित हो और आपकी खुशियों में कमी हो सकती है यदि शुक्र अस्त हो या शनि से ग्रसित हो। यदि वृहस्पति किसी भी तरह मंगल या शुक्र को प्रभावित कर रहा है तो हर तरफ से आपकी उन्नति हो सकती है। यदि शुक्र आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको फोड़े-फुन्सी, घाव अथवा चर्म रोग आदि की शिकायत हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल और शुक्र एक साथ स्थित हैं और दोनो ग्रह किसी अशुभ ग्रह की राशि या नक्षत्र में स्थित हैं तो आपकोसावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप किसी नाजायज संबंध में फॅस सकते हैं और यह आपके औरआपके परिवार के मान-मर्यादा को क्षति पहुॅचा सकता है।

सूर्य अर्न्तदशा

(08:07:1985--13:11:1985)

यद्यपि यह दशा दो आग्नेय ग्रहों की है फिर भी यह समय उतना बुरा नही होगा क्योंकि ये दोनो ग्रह एक दूसरे के मित्र हैं। सूर्य सत्ता को सूचित करता है और मंगल अधिकार को। इस दोनों ग्रहों का सम्मिलित प्रभाव कई मामलों में आपको लाभान्वित करेगा। आप प्रभावशाली व्यक्तियों के करीब आयेगें और उनसेप्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त करेगें। आप और अधिक लाभान्वित हो सकते हैं, यदि इन दोनो ग्रहों में से एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है। स्वास्थ्य के मामलें में आप अधिक भाग्यशाली नही होगें। शरीर में अत्यधिक ताप उत्सर्जन के कारण आप ठीक महसूस नही करसकते हैं आप तेज बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी ठीक नही हो सकता है और वो गुस्सैल स्वभाव के हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में मंगल ग्रसित है तो आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है और आप प्रभावशाली व्यक्तियों के कोपभाजन बन सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य ग्रसित है तो आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं या आपको आग से हानि उठानी पड़ सकती है।

चन्द्र अर्न्तदशा

(13:11:1985--14:06:1986)

यह समय आपके लिए काफी लाभदायक और आनंदायक होगा। यह और अधिक लाभदायक हो सकता है यदि मंगल और चन्द्रमा आपकी कुण्डली में एक साथ स्थित हों और दोनो में से कोई भी ग्रह अस्त न हो। आप कुछ महॅगी वस्तुऍ और कोई अचल सम्पत्ति का क्रय करेगें, जिसकी वजह से आपके रहन सहनके स्तर में सुधार होगा। आप काफी धन अपने घर के नवीनीकरण और आंतरिक सजावट पर खर्च करेगें। आपका सामाजिक स्तर और मानसिक शांति में सुधार होगा। इस दशा के अंत में आपके आय के साधन सिकुड़ सकते हैं और संभावना है कि बिना सोच-समझे निवेश के कारण आपको नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक या एक से अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आप कुछ लोगों के साथ सम्पत्ति के मामलों को लेकर विवाद में पड़ सकते हैं। कुछ लोग जिनके पास प्रभावशाली लोगों का समर्थन होगा आपकी संपत्ति का बड़ा हिस्सा आपसे हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा एक या एक से अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आप निम्न सामाजिक और आर्थिक स्तर के लोगों के साथ झगड़ा कर सकते हैं। लेकिन, अगर दोनो ग्रह ग्रसित हैं तोआपको काफी परेशानी हो सकती है और आपकी मान मर्यादा की क्षति हो सकती है।

राहु दशा

(14:06:1986--13:06:2004)

राहु अर्न्तदशा

(14:06:1986--24:02:1989)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि राहु आपकी कुण्डली में वृष अथवा कन्या अथवा कुंभ राशि में नही बैठा है और यह अपने नक्षत्र में भी नही है तो यह समय आपके लिए कठिनाईयों से भरा हो सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्यठीक नही हो सकता है। आपके घर और कार्य स्थल पर भी लगातार कलह होता रहेगा। आप परिस्थितियों में बदलाव की वजह से अपने किसी प्रिय से अलग हो सकते हैं और पुन: विपरीत परिस्थिति की वजह से स्थान परिवर्त्तन करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नही हो सकता है और आप ऐसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं जिसका इलाज मुश्किल होगा। कुछ असामाजिक व्यक्ति आपके उपर अनाचार का झूठा आरोप लगाकर आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं या झूठीयोजना बनाकर आपको धोखा दे सकते हैं। आप भ्रम की स्थिति में हो सकते हैं कि क्या किया जाय और क्या न किया जाय। यदि आपकी कुण्डली में राहु किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में है तो आपकी परेशानियॉ कम हो सकती है। यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तो आप गलत दवा या जहरीले वस्तु के सेवन से परेशानी में पड़ सकते हैं। आपकी कुछ गोपनीय बातें आम लोगों के सामने आ सकतीहै जिसकी वजह से आप शर्मसार हो सकते हैं।

गुरू अर्न्तदशा

(24:02:1989--20:07:1991)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यह आपके लिए बहुत सुखदायक समय है। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आप चिन्ताओं से मुक्त रहेगें। आप अपने सभी कार्यों में सफल होगें और आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों तथा सरकारी कर्मचारियों से प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेगें। आपकी कुछ महत्वाकांक्षाएँ पूर्ण होगीं। आपकी आय में वृद्धि होगी, धन संपत्ति बढ़ेगी और रहन सहन के स्तर में सुधार होगा। आपके दोस्तों और परिचितों का दायरा बढ़ेगा। अगर आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको संतान की प्राप्ति होगी। वैसे भी, कोई विवाह या संतान उत्पन्न होने से आपके परिवार में वृद्धि हो सकतीहै। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन हो सकता है। आपका पारिवारिक जीवन शांतिमय तथा सुखमय होगा।

शनि अर्न्तदशा

(20:07:1991--26:05:1994)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यह दो अशुभ ग्रहों का संयुक्त रूप से समय है। अगर इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावी स्थिति में नही है तो यह समय बहुत सारी कठिनाइयों से भरा हो सकता है। आप कलह और विवादों में फॅस सकते हैं। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होगी और वे आपके लिए परेशानियॉ पैदा करने की कोशिश करेगें। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नही हो सकता है और आप गठिया, पित्त आदि संबंधीरोगों के शिकार हो सकते हैं। आपके खर्चे आपकी आय से अधिक होगी, जिसकी वजह से आप

अपने किये हुये वादों को निभाने में असमर्थ होगें। इन सब कारणों से आप दुविधा में होगें और आपकोमानसिक तनाव हो सकता है। यदि इनमें से कोई भी एक ग्रह आठवें घर में बैठा है तो आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। लेकिन अगर ये दोनो ग्रह एक साथ सातवें घर में बैठे हैं तो आपको पेशे में फायदा हो सकता है। आप किसी दूसरे समुदाय, धर्म या देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी में काम कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

वुध अर्न्तदशा

(26:05:1994--13:12:1996)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

इस दशा के पहले दो-तिहाई भाग के दौरान आप शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में काफी व्यस्त होगें। यदि राहु और बुध दोनो ग्रह परस्पर केन्द्र में बैठे हैं तो आप शिक्षा के क्षेत्र में कोई पदक प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आप चिन्ताओं से मुक्त होगें। आप अपने कार्य के प्रति काफी गंभीर होगें और कई स्रोतों से धन की प्राप्ति करेगें। आपको दूसरे लोगों से भी संपत्ति प्राप्त हो सकती है। यदि आप किसी वित्तीय संस्था से निवेश के लिए कर्ज लेना चाहते हैं तो आप सफल होगें। यदि इनमें से कोईभी ग्रह पॉचवें घर में बैठा है तो आप प्रेम-प्रपंच में पड़ सकते हैं पर बाद में आप निराश हो सकते हैं। इस दशा के अन्त का एक तिहाई भाग आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है और आप दु:खी हो सकते हैं। आप अपने दोस्तों की सहानुभूति खो सकते हैं और अपने घमंडी व्यवहार की वजह से आप अपने मित्रों, परिचितों और सहकर्मियों से दुश्मनी कर लेगें।

केतु अर्न्तदशा

(13:12:1996--31:12:1997)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता

है ।

यदि केतू वृश्चिक राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित नही है तो यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है । आपके जीवनसाथी की वजह से आप अप्रत्याशित समस्याओं का सामना कर सकते हैं और आपके संतानों का स्वास्थ्य भी आपको चिंतित कर सकता है । आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों काकोपभाजन बनना पड़ सकता है अथवा आप किसी अनजाने व्यक्ति के साथ विवाद में पड़ सकते हैं । आपका स्वास्थ्य ठीक नही हो सकता है और आपके शरीर में सूजन और दर्द रह सकता है । आपको घातकरसायनों, कीड़े मकोड़ों, गलत दवाओं, सॉप इत्यादि से बचकर रहने की जरूरत है । यदि राहु एवं केतू नक्षत्र बदलाव में शामिल हैं तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं । आपके जीवनसाथी से आपका विवाद हो सकता है और आपके ससुराल वाले आपके विरोधी हो सकते हैं या आप किसी के साथ मुकदमें बाजी में फॅस सकते हैं । यदि राहु एवं केतू दोनो ग्रह किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में हैं तो आप अपने भाग्य या किसी बाहरी व्यक्ति के हस्तक्षेप से बाल-बाल बच सकते हैं ।

शुक्र अर्न्तदशा

(31:12:1997--31:12:2000)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है । लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं । यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है । यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है ।

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंदायक है । भाग्य आप पर मेहरबान होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों से प्रत्यक्ष सहयोग एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेगें । आप किसी कुलीन पृष्ठभूमि के व्यक्ति संभवत: धनी महिलाएॅ से विशेष सहयोग प्राप्त करेगें । जरूरत पड़ने पर आपको आम लोगों का सहयोग भी प्राप्त होगा। आप नये व्यवसायी सहयोगी बनायेगें जिससें कि आप लाभ की स्थिति में होगें ।आपकी धन-संपत्ति बढ़ेगी और आपके रहन-सहन के स्तर में सुधर होगा। फिर भी आपको सावधानऔर सचेत रहना चाहिए अन्यथा कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि को नुकसान पहॅुचा सकते हैं । आपके जीवनसाथी अथवा कोई विपरीत लिंगी व्यक्ति आपके लिए विशेष खुशी का स्रोत हो सकता है । यदि आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह किसी धनी परिवार के व्यक्ति से हो सकता है ।

सूर्य अर्न्तदशा

(31:12:2000--25:11:2001)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई

शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इन दोनो ग्रहों मे से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नही है तो परस्पर दो विरोधी ग्रहों का यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। यदि दोनो ग्रह आपकी कुण्डली में दसवें, आठवें अथवा पाचवें घर में बैठे हैं तो आपको पेशे में गहरा धक्का लग सकता है और आप अपयश या बदनामी के शिकार हो सकते हैं जिससे आपकी छवि को नुकसान पहुँच सकता है। आप ऊँचे तबके के लोगों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु आपको सावधानी रहना चाहिए, क्योंकि ऐसाभी हो सकता है कि वो अपना काम निकालने की कोशिश कर रहे हों, लेकिन वे ऐसा जाहिर नही करेगें। इसके अलावा पारिवारिक स्तर पर भी आपकी परेशानियों में बढ़ोत्तरी होगी और अपने जीवनसाथी और संतानों के व्यवहार से संदेह उत्पन्न हो सकता है। इस दशा के दौरान आपका तबादला होसकता है अथवा आपको अपना घर भी बदलना पड़ सकता है।

चन्द्र अर्न्तदशा

(25:11:2001--26:05:2003)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इन दोनो ग्रहो में से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नही है तो दो ग्रहों का यह संयुक्त समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। यदि ये दोनो ग्रह एक साथ वृष राशि में बैठे हैं तो आपकी परेशानियों में कमी हो सकती है। लेकिन यदि इनमें से कोई भी ग्रह तुंगस्थ नही हैया अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में नही है तो आप भ्रम की स्थिति मे हो सकते हैं और मानसिक तनाव में हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा और आपके अंगो में दर्द हो सकता है। कोई छोटी मोटी चोट की भी संभावना है। आप अपने किसी नजदीकी संबंधी से बिछुड़ने से दु:खी हो सकते हैं। इसके अलावा, आप अपने जीवनसाथी या साझेदार की गलतियों की वजह से भारी नुकसान उठा सकते हैं। इसके अलावा आपको मजबूरी में अपना निवास स्थान भी बदलना पड़ सकता है या किसी अप्रत्याशित घटना से आपको अपनी मातृभूमि छोडनी पड़ सकती है – जिसपर आपका कोई वश नही

हो सकता है।

मंगल अर्न्तदशा

(26:05:2003--13:06:2004)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही है) तो इस दशा काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) तो इस दशा काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इनमे से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नही है तो यह दो अशुभ ग्रहों का समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आप अचानक ही परेशानियों से घिर जायेंगें औरआप निश्चय नही कर पाएँगें कि क्या करें और क्या न करें। आप कुछ लापरवाह हो सकते हैं, जिससेआपको छोटी मोटी समस्याएँ हो सकती हैं। किसी बेवकूफी की वजह से आप गुण्डे या बदमाश किस्म के लोगों के साथ विवाद में पड़ सकते हैं और दुश्मनों की ईर्ष्या के कारण आपको शारीरिक कष्ट भी झेलना पड़ सकता है। आपको चिंता और मानसिक तनाव हो सकता है और आप चोट लगने अथवा जलने की वजह से कष्ट का सामना कर सकते हैं। यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह वृहस्पति अथवा शुक्र केप्रभाव में है तो स्थितियों में सुधार होगा।

गुरू दशा

(13:06:2004--13:06:2020)

गुरू अर्न्तदशा

(13:06:2004--01:08:2006)

आपकी उन्नति का प्रारंभ होगा और भाग्य आप पर मेहरबान होगा। आप ईश्वरीय संरक्षण में रहेगें। आपके प्रति आम लोगों की सहानुभूति बढ़ेगी और वे काफी मददगार एवं लाभदायक होगें। वृहस्पति द्वाराशासित लोग – जैसे पुजारी, धर्मपरायण, वकील, शिक्षक, और वित्तीय संस्था में लगे लोग – जरूरतपड़ने पर हर संभव मदद करने को तैयार रहेगें। यदि वृहस्पति आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो आपकी स्थिति और भी बेहतर होगी। नौकरी अथवा व्यापार में आपको अपार सफलता मिलेगी, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपकी आय में वृद्धि होगी। आपका पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा होगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आपके संतान आपके लिए खुशियॉ लायेगें। आपकी विश्वसनीयता और मान सम्मान में वृद्धि होगी। लेकिन, यदि आपका लग्न वृष अथवा सिंह है तो वृहस्पति आपकी कुण्डली में अष्टमपति है जिसकी वजह से आपको परेशानियों का सामना करना पड़सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और किसी दुर्घटना की संभावना से भी इंकार नही किया जा सकता है।

शनि अर्न्तदशा

(01:08:2006--12:02:2009)

यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए ठीक होगा। आपकी धन–संपत्ति में वृद्धि होगी। हालॉकि, आप बदन दर्द या गठिया जैसे कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर सकते हैं । आप अपने कार्य स्थल पर भी परेशानियों का सामना कर सकते हैं और आप की आय मे कमी हो सकती है तथा कभी कभी आप अपने किये हुए वादों को पूरा करने में असमर्थ हो सकते हैं । इसके अलावा, आपके जीवनसाथी या आपके व्यवसायिक सहयोगी की वजह से कुछ व्यर्थ के खर्चे या हानि हो सकती है । या फिर, इन दोनो में से कोई एक समस्या के स्रोत हो सकते हैं और आपको चिंतित कर सकते हैं । यदि आपकी कुण्डली में इनमे से कोई एक भी ग्रह ग्रसित नही है तो आपको मिला जुला फल मिलेगा और बुरा समय जल्द ही गुजर जाएगा। यदि आपका लग्न कर्क अथवा सिंह है तो यह छठे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है और आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहने की जरूरत है अन्यथा आपको किसी आत्मीय से विवाद हो सकता है जो कि जीवन पर्यन्त बना रहेगा।

बुध अर्न्तदशा

(12:02:2009--20:05:2011)

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंदायक होगा। सामान्य लोग आपका काफी सम्मान और सहयोग करेगें और आप एक से अधिक स्रोतों से धन की प्राप्ति करेगें । यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधिमें लगे हुये हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी या किसी असाधारण कार्य के लिए पदक मिल सकता है । यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकता है । यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो यह काफी तेजी से आगे बढ़ेगा। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको जल्द ही संतान की प्राप्ति हो सकती है । अनौपचारिक शिक्षा और कला विषयों के प्रति आपकी रूचि मे वृद्धि होगी। आपके पास नये तकनीकी क्षेत्रों का ज्ञान एवं सूचना होगा, जिसका उपयोग आप अपने रोजगार में कर सकते हैं । यदि आपका लग्न चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर राशि) में है तो जैसा कि यह छठे घर के स्वामी और बारहवें घर के स्वामी का सम्मिलत रूप से समय है, इस दशा के दौरान आपको कुछ लोग – जो खुले आम या गुप्त रूप से आपके प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखते हों – आपको परेशान कर सकते हैं । या फिर, आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं जिससे आप अस्पताल मेंभर्ती हो सकते हैं ।

केतु अर्न्तदशा

(20:05:2011--25:04:2012)

यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान अप्रत्याशित कारणों से आप कई मुश्किलों का सामनाकर सकते हैं । समस्याएँ कुछ समय के लिए हो सकती हैं और उनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है । जहॉ तक संभव हो सके, आपको निम्न वर्ग और विदेशी व्यक्तियों के साथ मेल–जोल को कम करना चाहिए अन्यथा आप कई परेशानियों में पड़ सकते हैं और धन हानि हो सकती है। आपकी जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है अथवा आपका अपने व्यवसायिक सहयोगी के साथ विवाद या अलगाव हो सकता है । इसकी भी संभावना है कि आपको अपने पेशे में धक्का लग सकता है और आपको परिस्थितिवश निवास स्थान बदलना पड़ सकता है । आपके रिश्तेदार और आपके मित्र मददगार साबित नही हो सकते हैं, वे आपको दोषी समझ सकते हैं और आपको छोड़ भी सकते हैं ।

शुक्र अर्न्तदशा

(25:04:2012--25:12:2014)

यह दो अति शुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा और निश्चित रूप से लाभदायक फल मिलेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आपका घरेलू जीवन शांतिमयऔर सुखमय होगा। आपके मित्रों और रिश्तेदारों से आपका मधुर बना रहेगा। आपके परिवार मेंकोई शुभ आयोजन हो सकता है और आप सामाजिक मिलन में आकर्षण का केन्द्र होगें। रोजगार के क्षेत्र में आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी और आपकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी। आपके रहन-सहन का स्तर उत्तम होगा। यदि आपका लग्न मेष अथवा वृश्चिक है तो यह दूसरे भाव के स्वामी और बारहवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, जिसकी वजह से आपकी आमदनी बढ़िया होगी, लेकिन खर्चे में भी बढ़ोतरी हो सकती है और एक ही झटके में आपकी सारी जमा पूँजी खत्म हो सकती है। लेकिन, यदि आपका लग्न सिंह अथवा मीन है तो यह तीसरे घर के स्वामी और आठवें घर केस्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, और आप किसी गंभीर बिमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा

(25:12:2014--13:10:2015)

यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति अस्त नही है तो यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा और आप कई मामलों में भाग्यशाली होगें। पुराने कार्यों का फल प्राप्त करने के लिए यह समय अति शुभ है। आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेगें जिससे आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ की प्राप्ति होगी। अपनी विशेष योग्यता और कार्यों के लिए आप सम्मान प्राप्त करेगें और वृहस्पति के शुभ प्रभाव के कारण आम लोग सहायक होगें। समाज में आप सम्मानीय होगें तथा आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको संतान की प्राप्ति होगी - संभवत: पुत्र-रत्न की। फिर भी, अपने स्वास्थ्य से संबंधित आपको कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका कोई अंग किसी रोग से प्रभावित हो सकता है और आपकी शारीरिक शक्ति कम हो सकती है। लेकिन उपचार से आप बहुत जल्द स्वस्थ्य हो जाएँगें। लेकिन,यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति अस्त है तो आपको ऑखो में या कोई दूसरी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। यदि आपका लग्न सिंह है तो जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या कोई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्र अर्न्तदशा

(13:10:2015--12:02:2017)

यह समय आपके लिए आनंदायक होगा। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में है और चंद्रमा शुक्ल पक्ष में है तो यह समय आपके लिए और भी आनंदायक होगा। आपके पिछले किये हुए शुभ कार्यों और प्रयत्नों का फल आपको प्राप्त होगा। रोजगार के क्षेत्र मे आपकी काफी उन्नति होगी, आपकी आय में वृद्धि होगी और आप कोई नई संपत्ति खरीदेगें। आपका घरेलू जीवन सुखमय एवं शांतिमय होगा तथा कुछ महिला संबंधी और आपके संतान आपको खुशियॉ देगें। धार्मिक कार्यों में आपका रूझान बढ़ेगा और निरंतर धार्मिक अनुष्ठान का अवलोकन करेगें। यदि आप ऊँची या व्यवसायिक शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अत्यंत शुभ है। यदि आपका लग्न मिथुन है तो, जैसा कि यह समय दो मारक ग्रहों दूसरे भाव के स्वामी और सातवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, आप किसी स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं या दुर्घटनाओं केशिकार हो सकते हैं।

मंगल अर्न्तदशा

(12:02:2017--19:01:2018)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों मे से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप किसी अप्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सामने कई बाधाएँ आ सकती हैं, चोरी या विश्वासघात की वजह से धन हानि हो सकती है और परिस्थितिवश अपने नजदीकी संबंधी या मित्रों से अलगाव हो सकता है। इसके अलावा, आपको अपने स्वास्थ्य से सम्बन्धित बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप सम्पत्ति से सम्बन्धित कई विवादों में फॅस सकते हैं और अपना अधिकार बनाए रखने के लिए काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अपनी गलती न होने पर भी आप लोगों का सहयोग खो सकते हैं, और परिस्थितिवश या कुण्ठा तथा घृणा से आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक या धनु है तो यह लग्नपति और पॉचवे भाव के स्वामीका सम्मिलित रूप से समय है और यदि आपका लग्न मेष या मीन है तो यह लग्नपति और नौवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय है। दोनो स्थितियों में रोजगार के क्षेत्र में आपको आशातीत सफलता प्राप्त हो सकती है।

राहु अर्न्तदशा

(19:01:2018--13:06:2020)

यदि आपकी कुण्डली मे इन दोनो ग्रहो में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप प्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न कई बाधाओं का सामना कर सकते हैं। ये परेशानियॉ कुछ समय के लिए होगीं और इनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है। आपको असामाजिक और संदेहात्मक पृष्ठभूमि वाले लोगों से दूरी बनाये रहनी चाहिए और बाहरी तथा नए परिचितों पर विश्वास नही करना चाहिए, अन्यथा आप परेशानी में पड़ सकते हैं और आपको धन हानि हो सकती है। जैसा कि यह समय आपके लिए शुभ नही है, आपको समझना चाहिए कि हर चमकीली चीज सोना नही होता। आपको कहीं भी धन निवेश या जुए से बचना चाहिए। कुछ लोगचालाकी या छल से आपका शोषण करने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इनमे सेकोई एक ग्रह भी ग्रसित है तो आपको अपने रिश्तदारों से छोटे मोटे विवाद हो सकते हैं और आपको धन हानि भी हो सकती है।

शनि दशा

(13:06:2020--14:06:2039)

शनि अर्न्तदशा

(13:06:2020--17:06:2023)

यदि आपकी कुण्डली में शनि प्रभावशाली स्थिति मे नही है तो यह समय आपके लिए अत्यंत परेशानियों से भरा होगा। आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं। अपने किसी रिश्तेदार जिनका व्यवहार आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हो सकता है और वे आपकी धन-संपत्ति की हानि कराने की कोशिश कर सकते हैं के साथ आप सम्पत्ति के मामले को लेकर विवाद में फॅस सकते हैं। अपने पेशे के क्षेत्र में भीआपको कई मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसायी हैं तो आपका व्यवसाय मंदा पड़ सकता है। यदि आप रोजगार के क्षेत्र में हैं तो आपको कठोर और गलतियॉ खोजने वाले वरिष्ठ अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है। अप्रत्याशित घटनाओं और परिस्थितियों में विपरीत

बदलाव के कारण आप अपनी तरक्की का सुअवसर खो सकते हैं। इसके अलावा, आपके किसी निकट सम्बन्धि का आपसे अलगाव आपके लिए दु:ख का कारण बन सकता है। यदि आपका लग्न मिथुन अथवा कर्क है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है क्योंकि इस स्थिति में शनि अष्टमपति होगा। लेकिन, यदि आपका लग्न तुला या कुंभ या मकर है या आपकी कुण्डली में शनि तुंगस्थ है अथवा अपने नक्षत्र या अपनी राशि में है तो निश्चित रूप से आपको कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। अगर आपकी कुण्डली में लग्न की राशि तुला और शनि की राशि मकर है, तो इस दशा के दौरान निश्चित रूप से आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

बुध अर्न्तदशा

(17:06:2023--24:02:2026)

यह समय आपके लिए बढ़िया होगा। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी। आपको अपनी रूचि के विषय में गहरी जानकारी होगी और आपकाफी बुद्धिमान तथा विवकशील होगें। आपके किसी रिश्तेदार को कोई विशेष सफलता मिल सकती है जिससे आपको अप्रत्यक्ष रूप से फायदा हो सकता है। अपने पेशे के क्षेत्र में आप काफी उन्नति करेगें।आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा और आपकी आमदनी बढ़ेगी। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो किसी नए क्षेत्र में परिवर्त्तन का मौका मिल सकता है, जहॉ से आप काफी धन संचित कर सकते हैं। यदि आपकी कोई संतान है तो उनकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति आपके लिए गर्व एवं खुशी का कारण बनेगा। यदि आपका लग्न मिथुन है तो आपको कुछ अप्रत्याशित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि यह पहले भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामीका संयुक्त समय है। यदि आपका लग्न सिंह है तो, जैसा कि यह दो मारक ग्रहों – दूसरे घर के स्वामी और सातवें घर के स्वामी का संयुक्त समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं के शिकार होसकते हैं।

केतु अर्न्तदशा

(24:02:2026--05:04:2027)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली मे प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप प्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न कई बाधाओं का सामना कर सकते हैं। ये परेशानियॉ कुछ समय के लिए होगीं और इनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है। आप कलहों का सामना कर सकते हैं और झगड़े आपके परिवार को तोड़ सकते हैं। आपके संतान खासकर आपके पुत्र आपसे विद्रोह कर सकते हैं और उन्हें शांत करना मुश्किल हो सकता है।अचानक आपकी आय कम हो सकती है। आपको कुछ हानि होने की भी संभावना है या पैसे के कमी की वजह से आप अपने किये हुए वादों को निभाने की स्थिति मे नही हो सकते हैं। आपके शरीर के किसी अंग में कोई विषैला पदार्थ हो सकता है, जिसकी वजह से आपको पित्त संबंधी शिकायत हो सकतीहै। आपको अपने दायें पैर या टखने में गठिया या दर्द भरे सूजन की शिकायत हो सकती है।

शुक्र अर्न्तदशा

(05:04:2027--05:06:2030)

यह समय कुछ मामलों में आपके लिए भाग्यशाली होगा। आप कई बाधाओं को पार करेगें और आपके शत्रु पूरी तरह से दबे रहेगें। आप कई लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होगें और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेगें। यदि आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो

यह अचानक और बहुत जल्दी प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में संभावनाओं की तलाश में हैं तोआपको कई सुअवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा। आप कुछ विपरीत लिंगी व्यक्तियों के संपर्क में आएँगें, आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। या फिर, आपके परिवार में शिशु के जन्म अथवा किसी विवाह से संख्या में वृद्धि होगी। आप अपने रिश्तेदारों से महँगे उपहारो प्राप्त कर सकते हैं। आप अपनी खुशी तथा लाभ के लिए कुछ यात्राएँ कर सकते हैं, पिकनिक में भाग ले सकते हैं तथा कोई फिल्म या सांस्कृतिक कार्यक्रम देख सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा

(05:06:2030--17:05:2031)

यदि आपकी कुण्डली मे इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति मे नही है तो आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है। यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा होगा। यद्यपि आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा लेकिन ऐसी भी संभावना है कि आप किसी वरिष्ठ व्यक्ति को अपना विरोधी बना लें, जो आपके घोर शत्रु हो सकते हैं और आपके लिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। आपके पद में बदलाव हो सकता है और आपका असुविधाजनक स्थान परस्थानान्तरण हो सकता है या आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। आपको पारिवारिक कलह का भी सामना करना पड़ सकता है और अपने जीवनसाथी, कोई संबंधी अथवा संतान को लेकर आपके मन में संदेह पैदा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है या आपके जीवनसाथी चिंता के स्रोत हो सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह या कुंभ है तो, यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है अथवा किसी दूसरे समुदाय या धर्म या देश के व्यक्ति के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बना सकते हैं। लेकिन, यदि आपका लग्न मकर है तो, जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आपको कुछ अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पड़सकता है।

चन्द्र अर्न्तदशा

(17:05:2031--16:12:2032)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है। यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आपके स्वास्थ्य की हालत खराब हो सकती है तथा गिरने या टक्कर लगने से आपको शारीरिक चोट भी लग सकती है। आपके अंगों में दर्द हो सकता है और आप उदास हो सकते हैं। वाहन चलाते समय खासकर दुपहिया वाहन तथा तेज चलने वाली मशीन के नजदीक आपको काफी सावधानी बरतनी चाहिए, अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आपको पारिवारिक कलह का भी सामना करना पड़ सकता है, जिससे आप दु:खी हो सकते हैं और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। परिस्थिति मे बदलाव की वजह से आपको अपना निवास स्थान त्यागना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी अथवा आपका व्यवसायिक सहयोगी आपको धन की हानि पहुँचा सकता है। यदि आपका लग्न कर्क या मकर है, और आप अविवाहित वयस्क हैं तो आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप किसी दूसरे समुदाय या धर्म या देश के व्यक्ति के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बना सकते हैं।

मंगल अर्न्तदशा

(16:12:2032--25:01:2034)

यह दो परस्पर विरोधी एवं अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो यह समय परेशानियों से भरा हो सकता है। आप कई विवादों में फॅस सकते हैं और आपके शत्रुओं की संख्या एवं शक्ति मे वृद्धि हो सकती है और जहॉ तक संभव हो सकता है वे आपके लिए परेशानियॉ पैदा करने की कोशिश करेगें। आपके अपने या पारिवारिक सदस्यों के कार्य से आपको अपमानित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आप गठिया आदि से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह ग्रसित हैतो चोरी या जालसाजी से आपको हानि हो सकती है। जैसा कि आप अपने किये हुए वादो को निभाने की स्थिति में नही होगें जिसकी वजह से आपका कोई प्रिय मित्र आपका शत्रु बन सकता है। परिस्थितियोंमें बदलाव की वजह से आपको अपने निवास स्थान तथा अपने रिश्तेदारों का त्याग भी करनापड़ सकता है और बिना किसी सफलता के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ सकता है।

राहु अर्न्तदशा

(25:01:2034--01:12:2036)

यह समय दो बहुत ही अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में सेकोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो परिस्थितियॉ विपरीत होगीं और परेशानियों से भरी होगी तथा उनका प्रभाव अस्थिर होगा। आपको काफी सावधानी बरतनी चाहिए और तय कर लेना चाहिए कि आपकी किसी बात से या आपके वादों से कोई विराधी तो नही बन गया है। इन दोनों ग्रहों के संयुक्तप्रभाव से आपके शत्रु आपके लिए अधिक परेशानियॉ पैदा करेगें। यहॉ तक कि अपरिचित और विदेशी आपके साथ शत्रुतापूर्ण रवैया अपना लेगें। पैसों के लेन-देन में आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए और जुए तथा निवेश से दूर रहना चाहिए। धन हानि तथा बकाए राशि के भुगतान संबंधितगहरे कलह की संभावना बहुत अधिक है। आपको शारीरिक कष्ट या चोट भी हो सकती है। आपको अवांछनीय और असामाजिक व्यक्तियों से दूर रहना चाहिए नही अन्यथा आप किसी मुसीबत में फॅस सकते हैं।

गुरू अर्न्तदशा

(01:12:2036--14:06:2039)

यदि इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो सामान्य रूप से यह समय आपके लिए लाभदायक है। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से आप अपना कार्य सिद्धकरेगें। आपकी धन-संपत्ति में वृद्धि होगी और रहन-सहन के स्तर मे सुधार होगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रूप से ठीक रहेगा और अपने कार्य स्थल पर सभी बाधाओं को पार करने में सक्षम होगें तथा आपकी आमदनी में भी वृद्धि हो सकती है। आप अपने किये हुए वादों को निभाने की स्थिति में होगें और आपकी विश्वसनीयता तथा मान सम्मान में वृद्धि होगी । आपके जीवनसाथी और व्यवसायिक सहयोगी भी सहयोग करेगें, जिसकी वजह से आप बहुत खुशी महसूस करेगें। यदि आपका लग्न कर्क अथवा सिंह है तो जैसा कि यह छठे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, आपको अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है, अन्यथा अपने किसी प्रिय से आपको कठोर सबक सिखने को मिल सकता है, जिसे आप जीवनपर्यन्त नही भूल पाएॅगें।

बुध दशा

(14:06:2039--13:06:2056)

बुध अर्न्तदशा

(14:06:2039--10:11:2041)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में बुध प्रभावशाली स्थिति में है और ग्रसित नही है तो यह समय आपके लिए अत्यंत उन्नति वाला होगा। शैक्षणिक गतिविधियॉ और उपयोगी ज्ञान और सूचना आपको काफी आकर्षित करेगी। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं या कला के क्षेत्र में हैं तो आपके कार्य वांछनीय होगें। आपको कोई प्रतिष्ठा मिल सकती है और आपके बहुत सारे अनुयायी हो सकते हैं। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो यह काफी तेजी से आगे बढ़ेगा, आपकी आमदनी बढ़ेगी,और आप किसी नए क्षेत्र में भी किस्मत आजमा सकते हैं, जहॉ से आप काफी धन जमा करेगें। आपके मित्रों और परिचितों की संख्या में वृद्धि होगी। अपने शुभचिंतकों से जरूरी सूचनाऍ प्राप्त कर आप लाभ पाऍगें। आप आनंद और लाभ के लिए सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं और वहॉ किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मधुर सम्बंध बनायेगें। यदि आपका लग्न मिथुन है तो यह समय आपके जीवन का सबसे आनंदायक समय हो सकता है। इसके अलावा, यदि आपका लग्न कन्या अथवा धनु है तो भी यह समय आपके लिए सुखमय होगा। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रसित है तो आपको कई चिंताऍ हो सकती है और आपकी माता की स्वास्थ्य की हालत आपको चिंतित कर सकती है।

केतु अर्न्तदशा

(10:11:2041--07:11:2042)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या

इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में केतू न तो वृश्चिक राशि में और न ही अपने नक्षत्र में स्थित है तो यह समय आपके लिए काफी लाभदायक सिद्ध नही होगा। आपको आंतरिक रूप से कुछ कमजोरी महसूस हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में केतू ग्रसित है तो आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, जिसका इलाज मुश्किल हो सकता है। आपको गलत इलाज अथवा गलत दवा खाने की वजह से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको खाने पीने के मामले में अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकताहै, क्योंकि संभावना है कि भूल से आप विषैला पदार्थ ले सकते हैं। आपको निम्न वर्ग के व्यक्तियों के साथ दूरी बनाये रखनी चाहिए अन्यथा वो आपकी छवि को नुकसान पहुँचा सकते हैं। आपको अपने मकान मालिक या किरायेदार या अपने पड़ोसियों के साथ कठिनाई हो सकती है और आप मानसिक तनाव में हो सकते हैं।आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है या किसी को जबरदस्ती छोडने पर मजबूर कर सकते हैं, जिसकी वजह से आपकी निंदा या आलोचना हो सकती है और आपकी लोकप्रियता कम हो सकती है।

शुक्र अर्न्तदशा

(07:11:2042--07:09:2045)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंदायक है। यदि आप अपने परिवार से दूर रह रहे हैं तो आप अपने परिवार के साथ रहने आयेंगे जिसकी वजह से आपके पारिवारिक सदस्य और मित्र सुख का अनुभव करेंगे। आपके मित्रों और परिचितों की संख्या मे वृद्धि होगी और समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगा। आप किसी प्रभावशाली व्यक्ति के साथ मधुर सम्बंध बनायेगें और उनसे आपको लाभ की प्राप्ति होगी। यदि आप वयस्क हैं और अविवाहित हैं आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह हो सकता है। यदि आप शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तो निश्चित रूप से आपको कोई पदक मिल सकता है। और यदि आप कला के क्षेत्र में सक्रिय हैं तो आपको सराहना मिल सकती है। यदि आपनौकरी में हैं तो आपको कोई प्रतिष्ठित पद मिल सकता है। और यदि आप व्यवसाय में हैं तो आपका काम काफी फैल सकता है और यदि आप कोई नया कार्यालय या शाखा खोलना चाहते हैं तो

यह समय उत्तम है । आप खुशी और लाभ के लिए कई यात्राएँ कर सकते हैं और पिकनिक में हिस्सा ले सकते हैं ।

सूर्य अर्न्तदशा

(07:09:2045--14:07:2046)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है – जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है –तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है ।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो इस दशाके दौरान आप कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपका लग्न कुंभ है तो प्रभाव और अधिक हो सकता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में सातवें भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय होगा। यदि आपकी कुडण्ली में बुध अथवा सूर्य ग्रसित है तो आप मुकदमेबाजी में फॅस सकते हैं या आपके खिलाफ विभागीय जॉच होसकती है। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों या सरकारी दंडात्मक अधिकारी को विरोधी नही बनाना चाहिए। आपके दायरे के कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपके घोर दुश्मन बन सकते हैं और आपको मुश्किल स्थिति में डाल सकते हैं। आपको बातूनी तथा पीठ पीछे बुराई करने वाले व्यक्ति से बचकर रहना चाहिए। आपको कुछ बाधाओं का भी सामना करना पड़ सकता है, जिससे आप चिंतित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य और बुध ग्रसित है तो आपको कोई चोट लग सकती है या आग लगने से कुछ हानि हो सकती है।

चन्द्र अर्न्तदशा

(14:07:2046--13:12:2047)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें – हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या

इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो इस दशाके दौरान आप कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपका किसी स्त्री के साथ विवाद हो सकताहै जिसकी वजह से वो आपकी छवि को नुकसान पहुँचाने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर सकती है। इस मामले में आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में बुध अथवाचन्द्रमा किसी नीच ग्रह के साथ अथवा उसके प्रभाव में है तो आपका स्वास्थ्य ठीक नही हो सकता है और आप ग्रंथि में सूजन या अंगों में चोट से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। यदि आपका लग्न धनु है तो आपकी समस्याओं मे और भी वृद्धिहोने की संभावना है, क्योंकि ऐसी स्थिति में यह सातवें भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय होगा। यदि आपका लग्न मकर है तो आपके कुछ रिश्तेदार आपके विरोधी हो सकते हैं लेकिन आप कुछ दूसरे मामलों में भाग्यशाली हो सकते हैं। आप किसी निजी संस्था में नई नौकरी पा सकते हैं या अपना नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। आपके दिमाग में कुछ हिचकिचाहट हो सकती है लेकिन आप सही समय पर सही फैसले लेने में सक्षम होगें।

मंगल अर्न्तदशा

(13:12:2047--10:12:2048)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएॅ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है -तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए शुभ नही होगा। इस दशा के दौरान आप कई समस्याओं, झगड़ों, तथा विवादों का सामना कर सकते हैं। समस्याओं के बढ़ते प्रभाव के कारण आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है और आप कई प्रकार के रोगों जैसे गंभीर दर्द, खून संबंधित रोग, पीलिया आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति एवं खाने-पीने के मामलों में अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपको अपनी बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए और तय कर लेना चाहिए कि आपकी बातों से किसी

की भावनाओं खासकर प्रभावी व्यक्तियों की को कोई ठेस तो नही पहुँची है। अन्यथा आप मुसीबत में फॅस सकते हैं। यदि आपका लग्न मेष है तो आपको अपने उपर नियंत्रण रखना चाहिए। आपको वाहन चलाते समय सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा

(10:12:2048--29:06:2051)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें - हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो यह समय आपके लिए शुभ नही होगा। इस दशा के दौरान आप कई परेशानियों एवं विवादों का सामना कर सकते हैं। आपको छोटे-मोटे रोग होते रहेगें, आपके बुरे सपने होगें, आपकी अभिलाषा खत्म होगी, और आपकी सोच धुँधली या भ्रमित हो सकती है। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से आपका विवाद हो सकता है जिसकी वजह से आपको काफी क्षति हो सकती है और जहॉ तक उनसे संभव होगा, वे आपके जीवन को दुखद बनाने की कोशिश करेगें। तात्कालिक रूप से आपको अपने पद से हटाया जा सकता है और किसी असुविधाजनक स्थान पर अपना निवास स्थान बदलने के लिए बाध्य किया जा सकता है। आपके कार्यस्थल पर भी परिस्थितियॉ बुरी हो सकती है और कुछ निम्न तबके के लोगों को जानबूझकर आपको नुकसान पहुँचाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। आप काफी हताश होगें और आपको घृणा आएगी। यदि राहु, वृहस्पति या शुक्र के साथ स्थित है या इनकी दृष्टि पड़ रही है या बुध से केन्द्र स्थितिमें है तो आप इन परेशानियों से बच सकते हैं।

गुरू अर्न्तदशा

(29:06:2051--04:10:2053)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें हालॉकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में

बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यह आपके लिए बहुत ही शुभ और आनंदायक समय होगा। आपको बहुत ही बुद्धिमान लोगों का साथ मिलेगा, मानसिक शांति मिलेगी, और किसी महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न होगें। यदि आप किसी शैक्षणिक गतिविधि में संलग्न हैं तो अपने प्रयत्नों से आपको आशातीत सफलता मिलेगी और आप काफी मशहूर हो जाएँगें। आपकी किसी सम्मानित पद पर होगें, आपकी आमदनी बढ़िया होगी, रहन सहन का स्तर सुधरेगा, और आम लोग आपका आदर करेगें। समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी, आपके सुझावों का महत्त्व होगा और गंभीर मामलों में लोग आपसे सलाह लेगें। लेकिन आपको उतावला नही होना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि ईमानदारी और शालीनता के मार्ग से भटके नहीं। अन्यथा इस दशा के समाप्ति पर अपने आप को बाहर पाएँगें और अपने विशिष्ट कार्यों के बावजूद आप गुमनामी में खो जाएँगें।

शनि अर्न्तदशा

(04:10:2053--13:06:2056)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होगें। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होगें - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेगें। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नही है तो यह समय आपके लिए शुभ नही होगा। इस दशा के दौरान आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपकी अपनी गलतियों के कारण होगा। यदि आप दृढ़ हैं तो सही रास्ते पर चलें, क्योंकि ईश्वर सदा सही रास्ते पर चलने वालों का साथ देता है और धूप को भी छाँव में बदल देता है। यदि आपकी कुण्डली में ये दोनो ग्रह ग्रसित हैं तो आप सफलता से दूर हो सकते हैं और आपको खुशी नही मिल सकती है। आपके शत्रु आपके लिए अनेक परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और भाग्य आपका साथ नही दे सकता है। आपके कुछ निकट संबंधी अपमानित हो सकते हैं और परिणाम से आप बुरी

तरह प्रभावित हो सकते हैं। आपका दिमाग विषाद और उदासी से भरा हो सकता है, जिसकी वजह से आप दुखी महसूस करेगें। यदि आपका लग्न मिथुन है तो, जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं से गुजर सकते हैं या आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह है तो, जैसा कि यह दो मारक ग्रहो (दूसरे भाव के स्वामीऔर सातवें भाव के स्वामी) का सम्मिलित रूप से समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से गुजर सकते हैं।

केतु दशा

(13:06:2056--14:06:2063)

केतु अर्न्तदशा

(13:06:2056--10:11:2056)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि केतू न तो वृश्चिक राशि में बैठा है और न ही अपने नक्षत्र में बैठा है तो यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको थोड़े समय के लिए घरपर बैठना भी पड़ सकता है। पैसो और ससांधनो की कमी की वजह से आप काफी प्रभावित हो सकतेहैं और अपने वादों को निभाने के स्थिति में नही हो सकते हैं। आपको इस स्थिति से बचने के लिए व्यक्तिगत सुखो का त्याग करना पड़ सकता है। आपके पारिवारिक सदस्य भी आपसे बढ़िया व्यवहार नही करेगें और उनकी अपेक्षाये भी आप से बढ़ जायेगी। पारिवारिक कलह की वजह से आप बहुत अशांत हो सकते हैं और स्थिति दिन पर दिन बुरी हो सकती है तथा इससे बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता न मिलने पर आप अपने निकट संबंधियों को भी छोड़ सकते हैं जिसमे से कुछ बहुत घमंडीऔर समझौता नही करने वाले हो सकते हैं। आप पर कोई प्रतिबंध लग सकता है या आपके साथ अपरिचितों जैसा व्यवहार हो सकता है, और यदि ऐसा हुआ तो आपको कैद भी हो सकती है। आपकी मानसिक दशा सोचनीय होगी और आप अपने को काफी असहाय और दुखी महसूस करेंगे।

शुक्र अर्न्तदशा

(10:11:2056--10:01:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी

अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा–काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय आपके लिए काफी लाभदायक और सुखदायक होगा। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं, तो आपको यह सुख प्राप्त होगा। आप अपने सभी कार्यों में सफल होगें और आपकी आमदनी तथा धन में वृद्धि होगी। आप अपने जीवन का पूरी तरह से आनंद उठायेंगे। परन्तु आपको अपने खर्चों पर अंकुश रखना होगा और पैसे का लेन देन करते समय बहुत सावधान और सचेत रहने की जरूरत है तथा किसी भी चीज के आदी न बनें। आपको जुए तथा सट्टे में निवेश से बचना चाहिए क्योंकि ये आपके धन का बड़ा हिस्सा बर्बाद कर सकता है और आपको फिर से पहले वाली स्थिति में ला देगा। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी और आप काफी पसंद किए जाएँगें। आपके निवास स्थान परबहुत सारे मित्र और सम्बधी आयेंगे, और आप सामाजिक मिलन में आकर्षण का केन्द्र होगें। इस दशाकी समाप्ति के समय आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी अन्यथा आपको छोटी–मोटी बीमारी हो सकती है। ऐसा आपके जीवनसाथी के साथ भी हो सकता है।

सूर्य अर्न्तदशा

(10:01:2058--17:05:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा–काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि आपकी जन्मकुण्डली में केतू और सूर्य में से कम से कम एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नही है तोयह समय आपके लिए परेशानियों वाला होगा। आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं या अपने जीवनसाथी को लेकर चिन्तित हो सकते हैं। पारिवारिक स्थिति आपको चिंतित कर सकती है और कार्य स्थल पर परिस्थितियॉ आपके विपरित होगीं। कम सामाजिक और आर्थिक तबके वाले औसत वर्ग के कुछ लोग आपके लिए समस्याएँ पैदा कर सकते हैं। आपको परिस्थितियों मे सुधार के लिए अपना काफीसमय और प्रयत्न लगाना पड़ सकता है। फिर भी आप कुछ ऊँचे पदस्थ व्यक्तियों, अधिकारियों, और सरकारी स्रोतों से प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेगें। आपको किसी विशेष कार्य के

सिलसिले में किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा का मौका मिल सकता है। और सफलतापूर्वक कार्य खत्म होने के बाद आप खुशी-खुशी घर वापस लौटेगें। यदि केतू वृश्चिक राशि में बैठा है अथवा वह अपने नक्षत्र मे है तो यह समय आपके लिए निश्चय ही लाभदायक सिद्ध होगा। आपको कई स्रोतों से धनकी प्राप्ति होगी, आपका धन और स्वामित्व बढ़ेगा और आप अपने रहन सहन के स्तर में सुधार के लिए कुछ नई वस्तुएँ खरीद सकते हैं।

चन्द्र अर्न्तदशा

(17:05:2058--16:12:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

इस दशा के दौरान आप विपरीत लिंगी व्यक्तियों की वजह से काफी दुखी रहेगें और अपने संतानों की वजह से या उनकी गतिविधियों के कारण कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि वे उपद्रवी किस्म के हो सकते हैं। अन्य मामलों में आपको चिंता करने की जरूरत नही है। आपको कई स्रोतों से लाभ मिलेगा, आपकी आमदनी और धन में वृद्धि होगी तथा सार्वजनिक सौदे से बढ़िया लाभ मिल सकता है। अगर आप कोई नया व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए उपयुक्त है, कई अप्रत्याशित सुअवसरों का आप लाभ उठायेगें और परिस्थितियॉ आपके पक्ष में होगी। यदि आपका पेशा चिकित्सा, घरेलू साजो समान की वस्तुए इत्यादि से जुड़ा हुआ है तो निश्चय ही यह समय आपके लिए कही अधिक भाग्यशाली होगा। यदि केतू वृश्चिक राशि में स्थित है या आपने नक्षत्र में स्थित है, तो यह समय कहीं अधिक फलदायक होगा। आप अपने घर पर या इसके आंतरिक सजावट पर काफी धन व्यय करेगें।

मंगल अर्न्तदशा

(16:12:2058--14:05:2059)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ

घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय दो आग्नेय अशुभ ग्रहों के संयुक्त प्रभाव में है, इसलिए यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नही हो सकता है। आपको बहुत सारी परेशानियों, बाधाओं, और लड़ाई झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ लोग जिनका व्यवहार आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हो – खास कर विपरित लिंगी व्यक्ति आपके लिए परेशानियॉ पैदा कर सकते हैं। आप बुखार या शरीर में ऊँचा ताप उत्पन्न होने जैसेबीमारी के शिकार हो सकते हैं। आप किसी छोटी मोटी दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं अथवा आपके कार्य स्थल अथवा घर पर आग लगने जैसी घटनायें आपको नुकसान पहुँचा सकती है। इसलिए आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहने की जरूरत है और आपको इससे बचने के लिए सारे उपाय कर लेने चाहिए। फिर भी, यदि केतू और मंगल, दोनो ही ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में हैं तो यह समय आपके लिए काफी आनंदायक हो सकता है। आप अपने लिए एक नया घर बनवा सकते हैं या कोई अचल सम्पति खरीद सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल और केतू पीड़ित है तो आपके शरीर के निचले हिस्से में किसी समस्या की वजह से आपको सर्जरी भी करवानी भीपड़ सकती है।

राहु अर्न्तदशा

(14:05:2059--01:06:2060)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा–काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा–काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि केतू और राहु, दोनो ग्रह न तो अपने तुंगस्थ राशि में स्थित हैं और न ही अपने नक्षत्र मे स्थित हैं, तो यह समय आपके लिए निश्चय ही समस्यापूर्ण हो सकता है। आपको काफी सावधान और सचेत रहनाचाहिए, क्योंकि संभावना है कि आपकी तबीयत अचानक ही खराब हो सकती है। आप किसी रोग सेग्रसित हो सकते हैं और इसका निदान/इलाज भी काफी मुश्किल होगा तथा इसकी तीव्रता अस्थिर हो सकती है। आपको गलत दवा खाने अथवा भूल से जहरीले पदार्थ के सेवन से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके आस–पास की परिस्थितियॉ आपके वश मे नही हो सकती है और आपको परिस्थितियों अथवा वातावरण में बदलाव की वजह से बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ सकता है। यदि राहु और केतू एक दूसरे के नक्षत्र में बैठे हुए हैं तो आपको और भी अधिक सतर्क रहना चाहिए क्योंकि संभावना है कि आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं अथवा आपका किसी के साथ गंभीर विवाद हो सकता है, जिसकी वजह से आप मुकदमे बाजी मे भी फॅस सकते हैं। यदि आपकी

जन्मकुण्डली में राहु और केतू पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि है तो आपके मान सम्मान की क्षति हो सकती है। आपको किसी को रिश्वत लेने या देने से बचना चाहिए अन्यथा आप बहुत जल्द फॅस सकते है।

गुरू अर्न्तदशा

(01:06:2060--08:05:2061)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय निश्चय ही आपके लिए काफी सुखदायक होगा। आप वरिष्ठ अधिकारियों और प्रभावशाली व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध बनायेगें और उनसे आप प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेगें। यदि आप नौकरी मे हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है अथवा आप कोई नया प्रभावशाली पद प्राप्त करेगें। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो आपको काफी फायदा होगा और परिवर्त्तन के लिए आप कोईनया क्षेत्र चुन सकते हैं या आप कोई नया कार्यालय अथवा कम्पनी की कोई नई शाखा बहुत ही फायदेमन्द जगह पर खोलेंगे। आपको लेन-देन तथा कई स्रोतों से काफी धन प्राप्त होगा और आपकी चल-अचल सम्पति मे वृद्धि होगी। कोई विपरित लिंगी व्यक्ति आपके लिए विशेष खुशी का स्रोत हो सकता है और यदि आप अभी तक अविवाहित हैं तो आप किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध भी स्थापित कर सकते हैं और बहुत जल्द आपका विवाह भी हो सकता है। अगर आप विवाहित हैं और संतान की कामनाकर रहे हैं तो आपको एक भाग्यशाली संतान की प्राप्ति होगी जो कि आपके पूरे परिवार के लिए खुशी और गर्व का कारण बनेगा।

शनि अर्न्तदशा

(08:05:2061--17:06:2062)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने

और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है ।

यह समय दो परस्पर विरोधी ग्रहों के संयुक्त प्रभाव में है । यदि दोनो ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह आपकीजन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है । रोजगार अथवा अन्य स्रोतों से आपकी आमदनी तात्कालिक रूप से लगातार घट सकती है और आपको लेन-देन में काफी घाटा उठाना पड़ सकता है या धन की कमी की वजह से आपको अन्य परेशानियॉ उठानी पड़ सकती है । आप समय पर अपने किये वादों को पूरा करने की स्थिति में नही हो सकते हैं, जिसके लिए आप काफी चिंतित हो सकते हैं । आपके मित्र और सम्बन्धी आपके लिए मददगार साबित नही हो सकते हैं, बल्कि वे आपसे दूरी बनाने की कोशिश करेगें । आपको निचले तबके के लोगों द्वारा उत्तपन्न किए हुए कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है । आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा पर ऑच आ सकती है । इन सारी स्थितियों के कारण आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है । इसके अलावा आपके जीवनसाथी और आपके संतान का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिंता का विषय बन सकता है । इस अवधि के दौरान आपको धुयॉ, विकिरण और सूर्य की किरणों से खास तौर पर बचना चाहिए।

बुध अर्न्तदशा

(17:06:2062--14:06:2063)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं । लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नही) में स्थित है, तो इसके दशा काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है । यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह केसाथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है । केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है ।

यदि आपकी जन्मकुण्डली में बुध ठीक से स्थित नही है तो आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव आ सकते हैं । यदि आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नही है तो आपको किसी तरह के तात्कालिक धक्के का सामना करना पड़ सकता है अथवा परिस्थितिवश आपको अपना निवास स्थान भी बदलना पड सकता है । आपकी गलती न होते हुये भी अपने मित्रों और सम्बन्धियों से आपका सम्बन्ध बिगड़ सकता है और उनसे आपको कोई भी सहयोग प्राप्त नही हो सकता है । आप काफी निराश हो सकते हैं और उनसे अपना संबंध खत्म कर सकते हैं । आपको दूरस्थ स्थानों की कुछ निरर्थक यात्राऍ करनी पड़ सकती है और आपकी मेहनत के बावजूद भी उसका अपेक्षित फल प्राप्त नही होगा। आपके जीवनसाथी गलतियॉ खोजने और काफी बातूनी किस्म के हो सकते हैं जिसका वजह से आप काफी दुखीमहसूस करेगें । आपके संतानों का स्वास्थ्य और खुशी भी आपके लिए चिन्ता का विषय होगा। यदि केतू और बुध में से कम से कम एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नही है तो आप अपने एक नए मित्र – जिनका संबंध किसी दूसरे समुदाय या धर्म से हो सकता है – से मदद प्राप्त कर सकते

हैं और बहुत जल्द आपकी स्थिति सामान्य हो जाएगी।

शुक्र दशा

(14:06:2063--14:06:2083)

शुक्र अर्न्तदशा

(14:06:2063--13:10:2066)

यह समय आपके लिए बहुत सुखमय होगा। अगर शुक्र आपकी जन्मकुण्डली में ग्रसित नही है तो आपकेयश और सम्मान में वृद्धि होगी और आप अपने जीवन का भरपूर आनंद उठायेंगे। आप वरिष्ठ अधिकारियों और कुलीन पृष्ठभूमि के लोगों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेगें, खासकर प्रभावशाली स्त्रियों से। आपकी पदोन्नति होगी और आर्थिक रूप से आपकी स्थिति मजबूत होगी। अगर आप पहले से ही नौकरी कर रहे हैं तो आपके जिम्मेदारियों में वृद्धि होगी और आपकी आमदनी भी बढ़ेगी। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो इसमें काफी उन्नति होगी, आप इसका विस्तार कर सकते हैं और आप किसी नये व्यवसाय में भी अपना हाथ आजमा सकते हैं। आप अपने और परिवार के सदस्यों के लिए फैशनेबल कपड़े, रत्न, आभुषण, इत्र और घरेलू सजावट पर काफी धन व्यय कर सकते हैं। आपका पारिवारिक जीवन काफी खुशहाल और सुखमय होगा। आप सैर या पर्यटन के उद्देश्य से कई लम्बी औरछोटी दोनो तरह की यात्राऍ कर सकते हैं। आप विपरित लिंगी व्यक्तियों से थोड़ी परेशानी में पड़ सकते हैं – जिनमें काफी संवेदनशील और अधिक मॉग करने का स्वभाव विकसित हो सकता है।

सूर्य अर्न्तदशा

(13:10:2066--13:10:2067)

यदि इन दोनो ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह केन्द्र में है और दूसरा ग्रह त्रिकोण में है तो आपके जीवन में इस दशा के दौरान काफी महत्वपूर्ण बदलाव आयेगें और आपकी स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आपका लग्न सिंह है तो जैसा कि यह समय लग्नपति और दशमपति का सयुक्त रूप से है, इस समय में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। लेकिन, यदि इनमे से कोई एक भी ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नही हैतो आपको कष्टकर समय से गुजरना पड़ सकता है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों, मालिक अथवा सरकारी कर्मचारियों के साथ विवाद हो सकता है और आपको उनका कोपभाजन बनना पड़ सकता है। इसलिए आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए। आपको कुछ विशिष्ट किस्म की घरेलू समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है या अपने निजी सम्बन्धियों से सम्पति के मामले में विवाद हो सकता है जिससे आप काफी चिन्तित हो सकते हैं। आप निरंतर तनाव में हो सकते हैं जो आपके स्वास्थ्य पर असरडाल सकती है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अस्त है तो आप किसी ऐसे रोग से ग्रसित हो सकते हैं जो आपके जननेन्द्रिय को प्रभावित करती हो या फिर आपकी ऑखें भी प्रभावित हो सकती है।

चन्द्र अर्न्तदशा

(13:10:2067--14:06:2069)

यह समय आपके लिए काफी शुभ और आनंदायक होगा। यह और भी शुभ हो सकता है यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में चौथे घर में स्थित हो अथवा ये दोनो ग्रह एक साथ हों अथवा दोनो एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों। आपकी कुछ पुरानी अभिलाषाऍ पूरी हो सकती हैं और कुछ नए उद्देश्य कार्यान्वित होगें। आपकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी और अपनी रहन सहन के स्तर में सुधार के लिए कुछ आरामदेह वस्तुऍ खरीदेगें। आप अपने घर की आन्तरिक सजावट के लिए महॅगे समान खरीद सकते हैं। आप खुशी और लाभ के लिए उत्तर या पश्चिम या उत्तर–पश्चिम दिशा में कुछ यात्राऍ कर

सकते हैं। आपके संतानों का स्वास्थ्य ठीक होगा और वो अपने कार्यो से आपको खुशियॉ प्रदान करेगें। फिर भी, आपके जीवनसाथी कोई छोटी-मोटी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के शिकार हो सकते हैं जो आपके लिए कुछ चिन्तायें उत्पन्न कर सकता है। लेकिन यह कुछ दिनों के लिए ही है। आपका पारिवारिकजीवन खुशहाल होगा।

मंगल अर्न्तदशा

(14:06:2069--14:08:2070)

यदि इन दोनों ग्रहों मे से कोई भी एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नही है तो यह समय आपके लिए सुखदायक होगा। आपकी आमदनी, प्राप्ति और स्वामित्व मे वृद्धि होगी। परन्तु आप थोड़े आलसी हो सकते हैं, और अपना कार्य ढंग से नही करेगें। आप बहुत अधिक भौतिकवादी होगें और मौज-मजे का स्वभाव विकसित होगा। आप किसी सुन्दर दिखने वाले विपरित लिंगी व्यक्ति से मधुर सम्बन्ध बना सकते हैं, यह और भी अधिक हो सकता है यदि ये दोनों ग्रह एक साथ स्थित हों या परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों। आप छोटी मोटी ऑख या त्वचा संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं। यदि ये दोनो ग्रह परस्पर और छठे और आठवें स्थान पर हैं तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप झूठ और बदनामी के शिकार हो सकते हैं। यदि शुक्र आपकी जन्मकुण्डली में छठे भाव में स्थित है और यह न तो तुंगस्थ है या न ही अपनी राशि में बैठा है या न ही अपने नक्षत्र में है तो आपको कलह या कोई दूसरी जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन यदि यही स्थिति मंगलकी है तो आप किसी प्रतियोगिता में विजेता बन सकते हैं या किसी प्रतियोगी परिक्षा में सफल हो सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा

(14:08:2070--14:08:2073)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नही है तो यह समय आपके लिए बहुत सारी कठिनाइयों से भरा हो सकता है। परिस्थितियों में भारी बदलाव होने के कारण आपके आस-पास आकस्मिक बदलाव हो सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है और पैसे की कमी के कारण आप अपने किये हुये वादों को निभाने के स्थिति में नही हो सकते हैं। आप बिना सोचे समझे किये हुए निवेश की वजह से हानि उठा सकते हैं अथवा आपके मित्र या आपके संबंधी आपसे कर्ज लिए हुए धन वापस नही लौटायेगें। आपके जीवनसाथी और कुछ पारिवारिक सदस्य आपसे या आपस में नित्यक्रम की तरह झगड़ा कर सकते हैं और इन सबके कारण आप अपनी शांति खो सकते हैं तथा अपने आप को अभागा महसूस कर सकते हैं। हालॉकि, यह अप्रत्यक्ष रूप से आपके लिए फायदेमंद होगा क्योंकि इससे आप और भी अधिक निष्पक्ष होगें और आपमें दार्शनिक छवि विकसित होगी जबकि धार्मिक क्षेत्रों में गहरा झुकाव होगा। हालॉकि, आप बिलकुल एकांत नही पसंद करेगें, फिर भी जहॉ तक संभव हो सकता है आप अपने आप को दूसरे लोगों से दूर रखने की कोशिश करेगें। फिर भी यदि शुक्र और राहु दोनों ग्रह वृष राशि में बैठे हुए हैं तो यह समय आपके लिए सुखदायक होगा क्योंकि आपको कई स्रोतों से धन की प्राप्ति होगी और आपका संचय तथा स्वामित्व बढेगा।

गुरू अर्न्तदशा

(14:08:2073--13:04:2076)

यह समय आपके लिए बहुत ही सुखदायक होगा। ये दोनों शुभ ग्रह आपके जीवन में खुशियॉ लाऍगें। यदि ये दोनो ग्रह एक साथ स्थित हैं तो और भी सुखदायक होगा और यदि ये दोनों ग्रह मीन राशि मे

एक साथ स्थित हैं तो ये समय आपके लिए सबसे उत्तम होगा। आय के नए स्रोत आपके लिए खुले होगेंऔर आपके पेशे से आमदनी बढ़ेगी। निवेश से भी आपको बढ़िया फल मिलेगा। काफी समय से बकाये धन की प्राप्ति होगी। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं सरकारी कर्मचारियों से सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी पदोन्नति हो सकती है या किसी आकर्षक संस्थान में आपको नई नौकरी प्राप्त हो सकती है। आप और आपके पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके परिवार मे कोईशुभ आयोजन होगा जो कि विवाह अथवा संतान के जन्म से बढ़ सकता है। यदि ये दोनो ग्रह परस्परविरोध की स्थिति मे हैं तो एक तरफ जहॉ आपका रूझान कानून की पढाई की तरफ हो सकता है वहीं दूसरी तरफ संभावना है कि आप किसी लंबी चलने वाली मुकदमेबाजी में फॅस सकते हैं।

शनि अर्न्तदशा

(13:04:2076--14:06:2079)

यदि इन दोनों ग्रहों मे से कोई एक आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति मे नही है तो यह समय आपके लिए खास लाभदायक नही होगा। अपने आप को अचानक भारी निराशा और प्रतिबंध से घिरा पाकर आपको आश्चर्य हो सकता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रभावशाली स्थिति में नही है अथवा शुक्र एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप उत्सर्जन प्रणाली में तकलीफ, बवासीर, गठिया आदि जैसे रोगों के शिकार हो सकते हैं तथा आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको ऑख की भी बीमारी होने की संभावना है। स्वास्थ्य खराब होने की वजह से आपको भूख भी नही लग सकती है और बढिया खाना भी बेस्वाद लग सकता है, आपको पर्याप्त नींद और आराम की कमी हो सकती है। यदि शनि शुक्र के साथ स्थित है अथवा शनि की दृष्टि शुक्र पर पड़ रही है तो आपको सतर्क रहना चाहिए क्योंकि संभावना है कि आपको पेशे में छोटे मोटे धक्के लग सकते हैं। यदि आपका लग्न वृष अथवा मकर है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सयुक्त समय है, आप काफी भाग्यशाली होगें और पेशे में काफी उन्नति होगी।

बुध अर्न्तदशा

(14:06:2079--14:04:2082)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कम से कम कोई एक ग्रह अथवा दोनों ग्रह किसी बुरे प्रभाव मे नही हैं तो यह समय आपके लिए काफी फलदायक और आनंदायक होगा। यदि आप शिक्षा अथवा किसी कलात्मक क्षेत्र में हैं तो आपकी काफी उन्नति होगी। आप अपने सारे कार्यो में सफल होंगे और अपने सहज गुणों तथा विशेष कार्यों के लिए सम्मान प्राप्त करेगें। आपको अपने रोजगार में उन्नति के बढ़िया अवसर प्राप्त हो सकते हैं और आपके सामाजिक स्तर मे वृद्धि होगी। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको महॅगे और आकर्षक लाभ के प्रस्ताव मिल सकते हैं। यदि आप व्यवसाय में हैं तो आप किसी नए व्यवसाय की शुरूवात कर सकते हैं, और आपके रहन सहन के स्तर मे सुधार होगा। आप किसी सांस्कृतिक अथवा शैक्षणिक कार्य के लिए दूरस्थ स्थानों की यात्रा कर सकते हैं और सफलतापूर्वक कार्य की समाप्ति पर खुशी मन से घर वापस लौट आयेंगे। आपके जीवनसाथी और संतानों का स्वास्थ्य उत्तम होगा और घरेलू जीवन शांतिमय और सुखमय होगा।

केतु अर्न्तदशा

(14:04:2082--14:06:2083)

यदि इन दोनों ग्रहों मे से कम से कम कोई एक ग्रह अथवा दोनों ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित है तो यह समय आपके लिए ठीक नही होगा। आपको काफी सावधान रहना चाहिए क्योंकि भटके

हुए किसी चौपाए जानवर से आपको डर हो सकता है। इसके अलावा आपका कोई पारिवारिक सदस्य किसी छोटी–मोटी दुर्घटना का शिकार हो सकता है अथवा भोजन की विषाक्तता या गलत दवा खाने की वजह से उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है या आपको कुछ नुकसान होसकता है। अथवा परिस्थितिवश आपको भारी व्यय करना पड़ सकता है। यदि आपका कोई प्रेम प्रसंगहै तो परिस्थिति मे बदलाव के कारण भारी कठिनाई में पड़ सकते हैं। इस बात की भी संभावना हैकि आपका कोई गुप्त रहस्य उजागर हो जाएगा, जिसकी वजह से आपको शर्मिन्दगी उठानी पड़ सकती है अथवा कोई ईर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि को नुकसान पहुचाने की कोशिश कर सकता है। आपके जीवनसाथी काफी संवेदनशील हो सकते हैं जिससे आपके लिए कई प्रकार की परेशानियॉ पैदा होगी।

सूर्य दशा

(14:06:2083--14:06:2089)

सूर्य अर्न्तदशा

(14:06:2083--01:10:2083)

यदि सूर्य तुंगस्थ है या अपनी राशि में है या अपने नक्षत्र में है या आपकी कुण्डली के दशवें भाव में बैठकर दिक् बल की स्थिति में है तो यह समय निश्चय ही आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों, प्राधिकारीगण, एवं सरकारी कर्मचारियों से काफी सहयोग और लाभ प्राप्त करेगें। आपके मान–सम्मान में बेतहाशा वृद्धि होगी। आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। अगर सूर्य किसी दूसरे उपचय भाव (तीसरे या छठे या ग्यारहवें) मे बैठा है तो भी काफी बढ़िया उन्नति होगी और समय का भरपूर आनंद लेगें। लेकिन, यदि सूर्य आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नही है अथवा किसी कारणवश ग्रसित है तो यह समय आपके लिए काफी कठिनाईयों से भरा होगा। अपने सहकर्मियों, वरिष्ठ अधिकारियों या मालिक के साथ आपका मतभेद हो सकता है। या फिर, आप किसी दंडात्मक सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं और इसके परिणाम से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। इसके अलावा, गहरा कलह आपके परिवार को तोड़ सकता है, जिसकी वजह से आप दु:खी महसूस करेगें। आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है और आप सर दर्द, कान दर्द, मूत्र संबंधित समस्याएँ यागुरदे में तकलीफ के शिकार हो सकते हैं।

चन्द्र अर्न्तदशा

(01:10:2083--01:04:2084)

यदि सूर्य और चन्द्रमा आपकी जन्मकुण्डली में किसी तरह से ग्रसित नही है तो यह समय आपके लिए बहुत बढ़िया और आनन्दायक होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों, नियोक्ता, एवं सरकारी कर्मचारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेगें। आप अपना कोई नया व्यवसाय आरम्भ करेगें अथवा किसी नये क्षेत्र में भी अपना हाथ आजमाएगें। आपकी आय में वृद्धि होगी और उसी अनुसार रहन सहन में भी सुधार होगा। सामाजिक स्तर पर आपकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी। आप कुछ समाजिक कार्यो मे भी तत्परतापूर्वक लगे हो सकते हैं। आपको किसी महिला मित्र या रिश्तेदार या परिचित आदि का विरोध सहना पड़ सकता है परन्तु आपके विरोधी तुरंत पीछे हट जाऍगें। आपके स्वास्थ्य के संदर्भ में यह समय बहुत अधिक ठीक नही है और अगर इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी आपकी जन्मकुण्डली में ग्रसित है तो यह समय और भी बुरा होगा। आप अपने शरीर में रक्त प्रवाह से संबंधित किसी बीमारीके शिकार हो सकते हैं और आपकी ऑखें भी प्रभावित हो सकती हैं। यदि आपकी कुण्डली मे सूर्य शनि से ग्रसित है तो आपकी मान मर्यादा में कमी आ सकती है और यदि चन्द्रमा शनि से ग्रसित

है तो लोगों की कड़वी आलोचना सुननी पड़ सकती है।

मंगल अर्न्तदशा

(01:04:2084--07:08:2084)

यदि आपकी कुण्डली में ये दोनों ग्रह एक साथ मेष राशि में स्थित हैं अथवा ये दोनों ग्रह दशवें भाव में स्थित हैं और दिक् बल बना रहे हैं जबकि मंगल अस्त नही है, तो यह आपके लिए बहुत सुखद स्थिति हो सकती है। आप अचानक बहुत ही प्रभावशाली स्थिति में होगें। यदि उनमें से कोई एक ग्रह उपचय भाव (तीसरे, छठे या ग्यारहवें) में है तो भी यह समय आपके लिए बहुत फायदेमंद होगा। आप अपने कार्यो में सफलता पायेगें और आपकी अभिलाषाएँ पूर्ण होगीं। लेकिन यदि कुण्डली में मंगल अस्त है याठीक से स्थित नही है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है तथा आपको छोटे-मोटे कष्टकारक रोग हो सकते हैं। आपको अनावश्यक खर्च करना पड़सकता है अथवा आपको असावधानी की वजह से घाटा उठाना पड़ सकता है। आपका छोटा भाई अथवा कोई निकट का रिश्तेदार किसी बड़ी परेशानी में घिर सकता है जिसकी वजह से आप चिन्तित हो सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सयुंक्त समय है, रोजगार के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी।

राहु अर्न्तदशा

(07:08:2084--02:07:2085)

जैसा कि ये दोनो ग्रह परस्पर विरोधी हैं, तो यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नही है तो इस दशा में आपको बहुत लाभदायक फल प्राप्त नही होगा। इसके अलावा यदि आपकी कुण्डली में राहु ग्रसित है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ विवाद में फॅस सकते हैं जिसकी वजह से आपको अपना निवास स्थान भी बदलना पड़ सकता है। आपके परिवार में कलह निरंतर हो सकता है और पारिवारिक सदस्य विभाजन चाहेगें। या फिर आपको लंबे समय के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है। यदि राहु आपकी कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है तो आपको आमदनी बढ़ेगी, परन्तु उसमे उतार-चढ़ाव बहुत अधिकहोगा। परन्तु यदि दोनों ग्रह ग्रसित हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सामने अपने आचरण के लिए सफाई देनी पड़ सकती है। यदि राहु वृहस्पति या शुक्र के नक्षत्र अथवा राशि में है तो आपकी परेशानियॉ कुछ कम हो सकती हैं।

गुरू अर्न्तदशा

(02:07:2085--20:04:2086)

यदि वृहस्पति आपकी कुण्डली में अस्त नही है या किसी तरह से ग्रसित नही है तो यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा, जो कि आपको काफी उन्नति और परम संतोष देगा। आपको कई स्रोतों खासकर सरकारी विभागों से लाभ प्राप्त होगा। आपको किसी बड़ी वित्तीय संस्था से निवेश के लिए कोई बड़ी राशि मिल सकती है। निश्चित रूप से आप किसी विशिष्ट पद पर जाएँगें। आपके दुश्मन पीछेहटेगें और सारी रूकावटें दूर होगीं। यदि आप कोई ऊँची शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आपको कोई प्रतिष्ठित उपाधि मिल सकती है। यदि आप ऊँची शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए उपयुक्त है। यदि किसी के साथ आपका कोई प्रेम-प्रसंग चल रहा है तो बहुत जल्द आपकी शादी हो सकती है। यदि आप विवाहित हैं और संतान चाहते हैं तो संभावना है कि आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। आपकी खुशियों में और भी इजाफा हो सकता है यदि आपका लग्न सिंह हो, क्योंकि यह

लग्नपति और पॉचवें भाव के स्वामी का संयुक्त दशा है। लेकिन, यदि आपका लग्न वृष है जैसा कि यह समय चौथे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का है – तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आपको पानी से डर हो सकता है।

शनि अर्न्तदशा

(20:04:2086--02:04:2087)

जैसा कि ये दोनो ग्रह एक दूसरे के घोर विरोधी हैं, यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नही है तो संभावना है कि यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नही होगा। और यदि सूर्य या शनि में से कोई भी ग्रह ग्रसित है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। अगर आपकीकुण्डली में कोई प्रतिकूल ग्रह युति उपस्थित नही है तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों या मालिक का कोपभाजन बनना पड़ सकता है और आपके अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ गहरे मतभेद हो सकते हैं। आपको अपने पिता, पुत्र अथवा जीवनसाथी से बिगाड़ हो सकता है और आपको इनके साथ कानूनी विवाद का सामना भी करना पड़ सकता है। इसके अलावा आपका स्वास्थ्य भी चिंताजनक हो सकता है और आपको कही उॅचे स्थान से गिरने या टक्कर से हड्डी टूटने का भी खतरा हो सकता है। आप अपने जीवनसाथी या संतानों के व्यवहार से या किसी नुकसान से दु:खी हो सकते है, आप चिड़चिड़े हो सकते हैं और अकारण ही गुस्सा करने लगेगें। यदि आपका लग्न सिंह है तो – जैसा कि यहलग्नपति और सप्तमपति का सयुंक्त समय है यदि आप अविवाहित है तो आपका विवाह हो सकताहै। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य और शनि एक दूसरे पर विपरीत दृष्टि डाल कर रहे हैं तो आप कानूनी पचड़ो में पड़ सकते हैं जो कि लम्बे समय तक चलेगी और अंत में आपके विरोधी के पक्ष में जाएगी।

बुध अर्न्तदशा

(02:04:2087--06:02:2088)

यदि बुध आपकी कुण्डली में अस्त नही है और दोनो ग्रह या तो सिंह या मिथुन या कन्या राशि में बैठे हैं तो यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा। यदि आप शिक्षा अथवा किसी बौद्धिक क्षेत्र में हैंतो आपको असाधारण सफलता मिलेगी। अगर आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपकी काफी उन्नति होगी। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में इनमें से कोई एक ग्रह भी ग्रसित है तो यह समय आपके लिए उतना भाग्यशाली नही हो सकता है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियो से अनबन हो सकती है और आपके मित्र अथवा कुछ रिश्तेदार आपके विरोधी बनेगें। आप अपने मान--सम्मान को लेकर निरंतर चिन्तित हो सकते हैं, न तो ठीक से भूख लगेगी और न ही ठीक से सो पाऍगें। आपके संतान भी कुछ समस्याऍ पैदा कर सकते हैं और दूरस्थ स्थानों की कुछ यात्राऍ कर सकते हैं जो कि लाभदायक नही हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि आप थोड़े बहुत प्रभावित हो सकते हैं। यदि बुध अस्त है तो आपको आखों में कुछ परेशानी हो सकती है। आपको अपच, भूख न लगने तथा अनिंद्रा जैसी बिमारी भी हो सकती है।

केतु अर्न्तदशा

(06:02:2088--13:06:2088)

ये दोनों ग्रह एक दूसरे के घोर विरोधी हैं, यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीहै तो संभावना है कि यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नही होगा। यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी ठीक स्थिति में नही है तो यह समय आपके लिए बुरा हो सकता है। आपका दिमाग शांत नही

होगा, उसमें बहुत सारे शक और बुरे ख्याल भरे रहेंगे। आप अपने मित्रों और संबंधियों के साथ मुसीबत में फॅस सकते है। अपने मकान मालिक के साथ गंभीर मतभेद के कारण आप किसी दूसरे मकानमें रहने को विवश हो सकते हैं। या फिर, परिस्थितियों में बदलाव के कारण आपको अपना घर छोड़ना पड़ सकता है। आप बहुत निराश हो सकते हैं और आप चाहेगें कि परिस्थितियों में जल्दी से कोई बड़ा बदलाव हो। अगर केतू उपचय भाव में बैठा है अथवा अपने नक्षत्र में बैठा है तो आप किसी नये मित्र से सहयोग पाएँगें जो किसी अलग समुदाय या धर्म से भी हो सकता है और नई शुरूआत के लिए किसी दूरस्थ स्थान को जाएँगें। यह आपके लिए लाभदायक बदलाव होगा।

शुक्र अर्न्तदशा

(13:06:2088--14:06:2089)

अगर आपकी कुण्डली में शुक्र अस्त नही है अथवा किसी अन्य बुरे प्रभाव में नही है तो यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा। यह और भी लाभदायक होगा यदि इनमें से कोई एक ग्रह केन्द्र में और एक त्रिकोण भाव में बैठा हो। यदि आपका लग्न सिंह है तो यह लग्नपति और दशमपति का सयुक्तसमय है। आप अपने व्यवसाय में बड़ी उन्नति की आशा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक से स्थित है तो यह समय आपके लिए उन्नति वाला होगा। आप सरकारी स्रोतों और कुलीन पृष्ठभूमि के लोगों से काफी लाभ प्राप्त करेंगे। आपके सम्बन्धों का दायरा ऊँचा होगा और आप कोई ऐसा कार्य करेगें जिससे आपको सम्मान की प्राप्ति होगी। अगर आपका विवाह नही हुआ है तो होने की संभावना प्रबल है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र अस्त है अथवा किसी बुरे प्रभाव में है तो आप छोटी–मोटी बिमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको ऑख और प्रजनन संबंधी कुछ समस्याऍ हो सकती है।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Hyderabad

गोचर की तारीख- **15:01:2014** गोचर का समय- **11:33:41AM** गोचर का स्थान- **Hyderabad (INDIA)**

ग्रह स्थिति

Sample						Transit					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र			ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (1)	—	—	लग्न	मीन	23:30:30	रेवती (3)	—	—
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (1)	मि०ग्र०	स०	सूर्य	मकर	00:56:53	उत्तराषाढ़ (2)		शु०ग्र०
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (2)	श०ग्र०	—	चन्द्र	मिथुन	20:37:50	पुनर्वसु (1)		शु०ग्र०
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (2)	मूत्रि	—	मंगल	कन्या	23:29:44	चित्रा (1)		—
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (1)	श०ग्र०	—	बुध	मकर	11:33:32	श्रवण (1)		दु०ग्र०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (3)	त०ग्र०	शु०ग्र०	गुरु व०	मिथुन	20:08:59	पुनर्वसु (1)	व०	शु०ग्र०
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (1)	मि०ग्र०	शु०ग्र०	शुक्र व०	धनु	24:53:09	पूर्वाषाढ़ (4)	व०	ज०व०
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (1)	त०ग्र०	स०	शनि	तुला	27:28:34	विशाखा (3)		दु०ग्र०
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (2)	मि०ग्र०	दु०ग्र०	राहु व०	तुला	10:03:55	स्वाति (2)	व०	दु०ग्र०
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिरा (4)	त०ग्र०	दु०ग्र०	केतु व०	मेष	10:03:55	अश्विनी (4)	व०	—
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (4)	—	—	हर्षल	मीन	14:52:51	उत्तराभाद्रपद (4)		—
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (4)	—	शु०ग्र०	नेपच्यून	कुम्भ	09:34:41	शतभिषा (1)		—
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (1)	—	दु०ग्र०	प्लूटो	धनु	17:41:55	पूर्वाषाढ़ (2)		शु०ग्र०

Sample

लग्न कुण्डली

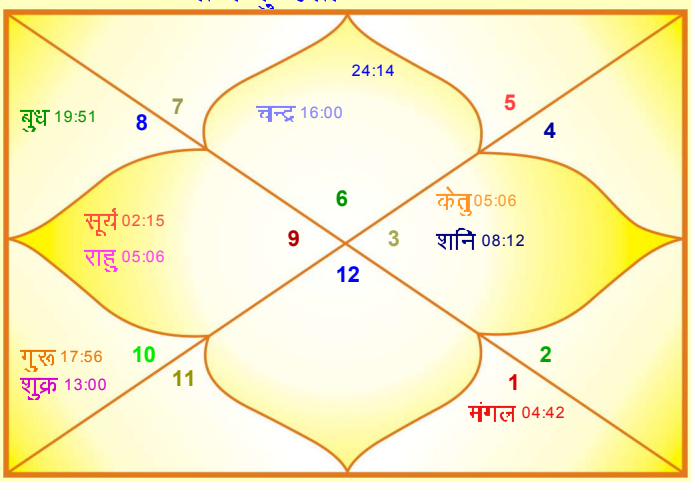

नवांश कुण्डली

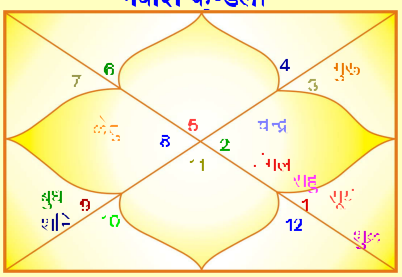

चन्द्र कुण्डली

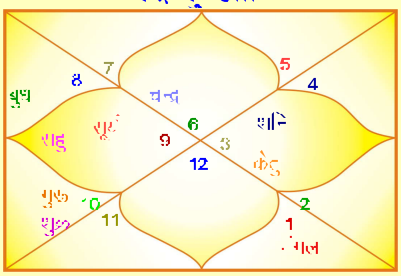

नवांश कुण्डली

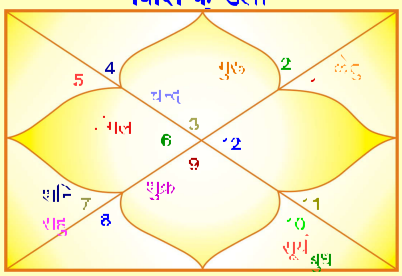

चन्द्र कुण्डली

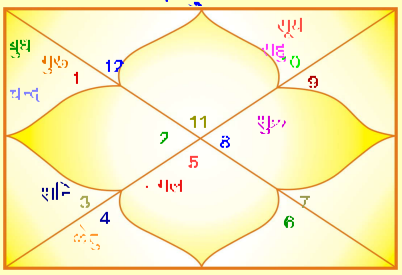

Transit

लग्न कुण्डली

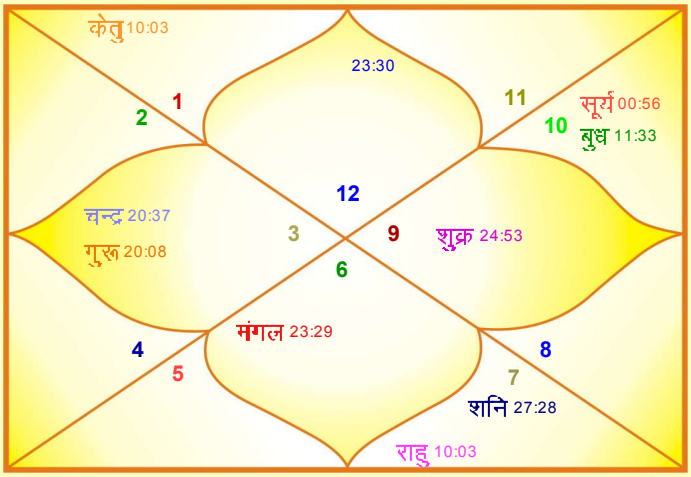

Computer Zone

गोचर शनि

(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
कंटक शनि	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
अष्टम शनि	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
कंटक शनि	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
अष्टम शनि	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	

शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	सिंह	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
द्वितिय ढ़ैया	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
तृतिय ढ़ैया	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
कंटक शनि	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
अष्टम शनि	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

ग्रहो के गोचर से भविष्यफल

गोचर में सूर्य चन्द्र राशि से पाचवें भाव से गुजर रहा है। यह सूर्य का सबसे अशुभ गोचर है, आपको बहुत ही सतर्क एवं सावधान रहने की जरूरत है। आपके कार्य स्थल पर स्थितियॉ पूर्णतया आपके विपरीत होगीं, और आपको मानसिक कष्ट पहुँचा सकती है। अगर गोचर में दूसरे अन्य ग्रह भी शुभ स्थिति में नही हैं तो आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है और आप अपने किये हुये वादों को न निभा पाने की वजह से अपमानित महसूस करेगें। यह गोचर आपके संतानों के लिए भी शुभ नही है, उनमें से किसी एक का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का कारण बन सकता है।

माघ महीने के दौरान सूर्य इस गोचर मे होगा (१४-१५ जनवरी से १३-१४ फरवरी तक)

चन्द्रमा गोचर में अपनी राशि से दसवें भाव से गुजर रहा है। यह गोचर अति भाग्यशाली है और आप एक दो दिन काफी सुखपूर्वक गुजारेगें। आप अपने सभी प्रयत्नों में सफल होगें और आपके सुझाव/प्रस्ताव सभी को पंसद आयेगें। आप अपना कार्य सफलतापूर्वक खत्म कर नया कार्य अपने हाथ मेंलेगें।

मंगल गोचर में चन्द्र राशि से गुजर रहा है। यह गोचर शुभ नही है। आपको शांत रहना चाहिए। आपका दिमाग बेकार की बातों से भरा होगा और आप बहुत जल्दी गुस्सा भी हो सकते हैं। आपका अपने संबंधियों - खासकर अनुजों - के साथ झगड़ा हो सकता है और आपका संबंध उनसे बिगड़ सकता है। अगर अन्य दूसरे ग्रह भी अशुभ गोचर में हैं तो आपको अपने सम्बन्धियों के अलग भी होना पड़ सकता है। शारिरिक रूप से, शरीर में जलन या/और खून की अशुद्धता के कारण आप अस्वस्थ हो सकते हैं।

गोचर में बुध आपकी चन्द्रराशि से पाचवें भाव से गुजर रहा है। यह एक शुभ गोचर नही है। आपको अति उत्साह से कार्य नही लेना चाहिए। कहीं निवेश करते समय या उधार देते समय आपको कई बार सोचना चाहिए अन्यथा हानि सुनिश्चित है। आपके संतान आपके लिए चिंता के स्रोत होगें और जीवनसाथी के व्यवहार से आप नाखुश हो सकते हैं। आप अपने आपको काफी परेशान महसूस कर सकते हैं जिससे मनोरंजन के लिए कहीं बाहर जाने पर भी आप आनंद नही ले पाएँगें।

गोचर में वृहस्पति चन्द्रराशि से दसवें भाव से गुजर रहा है। यह एक अशुभ गोचर है। आपको स्वप्न से जगकर यथार्थ मे आना चाहिए। परिस्थितियॉ आपके विपरीत होगीं और अचानक आपको एहसास हो सकता है कि आपके सुनहरे दिन गुजर गए और बाधाओं के कारण आपकी उन्नति रूक गई है। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा कम होगी और अपना पद खोने का डर आपको निराशा की हद तक ले जा सकता है। आपके संतानों का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है। यदि दूसरे अन्य ग्रहशुभ गोचर से गुजर रहे हों तो स्थिति में सुधार आयेगी और परेशानियॉ कम होगीं।

गोचर में शुक्र चन्द्रराशि से चौथे भाव से गुजर रहा है। यह गोचर अत्यंत शुभ है और आप कई मामलों मे भाग्यशाली सिद्ध होगें। आपको एक से अधिक स्रोतों से धन प्राप्ति होगी और आपका घरेलू जीवन सुखमय और शांतिमय होगा। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन या मिलन हो सकता है, जिसकी वजह से आपका घर खुशियों से भरा होगा। आपका दिमाग, यादाश्त, सोच, बौद्धिक क्षमता, तथा निर्णय

क्षमता बेजोड़ होगी।

आपकी कुण्डली में शनि की साढ़े साती चल रही है और यह अपने अन्तिम चरण में है। गोचर में शनि आपकी चन्द्र राशि से दूसरे भाव से गुजर रहा है। आमदनी कम होने या पैसे आदि के न मिलने के कारणआपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं और आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है ।आपको पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतनी चाहिए। आपके परिवार के लोग आत्म-केन्द्रित और भावुक हो सकते हैं, जबकि उसी समय बहुत बेचैन भी हो सकते हैं। कोई भावुक घटना या कलह आपकेपरिवार को तोड़ भी सकती है। आपको मानसिक शांति और संतोष नही मिल सकता है। और आपअपने को काफी असहाय महसूस करेगें।

गोचर में राहु आपकी चन्द्र राशि से दूसरे भाव से गुजर रहा है। यह एक अशुभ गोचर है। इसका फल शनि के चन्द्र राशि से बारहवें भाव में होने वाले गोचर की तरह है। पैसों की कमी के कारण आपको कठिनाई हो सकती है या अयोग्य विश्वास के कारण हानि उठानी पड़ सकती है। आपको काफी सावधान रहना चाहिए और कर संबंधी मामलों में साफ होना चाहिए, अन्यथा आप परेशानियों में फॅस सकते हैं। आपके परिवार के कुछ लोगों का लगभग हर महत्त्वपूर्ण मामलों में आपसे मतभेद हो सकता है और उन्हे शांत करने के लिए आपको अपना निर्णय बदलना पड़ सकता है।

गोचर में केतू आपकी चन्द्र राशि से आठवें भाव से गुजर रहा है। यह शुभ गोचर नही है और आपको सुझाव दिया जाता है कि जब तक यह बुरा समय बीत न जाए तब तक अपने उपर काबू रखें। आने वालासमय काफी मुश्किलों वाला हो सकता है और आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप या आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जो कि आंतरिक रूप से गंभीर हो सकता है और इलाज मुश्किल हो सकता है। आपके कार्य स्थल पर परिस्थितियॉ हतोत्साहित करने वाली हो सकती है और आपकी आमदनी कम हो सकती है। आपको सरकारी कर्मचारियों के साथ होने वाले विवादसे बचना चाहिए।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00AM POB-Hyderabad

वर्ष पूर्ण- 40 वर्षफल काल- 18:12:2013--18:12:2014

ग्रह स्थिति

जन्म						वर्षफल					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र			ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	—	—	लग्न	धनु	13:10:22	मूल (४)	—	—
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि०ग्र०	ग्र०	सूर्य	धनु	02:14:54	मूल (१)		—
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	श०ग्र०	—	चन्द्र	मिथुन	09:47:59	आर्द्रा (१)		शु०ग्र०
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि	—	मंगल	कन्या	11:04:47	हस्त (१)		—
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श०ग्र०	—	बुध	वृश्चिक	25:59:59	ज्येष्ठा (३)		ज्व०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त०ग्र०	शु०ग्र०	गुरु व०	मिथुन	23:50:15	पुनर्वसु (२)	व०	दुःग्रह
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि०ग्र०	शु०ग्र०	शुक्र	मकर	04:38:05	उत्तराषाढ़ (३)		—
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (१)	त०ग्र०	ग्र०	शनि	तुला	24:56:51	विशाखा (२)		दुःग्रह
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (२)	मि०ग्र०	दुःग्रह	राहु व०	तुला	12:37:51	स्वाति (२)	व०	दुःग्रह
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिर (४)	त०ग्र०	दुःग्रह	केतु व०	मेष	12:37:51	अश्विनी (४)	व०	—
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	—	—	हर्षल	मीन	14:32:04	उत्तराभाद्रपद (४)		—
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	—	शु०ग्र०	नेपच्यून	कुम्भ	08:51:30	शतभिषा (१)		—
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	—	दुःग्रह	प्लूटो	धनु	16:42:59	पूर्वाषाढ़ (२)		दुःग्रह

Varsha-Phala Section

चन्द्र कुण्डली(वर्षफल)

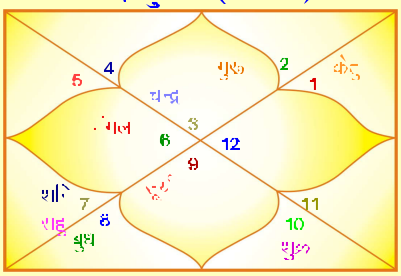

लग्न कण्डली(वर्षफल)

मुन्था राशि- मकर

मुन्था भाव- २

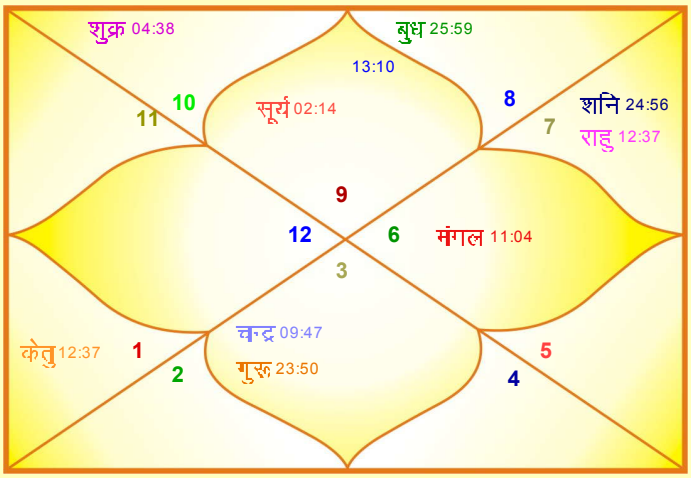

Natal Section

लग्न कुण्डली(जन्म)

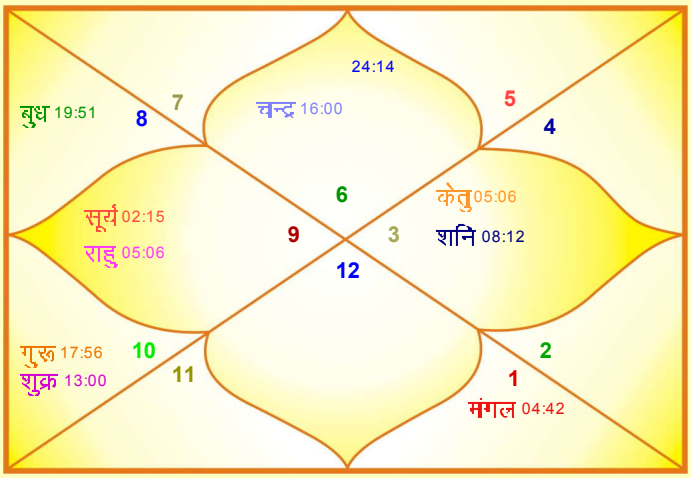

नवांश कुण्डली(जन्म)

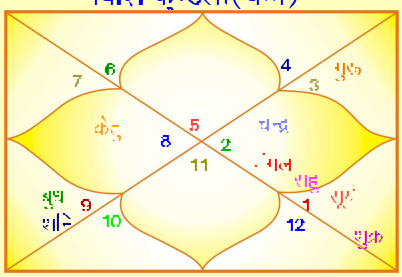

चन्द्र कुण्डली

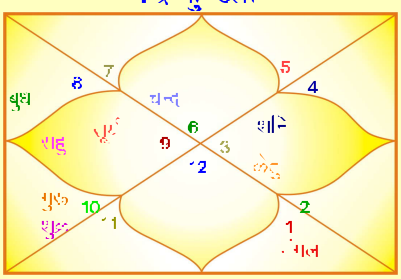

Year Completed-40 (Varshphal - From-18:12:2013 To-18:12:2014)

वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

पंचवर्गीय बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	क्षेत्र बल	15.00	07.50	07.50	07.50	07.50	15.00	15.00
2	उच्च बल	05.81	15.91	04.79	12.11	18.76	10.85	19.45
3	हद्दा बल	07.50	03.75	03.75	07.50	07.50	07.50	07.50
4	द्रेक्कन बल	05.00	02.50	02.50	02.50	02.50	05.00	05.00
5	नवांश बल	02.50	02.50	05.00	02.50	01.25	02.50	02.50
कुल बल		35.81	32.16	23.54	32.11	37.51	40.85	49.45
तुलनात्मक बल		साधारण	साधारण	साधारण	साधारण	साधारण	बलशाली	बलशाली

द्वादश वर्गीय बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	राशि बल	+1	-1	-1	-1	-1	+1	+1
2	होरा बल	+1	+1	+1	-1	+1	-1	-1
3	द्रेक्कन बल	+1	-1	-1	-1	-1	+1	+1
4	चतुर्थांश बल	+1	-1	+1	-1	+1	+1	-1
5	पंचमांश बल	+1	-1	-1	+1	-1	-1	+1
6	षष्टांश बल	+1	-1	+1	-1	+1	+1	-1
7	सप्तमांश बल	+1	+1	-1	-1	+1	-1	-1
8	अष्टमांश बल	+1	-1	-1	+1	-1	+1	+1
9	नवांश बल	+1	+1	+1	+1	-1	+1	+1
10	दसांश बल	+1	-1	+1	-1	-1	+1	+1
11	एकादसांश बल	+1	-1	-1	-1	-1	+1	-1
12	द्वादशांश बल	+1	-1	-1	+1	+1	+1	-1
कुल बल		+12	-6	-2	-4	-2	+6	0
तुलनात्मक बल		असाधारण	बहुत बुरा	सम	बुरा	सम	बहुत सुन्दर	सम

हर्ष बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	स्थान बल	0	0	0	0	0	0	0
2	क्षेत्र बल	0	0	0	0	0	0	5
3	ओज–युग्म बल	0	5	5	0	0	5	0
4	दिवा–रात्रि बल	5	0	5	0	5	0	0
कुल बल		5	5	10	0	5	5	5
तुलनात्मक बल		अल्पबली	अल्पबली	मध्यबली	निर्बली	अल्पबली	अल्पबली	अल्पबली

Year Completed-40 (Varshphal - From-18:12:2013 To-18:12:2014)

द्वादश वर्ग कुण्डली

वर्ष लग्न कुण्डली

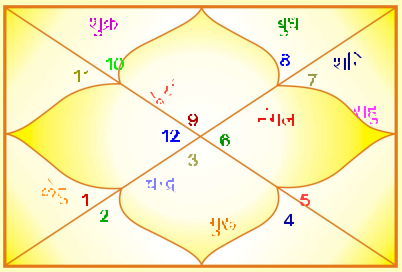

वर्ष होरा कुण्डली

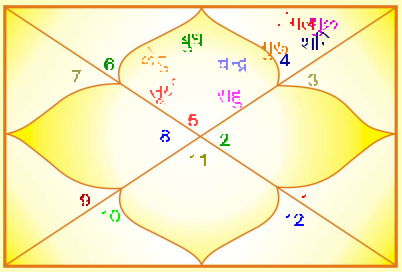

वर्ष द्रेष्काण कुण्डली

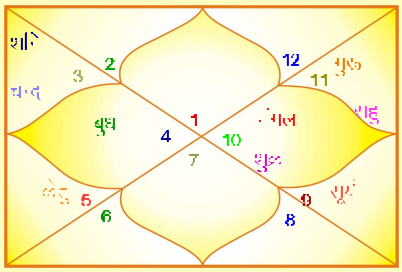

वर्ष चतुर्थांश कुण्डली

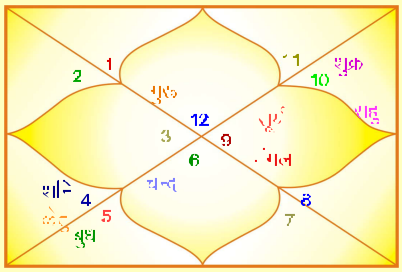

वर्ष पंचमांश कुण्डली

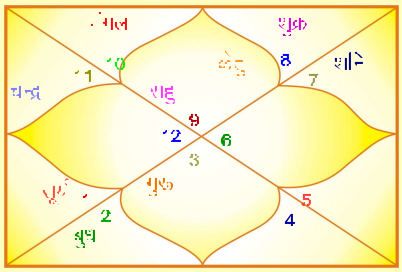

वर्ष षष्ठांश कुण्डली

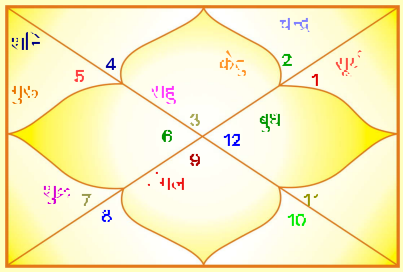

वर्ष सप्तांश कुण्डली

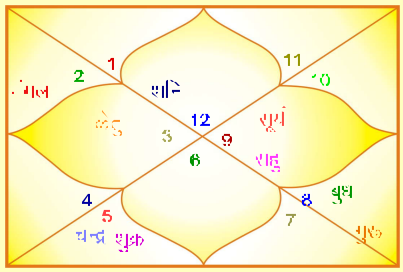

वर्ष अष्टांश कुण्डली

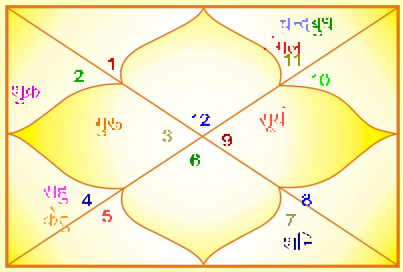

वर्ष नवांश कुण्डली

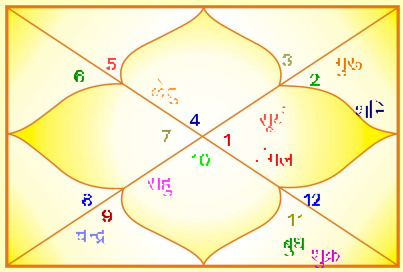

वर्ष दशमांश कुण्डली

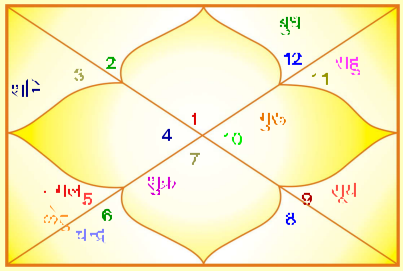

वर्ष एकादशांश कुण्डली

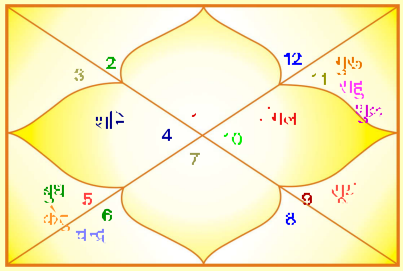

वर्ष द्वादशांश कुण्डली

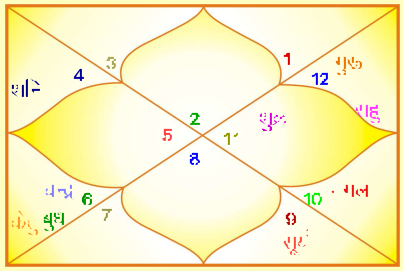

Year Completed-40 (Varshphal - From-18:12:2013 To-18:12:2014)

पत्ययनी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से ---------तक
1	सूर्य	0 y.1 m.1 d.	18:12:2013 To 18:01:2014
2	शुक्र	0 y.1 m.3 d.	18:01:2014 To 21:02:2014
3	चन्द्र	0 y.2 m.12 d.	21:02:2014 To 04:05:2014
4	मंगल	0 y.0 m.18 d.	04:05:2014 To 22:05:2014
5	लग्न	0 y.0 m.29 d.	22:05:2014 To 21:06:2014
6	गुरू	0 y.4 m.28 d.	21:06:2014 To 17:11:2014
7	शनि	0 y.0 m.15 d.	17:11:2014 To 03:12:2014
8	बुध	0 y.0 m.15 d.	03:12:2014 To 18:12:2014

मुद्दा विंशोत्तरी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से ---------तक
1	शनि	0 y.1 m.27 d.	18:12:2013 -- 14:02:2014
2	बुध	0 y.1 m.21 d.	14:02:2014 -- 06:04:2014
3	केतु	0 y.0 m.21 d.	06:04:2014 -- 28:04:2014
4	शुक्र	0 y.2 m.0 d.	28:04:2014 -- 27:06:2014
5	सूर्य	0 y.0 m.18 d.	27:06:2014 -- 16:07:2014
6	चन्द्र	0 y.1 m.0 d.	16:07:2014 -- 15:08:2014
7	मंगल	0 y.0 m.21 d.	15:08:2014 -- 05:09:2014
8	राहु	0 y.1 m.24 d.	05:09:2014 -- 30:10:2014
9	गुरू	0 y.1 m.18 d.	30:10:2014 -- 18:12:2014

मदद्दा योगिनी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से ---------तक
1	पिंगला (सूर्य) दशा	0 y.0 m.20 d.	18:12:2013 -- 07:01:2014
2	धन्या (बृहस्पति) दशा	0 y.1 m.0 d.	07:01:2014 -- 07:02:2014
3	भ्रामरी (मंगल) दशा	0 y.1 m.10 d.	07:02:2014 -- 19:03:2014
4	भद्रिका (बुध) दशा	0 y.1 m.20 d.	19:03:2014 -- 09:05:2014
5	उल्का (शनि) दशा	0 y.2 m.0 d.	09:05:2014 -- 09:07:2014
6	सिद्धा (शुक्र) दशा	0 y.2 m.10 d.	09:07:2014 -- 18:09:2014
7	संकटा (राहु) दशा	0 y.2 m.20 d.	18:09:2014 -- 08:12:2014
8	मंगला (चन्द्रमा) दशा	0 y.0 m.10 d.	08:12:2014 -- 18:12:2014

मदद्दा षोडशोत्तरी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से ---------तक
1	गुरू	0 y.1 m.10 d.	18:12:2013 -- 28:01:2014
2	शनि	0 y.1 m.13 d.	28:01:2014 -- 13:03:2014
3	केतु	0 y.1 m.17 d.	13:03:2014 -- 29:04:2014
4	चन्द्र	0 y.1 m.20 d.	29:04:2014 -- 18:06:2014
5	बुध	0 y.1 m.23 d.	18:06:2014 -- 11:08:2014
6	शुक्र	0 y.1 m.26 d.	11:08:2014 -- 06:10:2014
7	सूर्य	0 y.1 m.4 d.	06:10:2014 -- 10:11:2014
8	मंगल	0 y.1 m.7 d.	10:11:2014 -- 18:12:2014

आपकी कुण्डली में मुद्द षोडशोत्तरी दशा लागू नहीं हो रही है।

जैमिनी चर दशा – वर्षफल

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से ---------तक
1	धनु दशा	0 y.1 m.23 d.	18:12:2013 -- 09:02:2014
2	मेष दशा	0 y.0 m.26 d.	09:02:2014 -- 08:03:2014
3	सिंह दशा	0 y.1 m.12 d.	08:03:2014 -- 20:04:2014
4	मकर दशा	0 y.0 m.16 d.	20:04:2014 -- 06:05:2014
5	वृष दशा	0 y.1 m.12 d.	06:05:2014 -- 18:06:2014
6	कन्या दशा	0 y.0 m.11 d.	18:06:2014 -- 29:06:2014
7	कुम्भ दशा	0 y.0 m.21 d.	29:06:2014 -- 20:07:2014
8	मिथुन दशा	0 y.0 m.26 d.	20:07:2014 -- 16:08:2014
9	तुला दशा	0 y.0 m.16 d.	16:08:2014 -- 01:09:2014
10	मीन दशा	0 y.1 m.18 d.	01:09:2014 -- 20:10:2014
11	कर्क दशा	0 y.0 m.5 d.	20:10:2014 -- 25:10:2014
12	वृश्चिक दशा	0 y.1 m.23 d.	25:10:2014 -- 18:12:2014

पत्ययिनी दशा से वार्षिक भविष्यफल

सूर्य दशा

(18:12:2013 To 18:01:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य तुगंस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है और यह ग्रसित भी नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अत: सूर्य की दशा केवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आपके कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक खराब हो सकती है और आप अपने किसी एक वरिष्ट या सहकर्मी के साथ प्राय: किसी छोटी असहमति या गलतफहमी के कारण झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

शुक्र दशा

(18:01:2014 To 21:02:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र तुगंस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यह ना ही ग्रसित या अस्त है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अत: शुक्र की दशा केवल साधारण होगी,और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। आपके सभी मामले सामान्यत: भली भाँति चलेगें। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहज होगीं। आप अपने संबंधियों और मित्रों की संगति पानेके लिये कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होगें। आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा।

चन्द्र दशा

(21:02:2014 To 04:05:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, चन्द्रमा तुगंस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यहना ही ग्रसित है ना ही अस्त है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अत: चन्द्रमा की दशा केवल साधारण होगी, और इसमें कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आपके घरेलू वातावरण में कुछ समस्यायें हो सकती है, आपके परिवर के कुछ सदस्य अतार्किक ढ़ंग से बात और व्यवहार कर सकते हैं, जिससे आप चिड़चिड़े हो सकते हैं और बहुत अप्रसन्नता महसूस कर सकते हैं।

मंगल दशा

(04:05:2014 To 22:05:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल तुगंस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अत: मंगल की दशाकेवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आप अपने कार्यस्थल पर कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं, साथ ही आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ सम्पत्ति विवाद में फँस सकते हैं, जिससे आप झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल एक उपचय भाव (३रे/ ६ठे/१०वें/ ११वें) में स्थित है। यह ना ही नीचस्थ है और ना ही राहु के पास में स्थित है। यह वास्तव में अनुकूल युति है, और मंगल

की दशा आपके लिये लाभकारी साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होगें और वर्ष के दौरान कोई विशेष उपलब्धि हासिल कर सकते हैं । वरिष्ठ सरकारीअधिकारी आपके प्रति अनुकूल होगें, और आप उनसे समर्थन या लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

लग्न दशा

(22:05:2014 To 21:06:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश नीचस्थ (या वक्री या अस्त या ग्रसित है) । यह एक अनुकूल युति नहीं है। लग्न की दशा आपके लिये उत्तम नहीं हो सकती है । अत: सामान्यत: आपको अपने सभी मामलों में बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये और अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना चाहिये। इस दशा के दौरान किसी शुभ और महत्वपूर्ण काम की शुरूआत या किसी लम्बी यात्रा केलिये प्रस्थान फलदायी नहीं हो सकता है। कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक खराब हो सकती है, यद्यपि सामान्य लोग आपको उचित सम्मान देगें फिर भी आपके वरिष्ठ अधिकारी आपको दबाने की कोशिश कर सकते हैं, और तर्कसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं, साथ ही आपको अन्यायपूर्वक उस दोष के लिये कलंकित किया जा सकता है, जहाँ आपकी बहुत छोटी या कोईभी त्रुटि नहीं है ।

गुरू दशा

(21:06:2014 To 17:11:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति तुगंस्थ या अपनी राशि या नीचस्थ में नहीं है और यह ना ही ग्रसित या अस्त है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं । अत: बृहस्पति कीदशा केवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। आपके सभी मामले सामान्यत: भलीभाँति चलेगें । आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहज होगीं, आप अपने संबंधियों और मित्रों की संगति पाने के लिये कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होगें । आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा।

शनि दशा

(17:11:2014 To 03:12:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि तुगंस्थ या अपनी राशि में है और यह ग्रसित या अस्त होने के कारण कलंकित नहीं है। शुक्र की दशा के दौरान आप कुछ मामलों में बहुत भाग्यशाली होगें । आप नये परिचितों और विदेशी स्रोतों से लाभ और समर्थन प्राप्त करेगें । कुछ दुष्ट प्रवृति के लोगआपकेपरिचित हो सकते हैं, जिससे आप अपने शत्रुओं को पूरी तरह से परास्त करेगें । आपकी आय और स्तर में बढ़ोत्तरी होगी। आपमें संतोष की भावना होगी, लेकिन आपको प्रयुक्तकिये जाने वाले उपायों पर नजर रखनी चाहिये । साथ ही आपको सावधान और सजग रहना चाहिये– जैसाकि आपको किसी छोटी दुर्घटना और / या वायु विकारों से ग्रसित होने का खतरा है ।

बुध दशा

(03:12:2014 To 18:12:2014)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त या ग्रसित होने के कारण कंलकित है। यह एक अनुकूल युति नहीं है। बुध की दशा आपके लिये उत्तम नहीं हो सकती है। अत: सामान्यत: आपको अपने सभी मामलों में बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये, और अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिये। आप कफ और वायु विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। किसी महत्वपूर्ण काम की शुरूआत या किसी लम्बी यात्रा के लिये प्रस्थान फलदायी नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थितिकुछ हद तक समस्याकारी हो सकती है, और आप कभी कभी आपने किसी सहकर्मीयों के साथ असहमति या गलतफहमी होने के कारण झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

ज्योतिष सारिणी

	Sample	sample Girl
जन्म दिन	18 December 1973 (Tuesday)	11 October 1978 (Wednesday)
जन्म समय	01:45:00AM	01:45:00AM
जन्म स्थान	Hyderabad , INDIA	New Delhi , INDIA
रेखांश	078:29:00E	077:13:00E
अक्षांश	017:23:00N	028:39:00N
समयक्षेत्र	-05:30:00 hrs	-05:30:00 hrs
समय संशोधन	00:00:00 hrs	00:00:00 hrs
जीएमटी. समय	20:15:00 hrs	20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-00:16:04 hrs	-00:21:08 hrs
स्थानीय समय	01:28:56 hrs	01:23:52 hrs

लग्न :	कन्या	कर्क
लग्नाधिपति :	बुध	चन्द्र
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या	मकर
राशिपति :	बुध	शनि
नक्षत्र :	हस्त	श्रवण
नक्षत्रपति :	चन्द्र	चन्द्र
नक्षत्र चरण :	2	1
पाया :	स्वर्ण	ताम्र
ऋतु :	हेमन्त	शरद
मास :	पौष	आश्विन
पक्ष :	कृष्ण	शुक्ल
तिथि :	नवमी	दशमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता	पूर्णा
तिथि पति :	सूर्य	चन्द्र
करण :	तैतिल	बालव
करण श्रेणी :	चर	चर
करणपति :	वासुदेव	इन्द्र
गण :	देव	देव
वर्ण :	वैश्य	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)	वानर (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य	धृति
रज्जु :	कंठ	कंठ
वश्य :	द्विपद	जलचर
तत्व :	अग्नि	वायु
तत्वाधिपति :	मंगल	शनि
विहग :	वायस	कुक्कुट
नाड़ी :	आदि	अन्त
नाड़ी पद :	मध्य	आदि
वेध :	शतभिषा	आर्द्रा
आद्याक्षर :	श	पु

ग्रह स्थिति

Sample						sample Girl					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र			ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	—	—	लग्न	कर्क	22:58:08	आश्लेषा (२)	—	—
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि०ग्र०	ग्र०	सूर्य	कन्या	23:36:39	चित्रा (१)		दु०ग्रह
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	श०ग्र०	—	चन्द्र	मकर	12:41:58	श्रवण (१)		—
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि	—	मंगल	तुला	20:45:33	विशाखा (१)		शु०ग्र०
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श०ग्र०	—	बुध	तुला	00:57:43	चित्रा (३)		शु०ग्र०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त०ग्र०	शु०ग्र०	गुरु	कर्क	12:16:35	पुष्य (३)		—
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि०ग्र०	शु०ग्र०	शुक्र	तुला	28:14:18	विशाखा (३)		शु०ग्र०
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (१)	त०ग्र०	ग्र०	शनि	सिंह	15:45:55	पूर्वाफाल्गुनी (१)		—
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (२)	मि०ग्र०	दु०ग्रह	राहु	कन्या	03:04:26	उत्तराफाल्गुनी (२)		दु०ग्रह
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिरा (४)	त०ग्र०	दु०ग्रह	केतु	मीन	03:04:26	पूर्वाभाद्रपद (४)		—
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	—	—	हर्षल	तुला	21:21:53	विशाखा (१)		शु०ग्र०
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	—	शु०ग्र०	नेपच्यून	वृश्चिक	22:29:55	ज्येष्ठा (२)		—
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	—	दु०ग्रह	प्लूटो	कन्या	23:03:42	हस्त (४)		जव०

Sample

लग्न कुण्डली

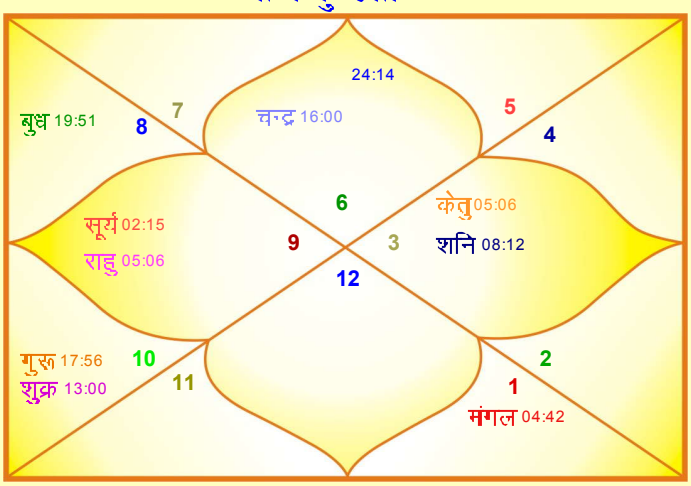

नवांश कुण्डली

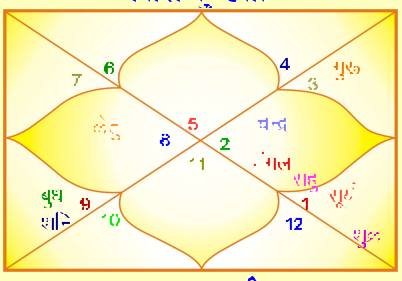

चन्द्र कुण्डली

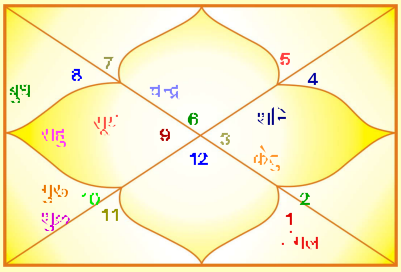

नवांश कुण्डली

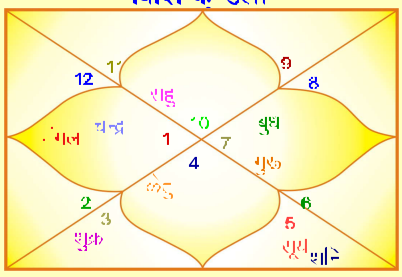

चन्द्र कुण्डली

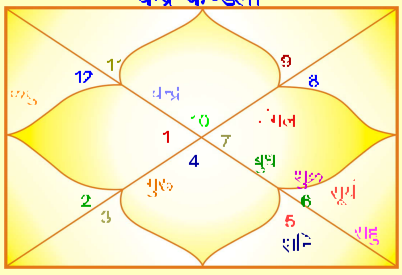

sample Girl

लग्न कुण्डली

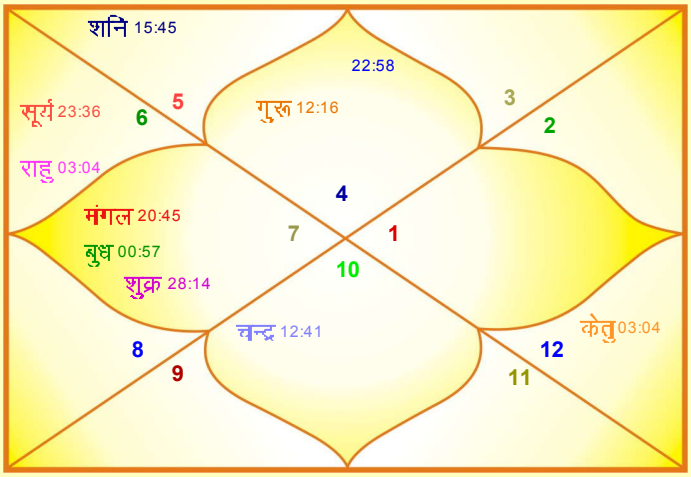

विवाह मेलापक सारिणी

(अष्टकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क0स0	विवरण	Sample	sample	पूर्णांक	प्राप्तांक	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	वैश्य	वैश्य	1	1	दैविय विकास
2	वश्य कूट	द्विपद	जलचर	2	0.5	प्राकृतिक सामंजस्य
3	तारा कूट	जन्म	जन्म	3	3	सम्बन्ध का स्थायित्व
4	योनि कूट	महिष (स्त्री)	वानर (स्त्री)	4	2	प्रत्यक्ष गुण
5	ग्रह मैत्री कूट	बुध	शनि	5	4	मानसिक प्रकृति
6	गण कूट	देव	देव	6	6	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
7	राशि कूट	कन्या	मकर	7	0	आपसी तालमेल
8	नाड़ी कूट	आदि	अन्त	8	8	मानसिक मानक
योग				36	24.5	68.1%

दाम्पत्य सम्बन्धित अन्य विचार

क0स0	विवरण	परिणाम
1	**नाड़ी–पद कूट**	चूंकि नाड़ी कूट समझौता भावी दम्पति के कुण्डलियों में उपस्थित है, इसलिए नाड़ी पद समझौता पर ध्यान देना जरूरी नही है।
2	**महेन्द्र कूट**	भावी दम्पति के कुण्डलियों में महेन्द्र कूट समझौता उपस्थित है। यह वैवाहिक स्थिरता और लम्बे जीवन की ओर संकेत करता है।
3	**स्त्री दीर्घ कूट**	भावी दम्पति के कुण्डलियों मे स्त्रीदीर्घ कूट समझौता उपस्थित है। यह बहुत अच्छे वैवाहिक एकरूपता और विवाह सम्बन्धी अनुरूपता का सूचक है।
4	**रज्जु कूट**	भावी दम्पति के कुण्डलियों में रज्जु कूट समझौता अनुपस्थित है। यदि कुण्ड़ली में कोई सुधार की संभावना उपस्थित नही है तो भावी पत्नी के स्वास्थ पर बुरा असर पड़ सकता है।
5	**वेध कूट**	चूंकि वर और बधु के चन्द्रमा के नक्षत्र परस्पर वेध सम्बन्ध नही स्थापित करतें है, वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझेगें और किसी तरह का आपसी वैमनस्य होने की संभावना कम ही है ।
6	**समान जन्म राशि**	वर और वधु के चन्द्रमा के राशि एक समान नही है, इसलिए समान जन्म राशि का प्रश्न ही नही है।
7	**समान जन्म नक्षत्र**	वर और वधु के नक्षत्र एक समान नही है।
8	**समान जन्म नक्षत्र–पद**	चूंकि वर वधु के चन्द्रमा का नक्षत्र एक समान नही है इसलिए नक्षत्र पद को देखने की जरूरत नहीं और इस विवाह की अनुमति है।

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

Sample		sample Girl	
बीज–स्फुट(१)	093:12:44	क्षेत्र–स्फुट(१)	225:44:06
बीज–स्फुट(२)	161:54:01	क्षेत्र–स्फुट(२)	239:54:15
बीज–स्फुट(३)	356:43:53	क्षेत्र–स्फुट(३)	334:50:39
शुभ लक्षण	52 %	शुभ लक्षण	64 %

कुज दोष (या मांगलिक दोष) की उपस्थिति की जाँच

लड़की की कुण्डली में, मंगल लग्न से ४थी राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यामान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल लग्न से ८वीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यामान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल चन्द्रमा राशि से ८वीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष)का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यामान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यामान है, या नहीं। हालाँकि, दक्षिण भारतीय पद्धति के अनुसार, मंगल की शुक्र राशि में उपस्थिति कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण नहीं करती है।

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से ४थी राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यामान है, या नहीं।

कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निस्तारण

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से ४थे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुजा दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूँकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अत: यह एक अपवाद है जैसाकि यह दोष स्वत: समाप्त हो जाता है। लड़के की कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जायेगा।

लड़की की कुण्डली में, बृहस्पति लग्न राशि में स्थित है। यह एक अपवाद है, जहाँ पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़की मांगलिक दोष से मुक्तहै वह मंगली नहीं है।

लड़के की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहाँ पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़का मांगलिक दोष से मुक्तहै – वह मंगली नहींहै। (हालाँकि इस राय को बहुमत नहीं प्राप्त है।)

लड़की की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है, कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहाँ

पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़का मांगलिक दोष से मुक्त है वह मंगली नहीं है। (हालाँकि इस राय को बहुमत नहीं प्राप्त है।)

लड़का और लड़की दोनों की कुण्डलियों में कुज दोष (या मांगलिक दोष) आभासी रूप से उपस्थित है (उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार)। लेकिन प्रत्येक मामले में, कुछ निश्चित परिस्थितियों की उपस्थिति के कारण, दोष निरस्त हो जाता है। अत: इस दोष के निस्तारण का प्रश्न ही नहीं उठता है। अत: तकनीकि रूप से लड़का और लडकी मंगली नहीं हैं। अत: इस आधार पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। यदि अन्य कारक अनुकूल होते हैं, तो ये दोनों विवाह कर सकते हैं।

वर-वधु की कुण्डली में वैवाहिक सामंजस्य की जांच-अष्ट-कुट मिलान से

वर्ण कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

लड़के और लड़की दोनों का वर्ण वैश्य है। यह बहुत अनुकूल है, और इस कारण से वैवाहिक अनुकूलता पूर्ण रूप से विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक १ (पूर्णांक १) है।

वश्य कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

लड़के का वश्य द्विपद है और लड़की का वश्य जलचर समूह का है। यह बहुत अनुकूल नहीं है, और इस कारण से वैवाहिक अनुकूलता केवल नाम मात्र विद्यमान है। इस गणना के अनुसार, कूट मिलान का प्राप्तांक 0½ (पूर्णांक - २) है।

तारा कुट (दिन कुट) सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

लड़की के जन्म नक्षत्र से लड़के के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर १६ संख्या प्राप्त होती है। ९ से विभाजित करने पर इसमें १ शेष बचता है, जो अनुकूल नहीं है। लड़के के जन्म नक्षत्र से लड़की के जन्मनक्षत्र तक गणना करने पर १0 संख्या प्राप्त होती है। ९ से विभाजित करने पर इसमें १ शेष बचता है, जो अनुकूल नहीं है। अत: दिन (तारा) कूट के कारण इस कुण्डली में वैवाहिक अनुकूलता आंशिक तौर पर उपस्थित है। इस गणना के अनुसार, कूट - मिलान संख्या में १½ अंकों (पूर्णांक - ३) का योगदान होगा।

योनि कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

वर का नक्षत्र महिष (स्त्री) श्रेणी का है, जबकि वधू का नक्षत्र वानर (स्त्री) श्रेणी का है। योनि कूट मिलान के अनुसार, इस जोड़ी के लिए, २ गुण का योगदान है।

ग्रह-मैत्रि सामंजस्य कुट की उपस्थिति की जांच –

लड़के का जन्म राशिपति बुध है, और लड़की का जन्म राशिपति शनि है। नैसर्गिक संबंध के अनुसार, येदोनों अधिपति ग्रह परस्पर सम हैं। यह एक बहुत अनुकूल युति है, जैसाकि यह विशेष कूट युग्म के मनोवैज्ञानिक स्वभावों को दर्शाता है। युग्म की मानसिक विशेषतायें बहुत अनुकूल होगीं, और उन दोनोंमें एक दूसरे से काफी लगाव होगा, जोकि वैवाहिक जीवन में खुशियों के लिये एक महत्वपूर्ण कारकहै। इस कारण से कूट मिलान संख्या में ४ अंकों (पूर्णांक ५) का योगदान होगा।

गण कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

लड़के का नक्षत्र देव गण श्रेणी में है, जबकि लड़की का नक्षत्र भी देव गण श्रेणी में स्थित है। यह बहुत अनुकूल युति है, जैसा की गण व्यक्तिके मिजाज और रूझान को व्यक्तकरता है। संभावित युग्म के दोनों सदस्य परिपक्व दृष्टिकोण और धैर्यवान प्रकृति के होगें। वे कुछ अति वांछित गुणों से पूर्ण होगें। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक ६ (पूर्णांक ६) है।

राशि कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

लड़के की जन्म राशि कन्या है, जबकि लड़की की जन्म राशि मकर ये दोनों राशियाँ एक दूसरे के साथ परस्पर प्रतिकूल त्रिकोण (५-९) संबंध में हैं, वैवाहिक जीवन में संतान के खराब स्वास्थ्य या संतान के कारण जो बाद में अयोग्य साबित हो सकती है, दु:खों का संकेत है। अत: इस कारण से कूट मिलान का

प्राप्तांक 0 है । यदि कुछ बहुत बली प्रतिकारी प्रभाव दोनों की कुण्डलियों में उपस्थित नहीं हैं, तो विवाहकी स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिये ।

नाड़ी कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच –

वर की नाड़ी आदि श्रेणी का है, जबकि वधू की नाड़ी अन्त श्रेणी का है । जैसा कि वर और वधू की नाड़ी समान श्रेणी की नही है, संकेत लाभदायक हैं । दोनों को विवाह की सलाह दी जा सकती है । कूट मिलान का कुल योग १८ से कम नही है । इस हिसाब से योगदान ८ गुण का है ।